स्वीडन की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok kathayen
Cover Title : Sweden Ki Lok Kathayen (Folktales of Sweden)
Cover Page picture: Royal Palace, Gamia Stan, Sweden, Europe
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Norse Countries

Norse, or Nordic, or Scandinavian countries include 5 countries –
Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

स्वीडन की लोक कथाऐं 7

1 ऐन्डर्स का नयी टोपी 9

2 एक लड़का और एक जलपरी 16

3 एल्व्ज़ और जूते बनाने वाला 26

4 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च 36

5 एक लड़की और सॉप 39

6 वफादार और बेवफा 42

7 वीयरवुल्फ़ 59

8 पहला बेटा पहले शादी 82

9 सुनहरी रानी का पहाड़ 108

10 राजकुमारी और सोने का पहाड़ 115

11 रानी सारस 140

12 तीन कुत्ते 153

13 पिनटौर्प की लेडी 182

14 मुर्गा, हाथ की चक्की और बर्र 187

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

स्वीडन की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इनके बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य अधूरा लगता है। इस महाद्वीप में कुल मिला कर पचास से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं जैसे ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली । इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं।

इस महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित पॉच देशों को स्कैन्डेनैवियन या नौर्स या नौरडिक देशों[1] के नाम से पुकारा जाता है। इन पॉच देशों के नाम हैं – डेनमार्क, फ़िनलैंड, आइसलैंड, नौर्वे और स्वीडन। इन देशों की संस्कृति यूरोप के दूसरे देशों की संस्कृति से बिल्कुल अलग है।

इस पुस्तक में हम इन्हीं पॉच देशों की लोक कथाओं में से एक देश स्वीडन की लोक कथाऐं दे रहे हैं। क्योंकि इन देशों की लोक कथाऐं भी काफी हैं इसलिये इन देशों की लोक कथाओं को हमने अलग अलग देश के नाम से प्रकाशित किया है। इससे पहले हम "डेनमार्क की लोक कथाऐं" और "नौर्वे की लोक कथाऐं" प्रकाशित कर चुके है। एक पुस्तक हमने नौर्स दन्त कथाओं पर भी प्रकाशित की है।

अब प्रस्तुत है "स्वीडन की लोक कथाऐं"। इसमें स्वीडन देश की कुछ लोक कथाऐं हैं। इस संग्रह की पहली तीन लोक कथाऐं एक वेब साइट से ली गयी है और बाकी बची हुई लोक कथाऐं एक पुस्तक से ली गयी हैं जो एक दूसरी वेब साइट[2] पर उपलब्ध है। यहॉ के देशों की लोक कथाओं में "उत्तरी हवा" भी एक मुख्य चरित्र है। इन देशों में इसकी कई कथाऐं प्रचलित हैं।

आशा है यह लोक कथा संग्रह भी तुम लोगों को इसके पहले भाग की तरह से पसन्द आयेगा और इस लोक कथा संग्रह का भी हिन्दी साहित्य जगत में भव्य स्वागत होगा।

---

[1] The Scandinavian or Nordic or Norse countries are a geographical and cultural region of five countries – Denmmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden in the far Northern Europe and North Atlantic. Politically they do not form a separate entity.

[2] Taken from the book "The Swedish Fairy Book", edited by Clara Stroebe. Frederick A Stokes Company. 1921. 28 folktales. Available at the Web Site : https://www.worldoftales.com/Swedish_folktales.html

संसार के सात महाद्वीप

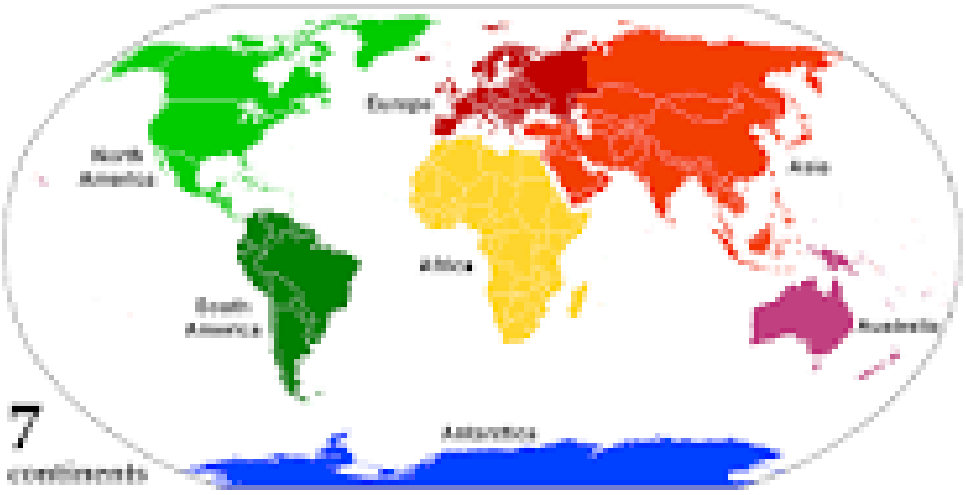

1 ऐन्डर्स का नयी टोपी[3]

यह बहुत पहले की बात है कि स्वीडन के एक गॉव में ऐन्डर्स[4] नाम का एक लड़का रहता था। उसको एक नयी टोपी मिल गयी थी। यह टोपी उसकी मॉ ने उसके लिये खास कर के बुनी थी।

वह टोपी बहुत सुन्दर थी। उतनी सुन्दर टोपी कभी किसी ने नहीं देखी थी। ऐन्डर्स की मॉ ने करीब करीब सारी टोपी में लाल रंग की ऊन लगायी थी सिवाय थोड़ी सी जगह पर हरे रंग की ऊन के, क्योंकि उसके पास लाल रंग की ऊन खत्म हो गयी थी। टोपी के ऊपर के हिस्से पर उसने नीले रंग का फुँदना लगाया था।

ऐन्डर्स ने अपने सिर पर अपनी टोपी पहनी, अपनी जेब में अपने हाथ डाले, अपना सिर ऊँचा किया और घर के बाहर घूमने चल दिया।

उसको मालूम था कि हर आदमी उसकी तरफ देख रहा था। और उसको यह भी मालूम था कि वह उसकी तरफ क्यों देख रहा था। असल में हर आदमी उसकी नयी टोपी की तरफ देख रहा था।

---

[3] Anders' New Cap – a folktale from Sweden, Europe. Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=215 Retold and written by Mike Lockett.

[4] Anders – the name of the boy

पहला आदमी जो ऐन्डर्स को मिला वह था एक किसान जो अपने घोड़े को साथ लिये जा रहा था। ऐन्डर्स उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया और अपना सिर हिलाया।

उस किसान ने भी अपना टोप उतार कर उसको काफी नीचे तक झुक कर सलाम किया। ऐन्डर्स ने सोचा कि इस किसान ने मेरी यह टोपी जरूर ही बहुत पसन्द की होगी।

आगे जाने पर उसको लार्स[5] मिला। वह एक खाल रंगने वाले का बेटा था। वह अपने पिता को गाय की खालों को चमड़ा बनाने में सहायता करता था।

लार्स एक बड़ा लड़का था। उसने बड़े साइज़ के जूते पहन रखे थे जिनको पहन कर वह और भी बड़ा लग रहा था। लार्स बोला — "आओ हम लोग अपनी अपनी टोपियॉ बदल लें। और मैं तुमको अपना जैक चाकू[6] भी दे दूँगा।"

ऐन्डर्स ने बहुत सोचा। आजकल सारे आदमी लोग जैक चाकू लिये घूमते हैं। वे उसको रस्सी काटने के लिये इस्तेमाल करते थे, लकड़ी के खम्भों में कुछ खोदने के लिये इस्तेमाल करते थे और कुछ और दूसरे कामों के लिये भी इस्तेमाल करते थे।

लार्स का जैक चाकू करीब करीब नया था। उसका केवल एक फल टूटा हुआ था और उसके हैन्डिल में बस एक दरार पड़ी हुई

[5] Lars – name of another boy

[6] Jack Knife – Its blade can be folded inside the handle. See its picture above.

थी। पर नहीं वह केवल उसकी वजह से अपनी मॉ की बनायी हुई टोपी उसकी टोपी से नहीं बदल सकता था।

ऐन्डर्स आगे चला तो उसको एक बुढ़िया मिली। एन्डर्स ने उससे पूछा कि उसको उसकी टोपी कैसी लगी तो वह बोली — "तुम तो इस टोपी में बहुत ही अच्छे लग रहे हो ऐन्डर्स। तुमको तो राजा के यहॉ नाच में जाना चहिये।"

और इतना कह कर उसने भी एन्डर्स को अपने घुटने मोड़ कर झुक कर सलाम किया। ऐन्डर्स ने सोचा — "मैं राजा के यहॉ नाच में जाऊँ? यह तो है। यह मेरी टोपी तो सचमुच ही इतनी अच्छी लग रही है कि मुझको राजा के यहॉ नाच में जाना ही चाहिये।"

सो वह राजा के महल की तरफ चल दिया। जब महल के पहरेदारों ने उसको महल में जाते हुए देखा तो उन्होंने उसको रोक कर पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

वह बोला — "मैं राजा के महल में नाचने के लिये जा रहा हूँ।"

उनमें से एक पहरेदार बोला — "पर तुम नाचने के लिये बिना यूनीफौर्म पहने तो जा नहीं सकते।"

तभी वहॉ राजकुमारी आयी। वह सफेद सिल्क की पोशाक पहने हुए थी जिसके ऊपर सुनहरी रिबन और बो लगी हुई थी। उसने ऐन्डर्स और पहरेदार की बातें सुन ली थीं।

वह उनसे बोली — "इस लड़के ने इतनी सुन्दर टोपी पहन रखी है यही नाच के लिये ठीक यूनीफौर्म है। इसको अन्दर आने दो।" कह कर उसने ऐन्डर्स का हाथ पकड़ा और उसको अपने साथ अन्दर महल में ले गयी।

ऐन्डर्स राजकुमारी के साथ महल के अन्दर गया। वहॉ वह संगमरमर की सीढ़ियॉ चढ़ा और कई पहरेदारों के सामने से गुजरा।

जब वे दोनों पहरेदारों के सामने से गुजरते थे तो वे सब उनको सिर झुकाते थे तो ऐन्डर्स सोचता "ये लोग मेरी इतनी सुन्दर टोपी की वजह से मुझे जरूर ही राजकुमार समझते होंगे।"

राजकुमारी ऐन्डर्स को पहले एक लम्बी मेज के पास ले गयी जिसके ऊपर सोने के प्याले ओर प्लेटें सजी हुई थीं। वहॉ बहुत सारा मॉस, केक, डबल रोटी आदि रखे हुए थे।

राजकुमारी जा कर अपनी जगह पर बैठ गयी और एन्डर्स को उसने अपने पास ही एक सुनहरी कुर्सी पर बिठा लिया और उससे बोली — "तुमको अपनी टोपी पहन कर खाना नहीं खाना चाहिये।" यह कह कर वह उसकी टोपी उतारने लगी।

एन्डर्स बोला — "नहीं नहीं, मैं अपनी टोपी पहन कर भी खाना खा सकता हूॅ और अपनी टोपी उतार कर भी खा सकता हूॅ।" उसने अपना एक हाथ अपनी टोपी पर रख लिया और दूसरे हाथ से खाना अपने मुॅह में भरने लगा।

उसने सोचा अगर उसने अपनी टोपी उतार दी तो वह शायद उसको फिर कभी न देख पाये।

राजकुमारी बोली — "तुम मुझको टोपी दो तो मैं तुमको एक चुम्मी दूँगी।"

ऐन्डर्स ने सोचा "हे भगवान, यह राजकुमारी तो बहुत सुन्दर है।" ऐन्डर्स को उसकी चुम्मी चाहिये तो थी पर अपनी मॉ की बनायी टोपी की कीमत पर नहीं। उसकी मॉ ने उसकी वह टोपी बनायी थी वह उस टोपी को तो उस राजकुमारी को भी नहीं दे सकता था।

एन्डर्स ने दोनों हाथों से अपनी टोपी पकड़ ली और उसको कस कर अपने सिर से लगा लिया।

राजकुमारी ने एन्डर्स की जेबें केक से भर दीं। फिर उसने एक भारी सी सोने की जंजीर अपने गले से निकाली और ऐन्डर्स के गले में डाल दी। फिर वह ऐन्डर्स की तरफ झुकी और उसने उसके गाल पर एक चुम्मी दे दी।

ऐन्डर्स ने फिर एक बार अपनी टोपी कस कर अपने सिर से चिपका ली। उसी समय राजा यूनीफौर्म पहने, पंख वाले टोप पहने और कई मेडल लगाये कई लोगों के साथ वहॉ आया। राजा ने एक बहुत बड़ा सुनहरा ताज अपने सिर पर पहना हुआ था।

वह राजकुमारी को पहले ही ऐन्डर्स की टोपी उतारते देख चुका था सो वह मुस्कुरा कर लड़के से बोला — "तुम्हारी यह टोपी बहुत सुन्दर है बेटे।"

एन्डर्स बोला — "हॉ है तो। मेरी मॉ ने इसे सबसे अच्छी ऊन से बनाया है। उसने इसको अपने हाथों से बुना है और अपने प्यार से भरा है। हर आदमी मेरी टोपी लेना चाहता है।"

राजा बोला — "क्या तुम अपनी टोपी मेरे टोप से बदलना पसन्द करोगे?" कहते हुए उसने अपना सोने का भारी ताज अपने सिर से उतारा और उसको एन्डर्स की तरफ बढ़ाया।

एन्डर्स तुरन्त ही अपनी कुर्सी से बाहर कूद गया और महल के बड़े बड़े कमरों में से होता हुआ महल की सीढ़ियॉ उतरता हुआ बाहर की तरफ भाग गया।

वह इतनी तेज़ भागा कि उसके गले से राजकुमारी का दिया हुआ सोने का हार निकल गया, उसकी जेब से केक भी निकल गये पर उसने अपनी टोपी अपने सिर से नहीं गिरने दी।

उसने उसको दोनों हाथों से कस कर पकड़ रखा था। वह जितनी तेज़ भाग सकता था उतनी तेज़ भागता हुआ अपने घर आ गया और आ कर अपनी मॉ की गोद में छिप गया।

सॉस आने पर उसने अपनी मॉ को अपनी सारी कहानी बतायी। जब वह अपनी कहानी सुना रहा था तो ऐन्डर्स के सब भाई बहिन मुँह खोले खड़े थे।

उसके बड़े भाई ने कहा — "तुम बेवकूफ थे जो तुमने राजा को अपनी टोपी दे कर उसका ताज नहीं लिया।"

ऐन्डर्स बोला — "कोई ताज मेरी मॉ की बनायी टोपी से अच्छा नहीं हो सकता भैया। मैं उसको राजा के ताज से भी नहीं बदल सकता था।"

ऐन्डर्स की मॉ ने खुशी से ऐन्डर्स को गले से लगा लिया। वह जानता था कि उसकी मॉ की बनायी टोपी सबसे सुन्दर टोपी थी।

2 एक लड़का और एक जलपरी[7]

एक बार की बात है कि स्वीडन देश के एक गॉव में तीन लड़के थे जो अपने माता पिता के मरने को बाद अकेले रह गये थे।

हालॉकि उनके माता पिता उनके लिये कुछ ज़्यादा छोड़ कर नहीं गये थे पर फिर भी जो कुछ भी वे छोड़ गये थे अगर वे उसको ठीक से बॉट लेते तो वह उनके लिये काफी था।

पर बड़े वाले दो भाई उसे बॉटना नहीं चाहते थे। सबसे बड़े भाई ने रहने के लिये घर ले लिया और दूसरे भाई ने घर के अन्दर का सारा सामान ले लिया।

उन दोनों को जो कुछ पैसा मिला वह उन दोनों ने बॉट लिया और साथ में उनके पिता के पास जो जमीन का टुकड़ा था वह भी उन दोनों ने ले लिया और अपने छोटे भाई को उसे कुछ भी देने से मना कर दिया।

[7] The Boy and the Water Sprite – a folktale from Sweden, Europe. Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=64
Retold and written by Mike Lockett.

इस तरह उन दोनों बेरहम भाइयों ने अपने सबसे छोटे भाई को अपने पिता की जायदाद से, उसके पैसे से, उसके घर से सबसे दूर कर दिया।

तो उसने अपने भाइयों से पूछा — "तुम लोगों ने तो सब कुछ ले लिया अब मैं कैसे रहूँगा?"

उसका सबसे बड़ा भाई बोला — "तुम तो होशियार हो। लो इसको लो और इससे गुजारा करो।" कह कर उसने घर के एक कोने पड़ा पाया एक रस्सा दरवाजे के बाहर फेंक दिया।

छोटे भाई ने सोचा कि यह रस्सा तो बड़े काम की चीज़ है सो उसने वह रस्सा उठाया और उसको ले कर वहाँ से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आया। वहाँ उसने उस रस्से के एक हिस्से को खोल कर उसकी कई छोटी रस्सियाँ बनायीं। फिर उसने उनको एक खास तरीके से जोड़ कर एक छोटी रस्सी बनायी, एक बीच के साइज़ की रस्सी बनायी और एक लम्बी रस्सी बनायी।

वह लड़का छोटी वाली रस्सी से छोटे साइज़ का फन्दा बना कर छोटी साइज़ की गिलहरी पकड़ता। बीच के साइज़ की रस्सी का बीच का फन्दा बना कर बीच के साइज़ के जानवर पकड़ता जैसे कि खरगोश।

फिर वह लड़का जंगल में एक झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ उसने एक अँधेरी गुफा में एक बड़ा भालू जाता देखा तो उसने

अपनी लम्बी वाली रस्सी निकाली और भालू पकड़ने के लिये उसका एक बड़े साइज़ का जाल बनाने बैठ गया।

जैसे ही वह बड़ा जाल बनाने के लिये झील के पास बैठा कि एक जलपरी पानी में से बाहर निकली तो उसने एक लड़के को वहॉ बैठे देखा। उसने उसको देखा, और देखा, और देखा पर वह यह नहीं जान सकी कि वह लड़का कर क्या रहा था।

वह बूढ़ी जलपरी पानी में से बाहर निकल कर उस लड़के के पास आने और उससे बात करने के लिये या उसको खाने के लिये काफी बड़ी और काफी भारी थी। और वह लड़का पानी के बाहर बैठा था।

सो वह बूढ़ी जलपरी फिर से पानी के अन्दर चली गयी और वहॉ से उसने अपने बेटे को यह देखने के लिये भेजा कि उसका बेटा वहॉ जा कर यह देख कर आये कि वह लड़का उस रस्सी से क्या कर रहा था।

उसका वह बेटा इतना छोटा था कि वह झील के किनारे आसानी से घूम सकता था सो वह झील के बाहर निकला और उस लड़के से पूछा कि वह रस्सी से क्या कर रहा था।

इस पर लड़के ने उसको चिढ़ाया कि वह एक ऐसा जाल बना रहा था जिससे कि वह पूरी झील को बॉध सके। इससे फिर कोई न तो उसकी इजाज़त के बिना झील के अन्दर जा सकेगा और न ही उसकी इजाज़त के बिना झील के बाहर आ सकेगा।

जलपरी का बेटा तुरन्त ही झील में वापस चला गया और जो कुछ उस लड़के ने उससे कहा था अपने पिता को जा कर बताया।

पिता को यह सुन कर चिन्ता हुई वह बोला — "अगर कोई झील में आ जा नहीं सकेगा तो हम खाना कैसे खायेंगे। तुम ऊपर जाओ और उस लड़के से कहना कि वह तुमको पेड़ के ऊपर दौड़ कर पकड़े।

जब तुम पेड़ के ऊपर पहुँच जाओ तो उसके वहाँ आने का इन्तजार करना और जब वह ऊपर आ कर तुमको पकड़े तो उसको झील में धक्का दे देना। हम उसको नाश्ते में खा लेंगे।"

जलपरी के बेटे ने वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने उससे करने को कहा था। वह वापस लड़के के पास गया और उसको पेड़ पर चढ़ने और उसको पकड़ने के लिये ललकारा।

लड़का बोला कि अभी उसको बहुत काम है इसलिये वह खुद तो अभी उसके साथ दौड़ नहीं सकता पर उसका एक छोटा सा दोस्त था जो उसके साथ दौड़ सकता था।

इतना कह कर उसने अपने जाल में फँसी एक छोटी सी गिलहरी खोली और उसको बोला — "भाग, गिलहरी भाग, एक दो तीन.... ।"

वह गिलहरी तुरन्त भाग कर पास वाले पेड़ पर चढ़ गयी और जलपरी का वह बेटा तो वहीं का वहीं खड़ा रह गया। वह बेचारा फिर अपने पिता के पास गया और जो कुछ हुआ था कह सुनाया।

यह सुन कर उसके पिता ने उससे कहा — "तुम फिर वापस जाओ और उससे फिर अपने साथ दौड़ लगाने को कहो और जब वह तुम्हारे साथ दौड़ते दौड़ते थक जाये तो उसको झील में धकेल देना। फिर हम उसको थोड़ा थोड़ा कर के खा सकते हैं।"

जलपरी का बेटा फिर चल दिया और उसने फिर उस लड़के को दौड़ के लिये ललकारा।

वह लड़का बोला — "मैंने तुमसे कहा न कि मुझे अभी बहुत काम है इसलिये मैं तुम्हारे साथ अभी नहीं दौड़ सकता पर मेरा एक और छोटा सा दोस्त है जो तुम्हारे साथ दौड़ सकता है।"

कह कर उसने अपना पकड़ा हुआ एक खरगोश खोला और उसको उस लड़के के साथ दौड़ने के लिये भेज दिया — "भाग, खरगोश भाग, एक दो तीन....।"

और खरगोश तो जैसे ही खुला वैसे ही वह तेज़ी से भाग लिया। अब क्या था खरगोश आगे आगे और वह लड़का उसके पीछे पीछे। बहुत जल्दी ही वह लड़का खरगोश से बहुत पीछे रह गया।

यह सब देख कर तो वह लड़का बहुत परेशान हुआ। वह फिर वापस अपने पिता के पास पहुँचा और जा कर पिता को सारा हाल सुनाया। पिता ने कहा कि अबकी बार जा कर तुम उसको कुश्ती के लिये ललकारो और क्योंकि तुम मेरे बेटे हो इसलिये तुम बहुत ताकतवर हो। तुम जल्दी ही उसको जमीन पर पटक दोगे।

जब तुम उसको जमीन पर पटक दो तो उसको उठा कर झील में डाल देना। फिर हम उसको साथ साथ खा लेंगे। यह सुन कर वह लड़का फिर झील के ऊपर आया और उस लड़के को अबकी बार कुश्ती के लिये ललकारा।

वह लड़का कुछ गुस्से में बोला — "मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि मुझे अभी बहुत काम है इसलिये मैं खुद तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर सकता। मेरे दादा जी उस गुफा में सो रहे हैं तुम जा कर उनको कुश्ती के लिये ललकार सकते हो।

पर कुश्ती लड़ने से पहले तुमको उन्हें जगाना पड़ेगा। उस गुफा में चले जाओ और वहाँ जा कर उनके सिर पर ज़ोर से मारना। बस वह उठ जायेंगे।"

वह जलपरी का बेटा उस अँधेरी गुफा में गया और एक बड़ी सी परछाईं जमीन पर पड़ी देखी। उसने उससे कहा — "आओ कुश्ती लड़ते हैं।" पर वह परछाईं तो वहाँ खर्राटे भरती रही बोली नहीं।

उसने उससे फिर कहा — "आओ न कुश्ती लड़ते हैं।"

पर वह परछाईं फिर भी वहाँ खर्राटे भरती रही उठी ही नहीं। इस पर उसने उसका हाथ पकड़ कर उसके कान पर मारा।

इससे वह भालू जाग गया और अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया। उसने उस जलपरी के बेटे को एक ही धक्के में गुफा के बाहर जंगल के पार वापस झील में फेंक दिया।

जलपरी का बेटा फिर अपने पिता के पास गया और बोला — "यह लड़का तो हम लोगों से बहुत ज़्यादा ताकतवर लगता है। उसके दादा ने तो मुझे इतनी ज़ोर से धक्का मारा कि मैं तो झील के बीच में ही आ गिरा। ऐसे तो हम उस लड़के को कभी नहीं जीत सकते पिता जी।"

पिता ने कहा — "ठीक है, तुम एक बार फिर उस लड़के के पास जाओ और उससे पूछो कि वह हम लोगों को यहॉ छोड़ने का क्या लेगा। हम नहीं चाहते कि वह हमारी झील को बॉधे।"

सो वह बेटा फिर उस लड़के के पास गया और उससे पूछा कि वह उनको वहॉ छोड़ने का कितना पैसा लेगा।

लड़के ने अपना टोप उतार कर उलटा कर के उसके सामने रख दिया और बोला — "बस यह टोप भर कर।"

वह बेटा फिर से अपने पिता के पास दौड़ा गया और वहॉ जा कर कुछ सिक्के बटोरने में उसकी सहायता करने लगा जो सालों से झील की तली में इकट्ठे हो गये थे।

इधर जब जलपरी का बेटा चला गया तब उस लड़के ने अपने टोप में एक छेद कर लिया और उस टोप को एक गहरे गड्ढे के ऊपर रख लिया।

उधर जलपरी के बेटे ने जितने सिक्के वह सोच सकता था कि उस टोप को भरने के लिये काफी होंगे उतने सिक्के बटोरे और झील

के ऊपर आ कर उस लड़के के टोप में डाले पर वे तो बस उस टोप की तली ही ढक सके।

वह फिर झील में गया और फिर से बहुत सारे सिक्के उठा कर लाया और उस लड़के के टोप में डाले पर फिर भी उसका टोप नहीं भरा।

जलपरी के बेटे ने जा कर यह अपने पिता से कहा कि वह कई बार सिक्के उस लडके के टोप में डाल चुका है पर उसका टोप है कि वह तो भरता ही नहीं।

उसके पिता ने कहा — "उससे जा कर कहो कि हमारे पास इतना ही पैसा है।" और यह कह कर उसने एक सिक्के भरा एक बैरल[8] झील के किनारे पर फेंक दिया।

बेटा फिर झील के ऊपर आया और उस लड़के से बोला — "मेरे पिता जी कहते हैं कि हमारे पास इतना ही पैसा है। इसको ले लो और यहॉ से जाओ और हमको छोड़ दो।"

लड़के ने वायदा किया कि वह अब झील को नहीं बॉधेगा और जलपरी का बेटा यह खुशखबरी ले कर तुरन्त ही अपने पिता के पास दौड़ गया।

उधर लड़के ने सॅभाल कर अपनी रस्सियों के सारे जाल समेटे ताकि उसमें कोई जानवर फॅस न जाये। फिर उसने अपना वह

[8] A barrel is a wooden drum which can contain 26 US Gallons to 52 US Gallons liquid. See its picture above.

सिक्के वाला गड्ढा मिट्टी से भर दिया और इस तरह से अपना कुछ पैसा वहॉ छिपा दिया।

उसके बाद उसने अपना टोप अपने सिर पर रखा और सिक्कों से भरा वह बैरल लुढ़काता हुआ वह पैसा दिखाने के लिये अपने भाइयों के घर चला।

उसके पास उतना सारा पैसा देख कर आश्चर्य से उसके भाइयों ने पूछा — "तुमको इतना सारा पैसा कहॉ से मिला?"

उसने जवाब दिया — "जानवर पकड़ कर। मुझे तो अपने माता पिता से केवल एक रस्सी ही मिली थी जो तुम लोगों ने मुझे दी थी। सो इस रस्सी से मैंने जानवर पकड़ने के जाल बनाये और झील के पास जो जंगल है वहॉ जा कर जानवर पकड़े।"

वे दोनों एक साथ बोले — "तो तुम यह घर और जमीन ले लो और हमको यह रस्सी दे दो।"

कह कर उन दोनों भाइयों ने कानूनी कार्यवाही कर के वह घर और जमीन अपने छोटे भाई के नाम कर दी और वह रस्सी उससे खुद ले ली।

रस्सी ले कर वे जंगल की तरफ चले गये ताकि वे वहॉ जानवर पकड़ सकें। उसके बाद वे फिर कभी अपने छोटे भाई को परेशान करने के लिये नहीं लौटे।

हो सकता है कि वे अभी भी जंगल में जानवर पकड़ रहे हों। या फिर झील की जलपरी के मेहमान बन गये हों। या फिर उनको वह गुफा वाला भालू ही खा गया हो – कुछ भी हो सकता है, है न?

3 एल्व्ज़ और जूते बनाने वाला[9]

बहुत समय पहले लोगों के जूते केवल जूता बनाने वालों से ही आते थे। जूता बनाने वाले लोगों के पैरों का नाप कागज पर खींच लेते थे और फिर उसी डिजाइन का चमड़ा काटते थे। फिर उन चमड़े के टुकड़ों को सँभाल कर सिल कर जूता बना देते थे।

जूता बनाना बहुत मेहनत का काम था और कभी कभी उनको जूते बनाने का काफी पैसा भी नहीं मिल पाता था।

सो स्वीडन देश में एक बार एक जूता बनाने वाला अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह एक बहुत ही छोटी सी दूकान में काम करता था और उसी छोटी सी दूकान में रहता भी था। यह दूकान एक बहुत छोटा सा कमरा थी जिसका दरवाजा शहर की बड़ी सड़क पर खुलता था।

बहुत पहले कभी वह दूकान खरीदारों से भरी रहती थी पर काफी दिनों से काम बहुत कम हो गया था क्योंकि उसके खरीदार भी कम होते जा रहे थे।

---

[9] Elves and the Shoemaker – a folktale from Sweden, Europe. Adopted from the Web Site http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=10
Adopted, retold and written by Mike Lockett. Originally written by Hans Christian Anderson.
[It is similar to a story of Raven – "Ek Boodhe Pati Patni Aur Joote Banane Vaalae" - folktale from Native Americans from Canada in the book "Raven Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta in Hindi language, Delhi: Prabhat Prakashan, 2019. Translated from : http://www.ankn.uaf.edu/NPE/CulturalAtlases/Yupiaq/Marshall/raven/OldCoupleBootmakers.html

अब खरीदार नये जूते खरीदने के लिये तो कम और कम होते ही जा रहे थे पर वे अब अपने पुराने जूते ठीक कराने के लिये भी नहीं आते थे।

सो समय गुजरते गुजरते वह जूता बनाने वाला गरीब होता चला गया। जल्दी ही वह इतना गरीब हो गया कि अब उसकी दूकान में केवल एक जोड़ी जूता बनाने का ही चमड़ा रह गया था।

और क्योंकि हाल फिलहाल में कोई आदमी या औरत उसके पास जूता बनवाने नहीं आया था सो उसको अब यह अन्दाज भी नहीं था कि वह किस नाप का जूता बनाये।

पर फिर भी एक दिन अन्दाज से उसने एक जोड़ी जूते का चमड़ा काटा और उसको फैला कर मेज पर रख दिया। वह उसको सुबह को सिल कर उसका जूता बनाने वाला था।

इसके बाद उसने और उसकी पत्नी दोनों ने अपनी रात की प्रार्थना की और सोने चले गये।

अगली सुबह जब वे सो कर उठे तो जूता बनाने वाले ने उन चमड़े के टुकड़ों की तरफ देखा जो उसने रात को काट कर रखे थे पर दोनों पति पत्नी तो यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि वहॉ तो चमड़े के टुकड़ों की बजाय एक जोड़ी जूता ही बना रखा था।

वे लोग यह सोच ही रहे थे कि वह जूते की जोड़ी कहॉ से आयी, किसने बनायी, कि एक खरीदार उस दूकान में आया।

आश्चर्य की बात यह कि वह जूते की जोड़ी उस खरीदार के पैरों में बिल्कुल ठीक आ गयी। उसने वे जूते खरीद लिये।

वह जूते भी इतनी अच्छी तरह से बने हुए थे कि उस खरीदार ने उस जूता बनाने वाले को उसके बहुत अच्छे पैसे दिये।

और वह पैसे भी इतने सारे थे कि उस जूता बनाने वाले ने उन पैसों से खाना भी खरीद लिया और दो जोड़ी जूते बनाने के लायक खाल भी खरीद ली।

उसने उस खाल को भी काटा और उन टुकड़ों को सुबह जूता बनाने के लिये उसी मेज पर बिछा कर रख दिया। फिर उन्होंने अपनी रात की प्रार्थना की और सोने चले गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो दोनों पति पत्नी ने फिर उन चमड़े के टुकड़ों की तरफ देखा जो उन्होंने रात को काट कर रखे थे पर वे दोनों यह देख कर फिर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि वहॉ तो चमड़े के टुकड़ों की बजाय फिर एक जोड़ी जूता बना रखा था।

वे फिर यह सोच रहे थे कि वह जूता कहॉ से आया या फिर किसने बनाया कि एक खरीदार दूकान में घुसा और फिर आश्चर्य कि वे जूते उस खरीदार के पैरों में बिल्कुल ठीक आ गये और वे जूते इतने अच्छे बने थे कि उस खरीदार ने उनको बड़े अच्छे पैसे दे कर खरीद भी लिया।

वे पैसे इतने ज़्यादा थे कि उसने उन पैसों से खाना भी खरीद लिया और दो जोड़ी जूते बनाने के लिये और चमड़ा भी खरीद

लिया। और फिर उस दिन भी उन पति पत्नी ने वैसा ही किया जैसा कि वे दो रातों से करते आ रहे थे।

उन्होंने मेज पर दो जोड़ी जूते का चमड़ा काट कर अगले दिन सिलने के लिये बिछा दिया और अपनी रात की प्रार्थना करने के बाद सोने चले गये।

अगले दिन जब वे दोनों उठे तो उनको यह देख कर फिर आश्चर्य हुआ कि अबकी बार वहॉ चमड़े के टुकड़ों की बजाय दो जोड़ी जूते बने रखे थे। वे दोनों जोड़ी जूते बहुत ही बढ़िया बने हुए थे।

जब वे उन जूतों को देख रहे थे कि दो खरीदार दूकान में घुसे और उन्होंने उनको अच्छे पैसे दे कर खरीद लिया। अबकी बार वे लोग खाना खरीदने के साथ साथ चार जोड़ी जूते बनाने के लिये चमड़ा भी खरीद सके।

इस रात भी उस जूता बनाने वाले ने वैसा ही किया और अगली सुबह चार जोड़ी जूते बने रखे पाये। इस बार उनको ये जूते बेच कर इतना पैसा मिल गया कि वह कुछ पैसा दान में भी दे सके।

इन चार जोड़ी जूतों को बेचने के बाद अब उनके पास आठ जोड़ी जूते बनाने के लायक चमड़ा खरीदने के पैसे और आ गये। धीरे धीरे उनके पास सोलह, फिर बत्तीस जोड़ी जूते बनाने के लिये चमड़ा खरीदने को लायक पैसे हो गये।

यह सब इसी तरीके से बढ़ता रहा और वे लोग अमीर होते चले गये।

एक रात जूता बनाने वाले की पत्नी ने कहा — "बजाय सोने जाने के क्या हम आज रात को जाग कर यह नहीं देख सकते कि यह कौन है जो हमारे लिये जूते बना कर जाता है और कौन हमारी इतनी सहायता कर रहा है।"

दोनों ने सोचा कि यह एक अच्छा विचार था। वे सोचने लगे कि देखा जाये कि वह आदमी कैसा होगा जो हमको जूता बनाने में सहायता करता रहा है। सो रात को वे लोग यह देखने के लिये कि उनके वे जूते कौन बनाता था एक आलमारी के पीछे छिप गये।

पर जो कुछ उन दोनों पति पत्नी ने देखा उसको देख कर तो उनको बहुत आश्चर्य हुआ। जैसे ही आधी रात हुई उन्होंने किसी के कमरे में आने की हलकी सी आवाज सुनी।

उसके कुछ पल बाद ही उन्होंने चमड़े में उस जगह छेद करने की कील पर हथौड़ा मारने की आवाज सुनी जहाँ से चमड़े को जोड़ने के लिये सिला जाता है। फिर उन्होंने चमड़ा सिलने की आवाज सुनी जैसे कोई धागा छेदों में से डाल कर निकाल रहा हो।

अब दोनों पति पत्नी ने आलमारी के पीछे से झाँक कर देखा तो वहाँ दो छोटे छोटे एल्व्ज़[10] थे। पहले तो वे

[10] Elves is plural of Elf. Elf is supernatural being in Germanic mythology and folklore. Elf is prominently associated with sexual threats, seducing people and causing them harm – but this story seems just opposite to it, they are helpful here.

केवल उनके सिर का ऊपरी हिस्सा ही देख पाये। उनके बाल सुनहरी और सिल्क जैसे चिकने दिखायी दे रहे थे।

पति पत्नी दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा जैसे पूछ रहे हों "क्या हम लोग कुछ और ऊपर उठ कर देखें?"

दोनों ने हॉ में सिर हिलाया और दोनों कुछ और ऊपर उठे। अब उन्होंने उनका चेहरा देखा। वे दोनों ही अपने सामने पड़ा काम करने में लगे हुए थे।

उनके नुकीले कान थे। बड़ी बड़ी सुन्दर ऑखें थीं। उनकी ऑखें चमकीली और खुश थीं। उनकी नाक बटन जैसी थी और वह ताजा कटी हुई खाल की खुशबू से खुशी से बार बार सिकुड़ जाती थी।

वे काम करने वाली बैन्च पर बैठे हुए थे और सामने पड़े चमड़े के टुकड़ों को बहुत जल्दी जल्दी सिल रहे थे। उन्होंने वे टुकड़े सिले फिर उनको हथौड़े से पीटा। सारी रात वे यही करते रहे।

उनके हाथ सिलाई करते समय इतनी जल्दी जल्दी चल रहे थे कि उन दोनों पति पत्नी की ऑखें उनके हाथ चलते ठीक से देख भी नहीं पा रही थीं।

इस सबको देखते हुए उन दोनों से चुप नहीं बैठा जा रहा था। दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और और ऑखों ही ऑखों में बोला कि उनको यकीन नहीं हो रहा कि यह सब क्या हो रहा था।

सुबह की पहली किरन से पहले ही उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया और अब वे वहॉ से चलने की तैयारी में थे। वे मेज से नीचे कूदे, उन्होंने जूता बनाने वाले की तरफ पीठ की और जूतों को दूकान के सामने वाली आलमारी में सजा दिया।

उनके जाने के बाद पहली बार उन दोनों पति पत्नी की यह हिम्मत हुई कि वे उठ कर खड़े हो कर यह देखें कि वे एल्व्ज़ देखने में लगते कैसे हैं। जब उन्होंने देखा तो उन्होंने उनको पीछे से देखा। तो वे तो देख कर हैरान रह गये। वे तो नंगे थे।

उन्होंने उन दोनों के लिये कितने सारे जूते बनाये पर उन्होंने अपने लिये एक भी नहीं रखा। सो न केवल उनके पास कपड़े ही थे बल्कि उनके पास तो जूते भी नहीं थे।

जैसे ही खिड़की से रोशनी की पहली किरन आयी वे वहॉ से गायब हो चुके थे। रात भर की टप टप की अवाज के बाद अब दूकान में बहुत शान्ति थी। उनकी दूकान की सामने वाली आलमारी में दर्जनों जूते सजे रखे थे।

आलमारी के पीछे दोनों पति पत्नी अभी भी फुसफुसा कर ही बात कर रहे थे क्योंकि वे अभी भी ज़ोर से बात करने में डर रहे थे क्योंकि उनको लग रहा था कि अगर वे ज़ोर से बोले तो जो कुछ उन्होंने पाया है वे वह सब खो देंगे।

आखिरकार वे उठ खड़े हुए। सारी रात उस आलमारी के पीछे हाथों और घुटनों पर बैठे बैठे उनकी बूढ़ी हड्डियाँ दर्द करने लगीं थी।

जूते बनाने वाले की पत्नी बोली — "ओह, ज़रा देखो तो, ये छोटे नंगे आदमी हमारे ऊपर कितने मेहरबान हैं। जब ये इधर उधर जाते होंगे तो इन बेचारों को कितनी ठंड लगती होगी।

मुझे इन लोगों के लिये कुछ जाँघिये, कुछ कमीजें, कुछ पैन्टें और कुछ मोजे बनाने चाहिये। और तुमको भी इनके लिये जूते का एक एक जोड़ा बनाना चाहिये।"

पति ने अपनी पत्नी के इस विचार को बहुत पसन्द किया। इसी लिये तो उसने उससे शादी की थी क्योंकि वह बहुत चतुर थी और उसके विचार हमेशा अच्छे होते थे।

शाम तक उसकी पत्नी ने दोनों एल्व्ज़ के लिये कपड़े बना कर तैयार कर दिये जिनमें एक कोट और एक नुकीला टोप भी शामिल था।

जूते बनाने वाले ने उनके लिये दो जोड़ी जूते भी बना कर तैयार कर दिये। जूता बनाने वाले ने इन जूतों को बनाने में अपनी सारी होशियारी लगा दी थी। दोनों ने अपनी अपनी चीज़ें एक साथ रख दी।

आज के दिन उन लोगों ने वहॉ जूते बनाने के लिये कोई चमड़ा नहीं छोड़ा। पर उन्होंने वहॉ उन कपड़ों के पास रोशनी के लिये एक मोमबत्ती जला कर रख दी।

उसके बाद वह जूते बनाने वाला और उसकी पत्नी दोनों उसी आलमारी के पीछे छिप कर बैठ गये। जैसे ही आधी रात हुई वे एल्व्ज़ वहॉ दरवाजे से अपना काम करने के लिये फिर आये पर आज तो वहॉ कोई चमड़ा नहीं रखा था।

आज तो वहॉ केवल दो जोड़ी कपड़े ही कपड़े रखे थे बिल्कुल उन्हीं के साइज़ के, क्योंकि जूता बनाने वाले की पत्नी साइज़ भॉपने में बहुत होशियार थी।

दोनों एल्व्ज़ के चेहरे पर एक लम्बी सी मुस्कुराहट दौड़ गयी। उन्होंने तुरन्त ही वे कपड़े पहन लिये और खुशी से गाने लगे। वे दूसरों की सहायता तो करते थे पर किसी से अपने काम के बदले में कुछ मॉगने में विश्वास नहीं करते थे।

पर एक भेंट जो उनको बिना मॉगे मिली थी वह तो सबसे अच्छी भेंट थी। गाते गाते वे फिर नाचने भी लगे। कुछ मिनट के बाद वे एक खास तरीके का नाच नाचने लगे।

वे काम करने की मेज के ऊपर नाच रहे थे, उसके चारों तरफ नाच रहे थे। कभी वे पट पट कर के नाचते तो कभी घूम घूम कर। वे सारे समय हॅसते ही रहे। कभी वे धन्यवाद देने के लिये अपनी ऑखें भी मिचकाते। उसके बाद वे चले गये।

और उसके बाद उन पति पत्नी ने फिर कभी उन ऐल्व्ज़ को नहीं देखा। अब उनके पास रहने के लिये काफी पैसा था। उनको काम करने की भी कोई जरूरत नहीं थी पर क्योंकि वे काम से प्यार करते थे इसलिये वे काम करते थे।

वे एल्व्ज़ की सहायता को कभी भूले नहीं और इसी लिये वे दूसरों की भी सहायता करते रहे।

4 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च[11]

स्वीडन के लुंड शहर में एक छोटा शहर है शुनैन जहॉ सारे स्कैन्डिनैवियन देशों का आर्चबिशप बैठता है।[12] यहॉ एक शाही रोमन चर्च है। लोगों का कहना है कि यह रोमन चर्च कभी पूरा नहीं होगा। उसकी इमारत में कुछ न कुछ कमी हमेशा ही रहेगी। इसकी वजह यह बतायी जाती है।

कहते हैं कि जब सेन्ट लौरेन्स[13] वहॉ गोस्पल का उपदेश[14] देने के लिये आये तो वह वहॉ पर एक चर्च बनवाना चाहते थे पर उनको यह नहीं मालूम था कि वह वहॉ उसे कैसे बनवायें।

जब वह इस बात को सोच रहे थे तो एक बड़े साइज़ का आदमी[15] उनके पास आया और उनसे कहा कि वह उसके लिये चर्च बना देगा पर एक शर्त पर। कि सेन्ट लौरेन्स को चर्च पूरा होने से पहले पहले उसका नाम बताना पड़ेगा। और अगर वह नहीं बता पाया तो वह या तो चॉद सूरज ले लेगा या फिर सेन्ट लौरेन्स की ऑखें ले लेगा।

---

[11] Finn, the Giant and the Minster of Lund – a folktale from Sweden, Europe.
Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_3.html

[12] There stands in the University town of Schunen, the town of Lund, the seat of first archbishop in all Scandinavia…

[13] St Lawrence

[14] To preach Gospels – there are four Gospels in Bible. Otherwise Gospels mean message from God.

[15] Translated for the word "Giant"

सेन्ट बड़े साइज़ के आदमी की इस बात को मान गया और बड़े साइज़ के आदमी ने चर्च बनाना शुरू कर दिया। चर्च जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगा और उसकी इमारत जल्दी ही खत्म होने पर भी आ गयी।

सेन्ट लौरेन्स बेचारा परेशान सा अपने भविष्य के बारे में सोचता रहा क्योंकि अभी तक उसे बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता नहीं चला था। और वह अपनी ऑखें भी खोना नहीं चाहता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह शहर के बाहर घूम रहा था और इस मामले पर गम्भीर रूप से विचार कर रहा था तो वह बहुत दुखी हो गया और एक पहाड़ी पर आराम करने के लिये बैठ गया।

जब वह उस पहाड़ी पर बैठा हुआ था तो उसने पहाड़ी के अन्दर से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। साथ में एक स्त्री के गाने की आवाज भी सुनी जो वह उस बच्चे को चुप करने के लिये गा रही थी — "सो जा सो जा मेरे बच्चे सो जा। कल तेरा पिता फ़िन यहॉ आयेगा तब तुझे आसमान के सूरज और चॉद खेलने के लिये देगा या फिर सेन्ट लौरेन्स की ऑखें देगा।"

जब सेन्ट लौरेन्स ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ क्योंकि अब उसे उस बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता चल गया था। वह वहॉ से तुरन्त ही शहर भाग गया और चर्च जा पहुॅचा। वहॉ बड़े साइज़ का आदमी चर्च की छत पर बैठा हुआ था और उस चर्च का आखिरी पत्थर रखने ही जा रहा था कि...

सेन्ट लौरेन्स नीचे से चिल्लाया — "फ़िन फ़िन। चर्च का यह आखिरी पत्थर ज़रा ध्यान से रखना।"

अपना नाम सुन कर बड़े साइज़ के आदमी को गुस्सा आ गया और गुस्से के मारे उसने वह पत्थर वहीं से नीचे फेंक दिया और बोला — "अब यह चर्च कभी खत्म नहीं होगा।"

यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया। तबसे चर्च में हमेशा ही कुछ न कुछ काम चलता ही रहता है।

कुछ दूसरे लोगों को कहना है कि अपना नाम सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी अपनी पत्नी के साथ नीचे आया चर्च के अन्दर गया और दोनों एक एक खम्भा ले कर उसको तोड़ने ही वाले थे कि वे खुद पत्थर में बदल गये और आज तक उन्हीं खम्भों के बराबर में खड़े देखे जा सकते हैं जिन्हें उन्होंने पकड़ा था।

5 एक लड़की और सॉप[16]

एक बार की बात है कि एक लड़की थी जो जंगल में अपने जानवर चराने जाया करती थी। पर अक्सर उसके जानवर खो जाया करते थे। एक दिन वह एक बड़ी सी पहाड़ी पर आयी तो उसने देखा कि वहॉ उसके फाटक और दरवाजे थे सो वह उसके अन्दर चली गयी।

अन्दर जा कर उसने देखा कि एक बड़ी सी मेज लगी हुई है और उस पर खाने की अच्छी अच्छी चीज़ें लगी हुई हैं। पास में ही एक पलंग भी पड़ा हुआ था जिस पर एक बहुत बड़ा सॉप लेटा हुआ था।

सॉप लड़की से बोला —"अगर तुम चाहो तो बैठ जाओ। अगर तुम चाहो तो कुछ खा पी भी लो। और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तो यहॉ मेरे पास आ कर लेट भी जाओ। पर अगर तुम्हारी इच्छा न हो तो तुम ऐसा न करो।"

लड़की ने वहॉ कुछ नहीं किया। अन्त में सॉप बोला — "अभी कुछ लोग यहॉ आ रहे हैं जो तुम्हारे साथ नाचना चाहेंगे पर तुम उनके साथ नहीं नाचना। उसी समय वहॉ कुछ आदमी आ पहुँचे और उन्होंने उस लड़की के साथ नाचने के लिये कहा पर उसने

[16] The Girl and the Snake – a folktale from Sweden, Europe.
Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_8.html

उनकी एक न सुनी। तब उन्होंने खाना पीना शुरू किया। लड़की भी वहॉ से अपने घर चली गयी।

अगले दिन वह फिर अपने जानवर देखने गयी पर उसको फिर से वहॉ अपना कोई जानवर नहीं मिला। वह फिर रास्ता भूल गयी और फिर उसी पहाड़ी पर आ पहुँची।

वह इस बार भी उसमें घुस गयी और फिर पहले दिन जैसा ही पाया। बहुत अच्छी तरह सजी हुई मेज और पलंग पर लेटा हुआ एक बड़ा सा सॉप।

पहले दिन की तरह से सॉप ने उससे फिर वही कहा — "अगर तुम चाहो तो बैठ जाओ। अगर तुम चाहो तो कुछ खा पी भी लो। और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तो यहॉ मेरे पास आ कर लेट भी जाओ। पर अगर तुम्हारी इच्छा न हो तो तुम ऐसा न करो। अभी कुछ लोग यहॉ आ रहे हैं जो तुम्हारे साथ नाचना चाहेंगे पर तुम उनके साथ नहीं नाचना।"

उसी समय वहॉ कुछ आदमी आ पहुँचे और उन्होंने उस लड़की के साथ नाचने के लिये कहा पर उसने उनकी एक न सुनी। तब उन्होंने खाना पीना शुरू किया। लड़की भी वहॉ से अपने घर चली गयी।

तीसरे दिन वह फिर जंगल गयी। उस दिन भी उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि पहले दो दिन हुआ था। सॉप ने उसको

खाने पीने के लिये कहा। इस बार उसने खाया भी और पिया भी और खूब पेट भर कर खाया।

खाने के बाद सॉप ने उससे अपने पास लेट जाने के लिये कहा ये वह उसके पास लेट गयी। फिर उसने उससे अपने गले लग जाने के लिये कहा। उसके चारों तरफ अपनी बॉहें डाल दीं। तब सॉप ने कहा कि वह उसको चूम ले पर अगर उसको उससे डर लगता हो तो वह उन दोनों के बीच में अपना ऐप्रन रख सकती थी।

लड़की ने वैसा ही किया और लो वह तो एक बहुत सुन्दर राजकुमार में बदल गया जिसके ऊपर जादू डाल कर सॉप बना दिया गया था। और अब इस लड़की की हिम्मत ने उसको उस जादू से आजाद करा दिया था।

इसके बाद वे दोनों वहॉ से चले गये और फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना गया।

6 वफादार और बेवफा[17]

एक बार की बात है कि एक गरीब पति पत्नी थे जो एक गॉव के एक छोटे से मकान में रहते थे। आखिर भगवान ने उनको एक बेटा दिया। बच्चे को देख कर वे दोनों बहुत खुश हुए।

जब उसकी किस्टिनिंग की रस्म हुई तो उनके मकान में एक हुल्ड्रा[18] आयी। वह बच्चे के पालने के पास बैठी और उसने यह भविष्यवाणी की कि उस बच्चे की किस्मत बहुत अच्छी होगी।

वह आगे बोली — "और इससे भी अच्छी बात यह है कि जब यह पन्द्रह साल का होगा तो मैं इसको बहुत ही अच्छे गुणों वाला एक घोड़ा भेंट में दूँगी। एक ऐसा घोड़ा जो बोलता भी होगा।"

यह कह कर हुल्ड्रा वहॉ से चली गयी।

बच्चा बड़ा हुआ और अच्छा तन्दुरुस्त और ताकतवर बन गया। जब वह पन्द्रह साल का हो गया तो एक अजनबी बूढ़ा उनके घर आया और उनका दरवाजा खटखटाया। उसने आ कर कहा कि वह जो घोड़ा ले कर आया है वह उसकी रानी ने भेजा है और अब इसके बाद से वह वफादार का रहेगा जैसा कि उसने वायदा किया था। उसके बाद वह बूढ़ा चला गया। वह सुन्दर घोड़ा सबको बहुत

[17] Faithful and Unfaithful – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Adopted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_9.html

[18] In Norse countries a Huldra maybe a fairy type.

पसन्द आया। और वफादार तो उसे हर आने वाले दिन पिछले दिन से भी ज़्यादा और और ज़्यादा प्यार करने लगा।

कुछ समय बाद वह घर में रहते रहते थक गया तो उसने माता पिता से कहा कि वह दुनियॉ देखना चाहता है। माता पिता ने उसको रोका नहीं क्योंकि घर में भी उसके करने के लिये कुछ नहीं था सो उसने अस्तबल में से अपना घोड़ा निकाला उसके ऊपर जीन[19] कसी और जंगल की तरफ दौड़ गया।

वह दौड़ता गया दौड़ता गया और वहुत दूर निकल गया। आगे जा कर उसने देखा कि दो शेर एक चीते से लड़ रहे हैं। चीता उनको मारने ही वाला था कि घोड़ा लड़के से बोला — "जल्दी करो अपना तीर कमान उठाओ चीते को मार डालो और शेरों को बचा लो।"

नौजवान बोला — "मैं वही करने जा रहा हूॅ।" कह कर उसने अपना तीर कमान की डोरी पर रखा और तुरन्त ही चीते पर चला दिया। चीता उसी समय मर गया। दोनों शेर उसके पास आ गये और दोस्ताना अन्दाज में उसको अपना सिर हिला कर फिर वापस अपनी गुफा में चले गये।

[19] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

वफादार फिर से घोड़े पर चढ़ कर आगे चलता रहा। काफी दूर जाने के बाद उसको दो डरे हुए सफेद फाख्ता[20] दिखायी दिये जो एक बाज़ से डर रहे थे।

बाज उनको पकड़ने ही वाला था कि घोड़ा फिर बोला — "जल्दी करो। अपनी कमान पर तीर रखो और बाज़ को मार कर फाख्ताओं को निडर कर दो।"

नौजवान बोला — "मैं बस यही करने वाला था।" उसने अपना तीर कमान निकाला तीर कमान की रस्सी पर रखा और बाज़ की तरफ तीर चला दिया। बाज़ मर गया और फाख्ताऐं बच गयीं। दोनों फाख्ताऐं उसके पास आयीं और कृतज्ञता से उसके सामने अपने पंख फड़फड़ाये और अपने घोंसले की तरफ चली गयीं।

नौजवान फिर आगे बढ़ चला। वह अब अपने घर से काफी दूर निकल आया था। उसका घोड़ा आसानी से थकने वाला नहीं था। वह उसके साथ साथ ही चल रहा था।

वह उसके ऊपर चलता रहा जब तक कि वह एक झील के किनारे तक नहीं आ गया। वहॉ उसने पानी एक चिड़िया[21] झील के पानी से निकलती देखी जिसके पंजों में एक पाइक मछली[22] थी।

[20] Translated for the word "Dove". See its picture above.
[21] Translated for the word "Sea Gull. See its picture above.
[22] Pike fish is a large size fish.

उसको देख कर उसका घोड़ा बोला — "जल्दी से अपना तीर कमान उठाओ समुद्री चिड़िया को मारो और पाइक मछली को बचाओ।"

नौजवान ने जवाब दिया — "हॉ मैं यही करूँगा।" तुरन्त ही उसने अपना तीर कमान उठाया और अपना तीर उस समुद्री चिड़िया पर चला दिया जो पाइक मछली को अपने पंजे में दबाये लिये जा रही थी।

चिड़िया तो तीर से घायल हुई अपने पंख फड़फड़ाती हुई नीचे जमीन पर गिर गयी पर पाइक पानी के पास ही गिरी उसने नौजवान की तरफ कृतज्ञता भरी नजर से देखा और फिर पानी में चली गयी।

वह वफादार फिर से अपने घोड़े पर बैठा और आगे चला। अब वह एक किले के पास आ गया था। वहॉ पहुँच कर तुरन्त ही उसने राजा को बताया कि वह उससे मिलना चाहता है और उससे उसने प्रार्थना की कि वह उसके पास कोई काम करना चाहता है।

राजा ने नौजवान घुड़सवार की तरफ अपनेपन से देखते हुए पूछा कि वह किस तरह का काम चाहता है। वफादार बोला — "मैं एक सईस[23] बनना चाहता हूँ। पर पहले मेरे अपने घोड़े के लिये एक कमरा और खाना चाहिये।"

राजा बोला "वह तुमको मिल जायेगा।"

सो नौजवान को एक सईस की नौकरी दे दी गयी।

[23] Translated for the word "Groom" – who takes care of horses

उसने राजा के पास काफी दिनों तक इतना अच्छा काम किया कि केवल राजा ही नहीं बल्कि किले में हर कोई उसको बहुत चाहने लगा। राजा तो उसकी बड़ाई करते ही नहीं थकता था।

पर राजा के दूसरे काम करने वालों में एक का नाम था बेवफा। यह नौकर वफादार से बहुत जलता था और वह वही करना चाहता था जिससे वफादार को कोई नुकसान पहुँचे। क्योंकि वह यह सोचता था "तब मैं उसे यहाँ से बाहर निकाल दूँगा और राजा को उसकी तरफदारी करते नहीं देखूँगा।"

अब हुआ यह कि राजा बहुत दुखी था क्योंकि उसकी पत्नी खो गयी थी। उसको किले में से कोई ट्रौल[24] उठा कर ले गया था। यह सच था कि रानी को राजा के साथ कोई खुशी नहीं मिलती थी और वह उसको प्यार भी नहीं करती थी पर फिर भी राजा उसको बहुत पसन्द करता था और इस बारे में अक्सर अपने नौकर बेवफा से बात किया करता था।

इस मौके का फायदा उठा कर एक दिन बेवफा ने राजा से कहा — "मेरे मालिक को अब बहुत ज़्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि यह वफादार मुझसे अपनी डींगें हाँक रहा था कि यह आपकी सुन्दर पत्नी को उस ट्रौल से छुड़ा कर ला सकता है।"

[24] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings. See its picture above.

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "अगर उसने ऐसा कहा है तो उसको अपनी बात रखनी चाहिये।"

उसने तुरन्त ही वफादार को अपने सामने बुलवाया और उसको मौत की धमकी दी कि अगर वह तुरन्त ही उसकी पत्नी को ट्रौल से उसके पास ले कर नहीं आया तो उसे मरवा दिया जायेगा। पर अगर वह अपने काम में सफल हो गया तो उसको भारी इनाम दिया जायेगा।

हालॉकि वफादार ने कई बार मना किया कि बेवफा जो कुछ भी उसके बारे में कह रहा था वह गलत था पर राजा उसकी कुछ नहीं सुन रहा था।

सो वह नौजवान बेचारा चुप हो गया उसको लगा कि बस अब उसकी ज़िन्दगी इतनी ही थी। वह अपने घोड़े के कमरे में उसको विदा कहने गया और उसके बराबर में खड़े हो कर रोने लगा।

घोड़े ने पूछा — "क्या बात है तुम्हें किस चीज़ का दुख है।"

तब वफादार ने उसे सब कुछ बताया जो उसके और राजा के बीच हुआ था। वह आगे बोला "यह शायद आखिरी बार है कि मैं तुमसे मिल रहा हूँ।"

घोड़ा बोला — "अगर यही होना है तो एक रास्ता है। किले में ऐटिक[25] में एक पुरानी वायलिन रखी हुई है तुम उसे अपने साथ ले

[25] Attic is a very small room on the top of any building. See its picture above.

जाओ और जब तुम वहॉ पहुँच जाओ जहॉ रानी बन्द है तब वहॉ उसे बजाना शुरू करना।

इसके अलावा अपने नाप का एक लोहे के तारों का जिरहबख्तर बनवा लो और उसमें जितने सारे चाकू आ सकते हैं रख लो। जब तुम देखो कि ट्रौल अपना मुँह खोल रहा है तो उसके मुँह में घुस कर उसे मार देना। पर तुम बिल्कुल डरना नहीं और अपने रास्ते के लिये मेरे ऊपर विश्वास रखना।"

घोड़े के इन शब्दों ने वफादार के ऊपर जादू का सा काम किया। उसमें एक नयी हिम्मत आ गयी। वह राजा के पास गया और उनसे जाने की इजाज़त मॉगी।

उसने चोरी छिपे लोहे के तारों का एक जिरहबख्तर बनवाया किले की ऐटिक से वायलिन ली अपने घोड़े को उसके कमरे से बाहर निकाला और तुरन्त ही ट्रौल की पहाड़ी पर चल दिया।

बहुत जल्दी ही वह उस पहाड़ी पर पहुँच गया और इससे पहले कि वह जान पाता कि वह ट्रौल कहॉ है वह तो उसके रहने की जगह में ही था। जब वह उसके पास आ गया तब उसने ट्रौल को देखा जो अपने किले से बाहर निकल आया था और अपनी गुफा के बाहर सो रहा था।

वह बड़ी गहरी नींद सो रहा था। उसके खर्राटे भी इतने ज़ोर के थे कि उनकी आवाज से सारी पहाड़ी कॉप रही थी। पर उसका

मुँह पूरा खुला हुआ था। उसका मुँह इतना बड़ा था कि वह नौजवान उसमें पूरा का पूरा घुस सकता था।

उसने ऐसा ही किया क्योंकि उसको डर बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। वह ट्रौल के अन्दर तक चला गया और उसको आसानी से मार दिया। वफादार वहाँ से फिर बाहर निकल आया और अपना जिरहबख्तर उतार दिया। फिर वह ट्रौल के किले में घुस गया।

उसमें एक बड़े सोने के कमरे में रानी बन्दी बनी बैठी थी। उसको सात मजबूत सोने की जंजीरों से बाँध रखा था। वफादार उन सोने की जंजीरों को नहीं तोड़ सका तो उसने अपनी वायलिन निकाली और उस पर एक ऐसी धुन बजानी शुरू की कि वे सोने की जंजीरें हिलने लगीं और एक एक कर के नीचे गिरने लगीं।

जब सब जंजीरें खुल कर नीचे गिर गयीं तो रानी आजाद हो कर उठ कर खड़ी हो गयी। उसने उस हिम्मती नौजवान की तरफ खुशी और बड़ाई की नजर से देखा।

उसको उसके ऊपर बहुत प्यार आया क्योंकि वह बहुत सुन्दर था और बहुत अच्छे व्यवहार वाला था। वह उसके साथ तुरन्त ही अपने किले को आने को तैयार हो गयी।

रानी के किले लौटने से सारे किले में खुशियाँ छा गयीं। वफादार को राजा ने जो इनाम देने के लिये कहा था वह उसने उसे दिया। पर रानी अब राजा को और भी ज़्यादा नीची नजर से देखने लगी थी। वह उससे बोली भी नहीं। वह हँसती भी नहीं थी। उसने

अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया था। वह सदा उदास रहती थी।

इस बात से राजा को बहुत दुख हुआ सो एक दिन राजा ने रानी से पूछा कि वह इतनी उदास क्यों थी। रानी बोली — "मैं तब तक खुश नहीं हो सकती जब तक मेरे पास वैसा ही एक सोने का कमरा न हो जैसा कि ट्रौल के किले में था। ऐसा कमरा तो कहीं और नहीं मिल सकता।"

राजा बोला — "रानी जी ऐसा कमरा तो आपके लिये मिलना कोई आसान नहीं है। और मैं यह भी वायदा नहीं कर सकता कि कोई इस काम को कर देगा।"

पर जब उसने यह बात अपने नौकर बेवफा से कही तो बेवफा बोला — "इसके मिलने में तो कोई ज़्यादा परेशानी नहीं है क्योंकि वफादार कह रहा था कि वह उस सोने के कमरे को यहॉ किले में आसानी से ला सकता है।"

तुरन्त ही वफादार को बुलवाया गया और उससे उसने ट्रौल का सोने का कमरा किले में लाने के लिये कहा क्योंकि वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसने उससे कहा कि वह अपना वायदा पूरा करे।

अब यह तो कहना बेकार था कि वफादार राजा से इस काम के लिये मना करता। पर अब वह करे भी क्या। उसको वह कमरा लाने के लिये जाना ही चाहिये सो उसके लिये उसे जाना ही पड़ा।

उसको धीरज देना मुश्किल हो गया। वह फिर अपने घोड़े के पास पहुँचा। वहाँ जा कर वह बहुत रोया और उसको अन्तिम विदा कहा।

घोड़े ने पूछा — "तुम्हें क्या चीज़ परेशान कर रही है क्या बात है?"

नौजवान बोला — "यह बेवफा मेरे बारे में कुछ कुछ झूठ बोलता रहता है। उसने राजा से कहा है कि मैं ट्रौल का सोने का कमरा ला कर उसे दे सकता हूँ सो राजा ने मुझसे कहा है कि अगर मैंने उसे ट्रौल का सोने का कमरा ला कर नहीं दिया तो मुझे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

घोड़ा बोला — "इससे ज़्यादा गम्भीर बात तो कोई हो ही नहीं सकती। सुनो। तुम एक बहुत बड़ा पानी का जहाज़ लो अपनी वायलिन अपने साथ लो और उसको बजाओ तो वह सोने का कमरा उस पहाड़ी पर से नीचे उतर आयेगा।

फिर ट्रौल के घोड़े उसके आगे जोत दो तब तुम वह चमकता हुआ सोने का कमरा यहाँ बिना किसी मुश्किल के ला पाओगे।"

यह सुन कर वफादार को थोड़ी तसल्ली मिली। उसने वैसा है किया जैसा कि उसके घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। जब वह उस पहाड़ी पर पहुँच गया तो उसने अपनी वायलिन बजाना शुरू कर दिया।

ट्रौल के सोने के कमरे ने वह वायलिन सुनी तो वह उस संगीत की आवाज के पीछे पीछे खिंचा चला आया। ऐसा लग रहा था जैसे कोई मकान पहियों पर चलता चला आ रहा हो। वफादार ने उसके आगे ट्रौल के घोड़े जोते और उसको अपने जहाज़ पर रख लिया।

जल्दी ही उसने झील पार कर ली और वह उसे सुरक्षित रूप से बिना किसी टूट फूट के किले में ले आया। रानी उसको देख कर बहुत खुश हुई।

पर फिर भी वह बहुत थकी हुई और दुखी थी। वह अपने राजा पति से बिल्कुल भी नहीं बोली और न ही किसी ने उसे हॅसते हुए देखा और सुना।

इस बात पर राजा और ज़्यादा दुखी हो गया। उसने उससे पूछा कि वह इतनी दुखी क्यों थी। तो रानी ने जवाब दिया — "मैं खुश कैसे हो सकती हूॅ जब तक मुझे मेरे वे दो घोड़े न मिल जायें जो ट्रौल के घर में मेरे थे। इतने सुन्दर घोड़े तो दुनियॉ में कहीं देखने को नहीं मिलेंगे।"

राजा बोला — "कोई और काम आसान हो सकता है सिवाय इस काम के। तुम कोई और काम बताओ जो तुम चाहती हो। क्योंकि वे घोड़े पालतू नहीं हैं और बहुत पहले ही जंगल में भाग गये होंगे।"

यह कह कर राजा दुखी हो कर वहॉ से चला गया। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे। पर बेवफा

फिर बोला — "मेरे सरकार इस बात की आप चिन्ता न करें क्योंकि वफादार ने कहा है कि वह ट्रौल के वे दोनों घोड़े आसानी से ले कर आ सकता है।"

एक बार फिर वफादार को बुलवाया गया।

जब वफादार राजा के पास आया तो उसको धमकी दी गयी कि अगर वह उन ट्रौल के दोनों घोड़ों को राजा के पास ले कर नहीं आया तो उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा। बल्कि अगर वह उनको पकड़ लाया तो उसे बहुत इनाम दिया जायेगा।

इस बार वफादार को यह पक्का भरोसा था कि वह ट्रौल के दोनों घोड़ों को पकड़ कर राजा के पास नहीं ला सकता। सो वह एक बार फिर अपने घोड़े के पास उसको अन्तिम विदा कहने के लिये पहुँचा।

घोड़ा बोला — "तुम इतनी छोटी छोटी बातों पर क्यों रोते हो। तुम जल्दी से जंगल चले जाओ अपनी वायलिन बजाओ और सब ठीक हो जायेगा।"

वफादार ने फिर वैसा ही किया जैसा उसके घोड़े ने उससे करने के लिये कहा था। कुछ देर बाद ही दो शेर जिनको उसने बचाया था उसके सामने कूदते हुए आ गये। वे उसकी वायलिन सुन रहे थे। उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह दुखी था।

वफादार बोला — "हॉ मैं दुखी हूँ।" कह कर उसने उनको बताया कि उसको क्या करना है। यह सुन कर वे तुरन्त ही जंगल

में भाग गये। एक शेर एक तरफ भाग गया और दूसरा दूसरी तरफ भाग गया। वे दोनों जल्दी ही दोनों घोड़ों को ले कर लौट आये।

वफादार ने फिर से अपनी वायलिन छेड़ी और वे दोनों घोड़े उसके पीछे पीछे चल दिये और जल्दी ही राजा के किले में आ पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उसने वे दोनों घोड़े रानी को दे दिये।

इतने सारे काम कराने के बाद राजा अब यह आशा कर रहा था कि रानी अब उससे बोलेगी खुश होगी पर वह तो फिर भी खुश नहीं हुई। वह एक शब्द भी उससे नहीं बोली। बस केवल वह जब ज़रा सी खुश दिखती थी जब वह वफादार से बात कर रही होती थी।

तब फिर एक दिन राजा ने उससे पूछा कि अब उसे किस बात की कमी थी और वह क्यों इतनी असन्तुष्ट रहती थी। वह बोली — "मुझे घोड़े तो मिल गये हैं और मैं अक्सर अपने सोने के चमकदार कमरे में भी बैठती हूँ पर मैं उस कमरे की अपनी किसी भी सुन्दर आलमारियों को नहीं खोल सकती हूँ जो कीमती चीज़ों से भरी हुई हैं। क्योंकि मेरे पास उनकी चाभी ही नहीं है। और अगर मुझे उनकी चाभी नहीं मिलीं तो मैं खुश कैसे होऊँ।"

राजा ने पूछा — "तो फिर उनकी चाभी कहाँ हैं।"

रानी बोली — "ट्रौल की पहाड़ी के पास वाली झील में। जब वफादार मुझे ले कर यहाँ आ रहा था तब मैंने उनको वहीं फेंक दिया था।"

राजा बोला — "तुम्हारी उन चाभियों का लाना तो बड़ा मुश्किल काम है। मैं बड़ी मुश्किल से यह वायदा करता हूँ कि तुमको वे चाभियॉ मिल जायेंगीं।"

फिर भी उसने सोचा एक बार कोशिश करने में क्या हर्ज है। उसने अपने नौकर बेवफा को फिर से बुलाया और उससे इस काम को करने के लिये कहा तो बेवफा तुरन्त बोला — "यह तो बहुत आसान काम है क्योंकि वफादार मुझसे अपनी शान बघार रहा था कि वह रानी साहिबा की चाभियॉ बड़ी आसानी से ला कर दे सकता है – अगर वह चाहे तो।"

राजा बोला — "तब तो मैं उसे अपनी बात रखने पर मजबूर कर दूँगा।" सो उसने तुरन्त ही वफादार को बुलवाया और उससे कहा कि अगर ट्रौल की पहाड़ी के पास वाली झील में से उसने आलमारियों की चाभियॉ उसे ला कर नहीं दीं तो वह उसको मरवा देगा।

इस बार वफादार इतना ज़्यादा दुखी नहीं था क्योंकि उसने सोचा कि "मेरा अक्लमन्द घोड़ा मेरी जरूर सहायता करेगा।"

सो वह अपने घोड़े के पास गया और उससे जब अपनी मुश्किल बतायी तो उसने उसे उसकी वायलिन बजाते हुए जाने के लिये कहा और कहा कि देखना फिर क्या होता है।

जब वफादार को वायलिन बजाते बजाते कुछ समय बीत गया तो वह पाइक मछली जिसको उसने बचाया था पानी के ऊपर

आयी। उसने उसको पहचान लिया और पूछा कि वह उसके लिये क्या कर सकती है।

नौजवान ने कहा — "हॉ तुम मेरे लिये बहुत कुछ कर सकती हो।" कह कर उसने उससे झील में से चाभियॉ लाने के लिये कहा। पाइक मछली तुरन्त ही झील में कूद गयी और अपने मुँह में सोने की चाभियों का एक गुच्छा लिये पानी के ऊपर आ गयी। वह गुच्छा उसने अपने बचाने वाले को दे दिया।

वफादार उनको ले कर तुरन्त ही किले की तरफ लौटा और चाभियॉ ला कर रानी साहिबा को दे दीं। अब रानी अपने सोने के कमरे की सब आलमारियॉ खोल सकती थी और उनमें से जो चाहे जितना चाहे निकाल सकती थी।

पर रानी अभी भी दुखी थी। उसके दुख की वजह न समझते हुए राजा ने एक बार फिर अपने नौकर बेवफा को बुलवाया और उससे यह सब कहा तो बेवफा ने कहा — "लगता है कि रानी साहिबा वफादार को बहुत प्यार करती हैं। तो मैं सरकार को यह सलाह दूँगा कि आप वफादार की गर्दन कटवा दें। तब आप देखेंगे कि रानी साहिबा में कुछ बदलाव आया है।"

राजा को उसकी इस सलाह में कुछ सार लगा और उसने यह काम बहुत जल्दी करने का फैसला कर लिया।

लेकिन एक दिन वफादार के घोड़े ने वफादार से कहा — "राजा तुम्हारा सिर कटवाने वाला है। सो तुम जल्दी से जंगल चले

जाओ और वहॉ जा कर अपनी वायलिन बजाओ। वे दोनों फाख्ताऐं जिनको तुमने बचाया था उड़ कर वहॉ आयेंगी तो तुम उनसे विनती करना कि वे तुम्हें एक बोतल "ज़िन्दगी का पानी" ला कर दें।

उसके बाद तुम रानी के पास जाना और उसको वह पानी की बोतल दे कर कहना कि जब राजा तुम्हारा सिर कटवा दे तो वह तुम्हारे सिर को तुम्हारे शरीर पर रख कर जोड़ दे और उस "ज़िन्दगी के पानी" को तुम्हारे शरीर पर छिड़क दे।"

वफादार ने ऐसा ही किया। वह उसी दिन जंगल चला गया अपनी वायलिन बजायी और जब दोनों फाख्ताऐं आ गयीं तो उनसे अपने लिये "ज़िन्दगी का पानी" लाने की विनती की।

जब वे ज़िन्दगी के पानी से भरी एक बोतल ले आयीं तो वह रानी साहिबा के पास गया और उनसे विनती की कि वह राजा के उसके सिर काटने के बाद उस सिर को उसके शरीर पर जोड़ कर उस बोतल में से उसके ऊपर पानी छिड़क दे।

रानी ने ऐसा ही किया। वफादार फिर से ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया – बल्कि और ज़्यादा सुन्दर। राजा ने तो यह देख कर आश्चर्य से दॉतों तले उॅगली दबा ली।

फिर उसने रानी से कहा कि वह उसका सिर काट दे और वह पानी उसके शरीर पर भी छिड़क दे। रानी ने तुरन्त तलवार उठायी

और पल भर में ही राजा का सिर काट दिया। उसका सिर धरती पर लुढ़क गया।

पर रानी ने उसके शरीर पर कोई ज़िन्दगी का पानी नहीं छिड़का। राजा के शरीर को तुरन्त ही ले जा कर दफ़न कर दिया गया।

उसके बाद रानी ने वफादार से शादी कर ली। बेवफा को राज्य से बाहर निकाल दिया गया और उसे बहुत बेइज़्ज़त हो कर वहॉ से जाना पड़ा।

अक्लमन्द घोड़ा अपने कमरे में सन्तोष के साथ रहा। राजा और रानी के पास वह जादुई वायलिन ट्रौल का सोने कमरा और उसकी कीमती चीज़ें हमेशा रही। और वे खुश खुश रहे।

7 वीयरवुल्फ़[26]

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जो एक बहुत बड़े राज्य पर राज करता था। उसके परिवार में एक पत्नी थी और एक बेटी थी।

अब क्योंकि बेटी राजा की अकेला ही बच्चा थी सो वह अपने माता पिता की ऑख का तारा थी। वे उसको दुनियॉ की किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करते थे। उनका आनन्द यही था कि वे अपनी बेटी को खुश रखें और उसको बड़ा होते देखें।

पर जैसा कोई आदमी चाहता है हर समय वैसा ही तो नहीं होता। अक्सर हम जिसकी आशा नहीं करते वह हो जाता है। इससे पहले कि राजा की बेटी बड़ी होती उसकी मॉ यानी राजा की रानी बीमार पड़ी और भगवान को प्यारी हो गयी।

अब यह सोचना तो कोई मुश्किल काम नहीं है कि केवल राजा के महल में नहीं बल्कि सारे राज्य में कितना दुख छाया होगा क्योंकि रानी को भी सब प्यार करते थे। राजा तो इतना दुखी था कि उसने दोबारा शादी न करने का फैसला कर लिया। अब उसका प्यार अपनी बेटी के लिये और बढ़ गया था।

[26] The Werewolf – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_11.html

समय बीतता गया। राजकुमारी बड़ी होती गयी। हर साल वह और ज़्यादा लम्बी और सुन्दर होती जाती। उसका पिता उसकी हर इच्छा पूरी करने के लिये तैयार रहता था। वहॉ बहुत सारी स्त्रियॉ ऐसी थीं जिनको और कोई काम नहीं था सिवाय राजकुमारी का हुक्म बजा लाने के।

उन स्त्रियों में से एक स्त्री ऐसी थी जिसकी पहले शादी हो चुकी थी और उसके दो बेटियॉ थीं। वह शक्ल सूरत से अच्छी थी उसकी जुबान मीठी थी और वह बात भी बहुत अच्छी करती थी। वह बहुत कोमल थी और रेशम जैसी चिकनी थी। पर वह दिल की बहुत बुरी और झूठी थी।

जैसे ही रानी मर गयी तो उसने यह प्लान करना शुरू कर दिया कि वह किस तरह राजा से शादी कर ले ताकि उसकी बेटियॉ राजघराने की बेटियों की तरह से बड़ी हो सकें।

इस बात को ध्यान में रखते हुए उसने राजकुमारी का ध्यान अपनी तरफ खींचना शुरू कर दिया। वह उसकी हर चीज़ जो भी वह कहती या करती उसकी तारीफ करती। वह अक्सर अपनी बातों को इस तरफ मोड़ देती कि अगर राजा दूसरी शादी कर लेंगे तो वह कितनी खुश रहेगी।

इस मामले पर बहुत कुछ बातें हुईं और देर और सबेर उसने राजकुमारी को यह विश्वास दिला दिया कि वह स्त्री वह सब कुछ जानती थी जो उसको जानना चाहिये था।

एक दिन राजकुमारी ने उससे पूछा कि उसके पिता राजा को किस तरह की लड़की से शादी करनी चाहिये तो उसने अपने शहद जैसी मीठी बोली में कहा — "इस मामले में तुम्हारे पिता को कोई सलाह देना मेरा काम नहीं है पर हॉ उनको किसी ऐसी स्त्री से शादी करनी चाहिये जो हमारी छोटी सी राजकुमारी को खुश रख सके।

एक बात तो मैं जानती हूॅ कि अगर मेरी किस्मत इतनी अच्छी होती कि राजा मुझे चुन लेते तो मैं अपनी छोटी सी राजकुमारी का बहुत ख्याल रखती।

अगर राजकुमारी को हाथ भी धोने होते तो मेरी एक बेटी उसके लिये पानी का जग लिये खड़ी होती और दूसरी बेटी उसके लिये तौलिया लिये खड़ी होती।"

उसने यह सब और और भी बहुत कुछ उससे कहा। राजकुमारी ने उसका विश्वास कर लिया जैसे कि बच्चे कर लेते हैं। उसके बाद से राजकुमारी ने राजा को चैन से नहीं बैठने दिया। वह बराबर उनसे उस स्त्री से शादी करने की जिद करती रही जैसा कि उस झूठी स्त्री ने उससे करने के लिये कह रखा था।

जब राजकुमारी अपने पिता से बार बार उससे शादी करने के लिये कहती रही तो एक दिन राजा चिल्ला कर बोला — "लगता है कि तुम अपनी बात मनवा कर ही छोड़ोगी। हालॉकि मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता कि मैं दोबारा शादी करूॅ पर अगर तुम इतनी जिद करती हो तो मैं केवल एक शर्त पर शादी करने के लिये तैयार हूॅ।"

राजकुमारी ने पूछा — "और वह शर्त क्या है पिता जी?"

राजा बोला — "अगर मैं दोबारा शादी करूँगा तो केवल इसलिये कि तुम मुझसे यह करने के लिये बराबर कहती रही हो। और इसी लिये तुम मुझसे वायदा करो कि अगर तुम भविष्य में अपनी सौतेली माँ से या सौतेली बहिनों से सन्तुष्ट न हो तो मैं उनके खिलाफ तुम्हारी एक भी शिकायत या रोना नहीं सुनने वाला।"

राजकुमारी ने अपने पिता से इस बात का वायदा किया कि वह ऐसा कुछ नहीं करेगी। सो उन दोनों ने तय किया कि राजा उस स्त्री से शादी कर के उसे राज्य भर की रानी बना लेगा।

जैसे जैसे समय बीतता गया राजकुमारी बड़ी होती गयी और बहुत सुन्दर होती गयी। उसकी सुन्दरता के चर्चे पास और दूर सभी देशों में होने लगे।

दूसरी तरफ रानी की दोनों बेटियाँ घर गृहस्थी वाली थीं। हर समय दूसरों की बुराई करती रहती थीं। कोई उनकी किसी भी अच्छाई की कोई बात नहीं करता था।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पूर्व से पश्चिम से सभी तरफ से बहुत सारे नौजवान राजकुमारी का हाथ माँगने के लिये आने लगे पर किसी ने रानी की बेटियों में कोई रुचि नहीं दिखायी। इससे रानी को गुस्सा तो बहुत आया पर वह अपना गुस्सा छिपाये रही और हमेशा की तरह मीठी और हँसमुख बनी रही।

अब इन नौजवानों में से एक राजकुमार एक दूसरे देश का था। यह राजकुमार नौजवान था बहादुर था और क्योंकि वह राजकुमारी को बहुत प्यार करता था सो राजकुमारी ने उसका प्रस्ताव तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। दोनों ने एक दूसरे के लिये वफादार रहने की कसमें खायीं।

रानी ने यह देखा तो वह बहुत गुस्सा हुई क्योंकि उसको तो खुशी तभी होती जब वह राजकुमार उसकी दोनों बेटियों में से किसी एक को चुन लेता।

यह देख कर उसने अपने मन में सोच लिया कि वह कुछ ऐसा करेगी जिससे वह हॅसता खेलता जोड़ा कभी खुश न रहे। उसने दिन रात यही सोचना शुरू कर दिया कि वह ऐसा क्या करे जिससे वे दोनों हमेशा के लिये अलग हो जायें।

बहुत जल्दी ही उसको एक मौका हाथ लग गया। खबर मिली कि दुश्मन ने देश पर हमला बोल दिया है तो राजा को लड़ाई पर जाना पड़ा।

राजा के जाने के बाद राजकुमारी को पता चला कि सौतेली मॉ कैसी होती है। क्योंकि जैसे ही राजा लड़ाई पर गया रानी ने अपना असली रूप दिखाना शुरू किया। वह उसके लिये उतनी ही कठोर और बेरहम हो गयी जितनी पहले वह उसके लिये अच्छे दिल वाली थी। उसके लिये कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन सौतेली मॉ उसको डॉटती न हो या धमकाती न हो।

उसकी बेटियॉ भी अपनी मॉ जैसी ही थीं। वे भी राजकुमारी को बहुत तंग करती थीं।

पर राजकुमार यानी राजकुमारी के पति के साथ तो इससे भी बुरा था। एक दिन वह शिकार खेलने गया तो रास्ता भूल गया। उसके साथ गये लोग उससे छूट गये।

रानी ने अपना काला जादू इस्तेमाल किया और उसको एक वीयरवुल्फ़[27] में बदल दिया। और उसको शाप दिया कि वह सारी ज़िन्दगी उसी शक्ल में जंगल में मारा मारा फिरता रहे।

जब शाम हो गयी और राजकुमार का कहीं पता नहीं चला तो उसके आदमी घर वापस लौट आये। उनको बिना राजकुमार के लौट कर आया देख कर तो बस केवल सोचा ही जा सकता है कि महल भर में कितना दुख छाया होगा।

राजकुमारी को यह जान कर बहुत दुख हुआ कि किस तरह उस राजकुमार का शिकार का यह दिन गुजरा। वह बेचारी दिन रात रोती रही उसको कोई तसल्ली ही नहीं दे पा रहा था।

पर रानी उसके इस दुख पर बहुत खुश हुई। उसको तो यही सोच कर बहुत खुशी हो रही थी कि जैसा उसने प्लान किया था सब कुछ वैसा ही हो रहा था।

---

[27] Werewolf is a mythological or folkloric human with the ability to shapeshift into a wolf or a therianthropic hybrid wolf-like creature, either purposely or after being placed under a curse or affliction (e.g. via a bite or scratch from another werewolf). This normally happens on a Full Moon night. This is very common in western world – Europe and North America continents.

अब एक दिन ऐसा हुआ कि राजा की बेटी अपने कमरे में अकेली बैठी हुई थी तो उसके दिमाग में कुछ ऐसा आया कि वह खुद उस जंगल में जाये जहॉ राजकुमार गायब हुआ था और उसे वहीं ढूँढने की कोशिश करे।

सो वह अपनी सौतेली मॉ के पास गयी और उससे विनती की कि वह उसको जंगल जाने की इजाज़त दे दे ताकि वह अपना दुख कुछ हल्का कर सके।

रानी की उसको जंगल जाने देने की कोई इच्छा नहीं थी क्योंकि उसकी उसको हर समय हॉ की बजाय ना कहने की आदत थी पर राजकुमारी ने उससे इतनी नम्रतापूर्वक इजाज़त मॉगी कि उसको हॉ करनी ही पड़ी पर उसने उसके साथ अपनी एक बेटी को भेज दिया ताकि वह उसकी देखभाल कर सके।

इस बात पर काफी बहस हुई क्योंकि उसकी अपनी दोनों बेटियों में से कोई भी बेटी राजकुमारी के साथ जाने के लिये तैयार नहीं थी। उनका कहना था कि राजकुमारी के साथ वहॉ जाने में क्या मजा आयेगा जिसके पास रोने के अलावा और कोई काम नहीं था।

पर रानी ने जो कह दिया था सो कह दिया। उसने कहा कि चाहे कुछ भी हो जाये पर उन दोनों में से उसकी एक बेटी को राजकुमारी के साथ जाना ही पड़ेगा चाहे वह उसकी मरजी के खिलाफ ही क्यों न हो। सो लड़कियॉ किले के बाहर जंगल में घूमने लगीं।

राजा की बेटी पेड़ों के बीच में घूमती रही चिड़ियों का गाना सुनती रही अपने प्रेमी के बारे में सोचती रही जिसको वह इतना प्यार करती थी और अब वह उसके पास नहीं था। रानी की बेटियॉ अपने दिल में बुराई लिये उदास उसके पीछे पीछे चलती रहीं।

कुछ दूर चलने के बाद उनको एक झोंपड़ी मिली जो अॅधेरे जंगल के बीचोबीच खड़ी थी। तब तक राजा की बेटी को प्यास लग आयी थी सो वह अपनी सौतेली बहिन के साथ उस झोंपड़ी में पानी पीने के लिये जाना चाहती थी।

पर रानी की बेटी पहले से ही अनमनी थी सो वह बोली — "क्या यह मेरे लिये काफी नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ जंगल के इस वीराने में घूमती फिरूॅ? और अब तुम यह चाहती हो कि मैं जो राजकुमारी हूॅ तुम्हारे साथ इस गन्दी सी झोंपड़ी में भी जाऊॅ।

नहीं नहीं मैं तो इस झोंपड़ी की देहरी पर भी पैर नहीं रखूॅगी। अगर तुम्हें जाना है तो तुम अकेली चली जाओ।"

यह सुन कर राजा की बेटी ने तुरन्त ही वैसा किया जैसा कि उसकी सौतेली बहिन ने उससे करने के लिये कहा था।

जब वह अन्दर गयी तो उसने वहॉ एक बुढ़िया को एक बैन्च पर बैठे देखा। वह इतनी बूढ़ी थी कि कमजोरी से उसका सिर हिलता रहता था।

राजकुमारी अपने नम्रता भरे शब्दों में उससे बोली — "मॉ जी नमस्ते। क्या मुझे एक गिलास पानी मिल सकता है?"

बुढ़िया बोली — "बेटी तुम्हारा दिल से स्वागत है। क्यों नहीं। पर तुम कौन हो जो भी मेरी इस नीची छत के नीचे आ कर मुझे इस तरीके से नमस्ते कर रही हो।"

राजकुमारी ने उसे बताया कि वह कौन थी और वह अपने दिल को तसल्ली देने के लिये बाहर निकली है ताकि वह अपने इतने बड़े दुख को कुछ भूल सके।

बुढ़िया ने पूछा "और तुम्हारा वह इतना बड़ा दुख क्या है?"

राजकुमारी बोली — "यह मेरी बदकिस्मती है कि मुझे इतना बड़ा दुख है। अब मैं कभी खुश नहीं रह सकती। मेरा प्यार खो गया है। भगवान ही जानता है कि मैं उसे फिर से कभी देख भी पाऊँगी या नहीं।"

तब उस बुढ़िया ने उसे बताया कि ऐसा कैसे हुआ और यह बता कर वह रो पड़ी। ऐसा लग रहा था कि कोई भी उसके लिये इतना दुखी हो सकता था। बाद में बुढ़िया ने कहा — "यह तुमने अच्छा किया कि तुमने अपना दुख मुझे बता दिया। मैं बहुत बड़ी हूँ और हो सकता है कि मैं तुम्हें कोई ठीक सलाह दे सकूँ।

जब तुम यहाँ से जाओगी तो तुमको जमीन से उगी हुई एक सफेद लिली दिखायी देगी। यह लिली दूसरी लिली की तरह नहीं है बल्कि इसमें बहुत सारे गुण हैं। तुम जल्दी से उसके पास चली जाओ और उसे तोड़ लो। अगर तुम ऐसा कर सकती हो तो फिर तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

क्योंकि उसके तोड़ते ही एक दूसरी लिली वहॉ प्रगट हो जायेगी और वह तुम्हें बतायेगी कि आगे तुम्हें क्या करना है।"

उसके बाद राजकुमारी ने उसे धन्यवाद दिया और वहॉ से चली आयी। वह बुढ़िया वहीं बैन्च पर ही बैठी रही और अपना सिर हिलाती रही। लेकिन रानी की बेटी सारा समय वहॉ दुखी होती हुई और बुड़बुड़ाती हुई झोंपड़ी के बाहर ही खड़ी रही क्योंकि राजा की बेटी को वहॉ काफी समय लग गया था।

जब राजा की बेटी झोंपड़ी से बाहर आयी तो जैसा कि आशा की जाती थी उसको अपनी सौतेली बहिन की बहुत गालियॉ सुननी पड़ीं। फिर भी उसने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वह तो बस यही सोचती रही कि वह फूल उसको कहॉ मिलेगा जो बुढ़िया ने उसे बताया था।

वे फिर जंगल में चल दीं। वे कुछ ही दूर चली थीं कि रास्ते में ही उसे एक सफेद लिली का फूल उगा हुआ दिखायी दिया। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गयी और तुरन्त ही उसको तोड़ने के लिये भागी पर उसी पल वह वहॉ से गायब हो गया और कुछ दूर आगे जा कर फिर से प्रगट हो गया।

राजा की बेटी को यह देख कर बहुत उत्सुकता हुई। इस उत्सुकता में उसने अपनी सौतेली बहिन की कोई भी बात नहीं सुनी और उस लिली के फूल के पीछे ही भागती रही।

फिर भी जब भी वह उसको पकड़ने के लिये दौड़ती तो वह वहॉ से गायब हो जाता और कुछ दूर जा कर फिर से दिखायी देने लग जाता।

इस तरह से कुछ देर तक होता रहा और इस तरह से राजकुमारी उस जंगल में दूर और दूर चलती चली गयी। पर लिली का फूल भी एक जगह नहीं रुक रहा था वह भी बार बार आगे चलता जा रहा था।

और उसकी एक खास बात यह भी थी कि वह जितना दूर जाता जा रहा था उतना ही ज़्यादा बड़ा और सुन्दर होता जा रहा था। आखिर राजकुमारी एक ऊॅची सी पहाड़ी के पास आ गयी। उसने उसकी चोटी की तरफ देखा तो वह फूल तो उसकी नंगी चट्टान की चोटी पर खड़ा था।

वह अभी भी अपनी सफेदी में चमक रहा था जैसे कोई चमकीला तारा चमकता है।

और कोई रास्ता न देख कर उसने उस पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया और उस फूल को लेने की उत्सुकता में उसने न तो किसी पत्थर पर कोई ध्यान दिया और ना ही उसकी चढ़ाई पर ध्यान दिया।

जब वह उस पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गयी तो उसने देखा कि वह फूल तो वहीं का वहीं खड़ा था कहीं और नहीं गया था जैसे पहले से चलता चला आ रहा था।

राजकुमारी वहॉ जा कर रुक गयी उसने उसे तोड़ लिया और अपने सीने में छिपा लिया। ऐसा कर के उसको इतनी ज़्यादा खुशी मिली कि कुछ पल के लिये तो वह अपनी सौतेली बहिनों और दुनियॉ भर को भूल गयी। वह उस फूल को बहुत देर तक देखती रही। उसकी तरफ देखते देखते उसका मन ही नहीं भर रहा था।

तभी उसको अचानक याद आया कि जब वह घर पहुॅचेगी तो उसकी सौतेली मॉ क्या कहेगी कि वह इतनी देर तक बाहर कहॉ थी। सो उसने किले की तरफ वापस जाने के लिये रास्ता ढूॅढने के लिये इधर उधर देखा तो देखा कि सूरज डूबने वाला है और उसकी केवल एक पतली सी किरन पहाड़ी की चोटी पर पड़ रही है।

उसके नीचे घाटी में चारों तरफ जंगल फैला पड़ा था। वह जंगल इतना घना और सायेदार था कि उसको अपने ऊपर विश्वास नहीं था कि वह वैसे जंगल में किले का रास्ता ढूॅढने में कामयाब हो जायेगी।

यह देख कर तो वह बहुत ही दुखी हो गयी। अब उसके दिमाग में वह रात वहीं पहाड़ी की चोटी पर काटने के अलावा और कोई तरकीब नहीं आ रही थी। वह वहीं पड़ी एक चट्टान पर बैठ गयी और अपना गाल अपने हाथ पर रख कर रोने लगी।

वह अपनी बेरहम सौतेली मॉ और सौतेली बहिनों और उनके कठोर शब्दों के बारे में सोचती रही जो उसको घर पहुॅचने पर सुनने को मिलेंगे।

उसने अपने पिता राजा के बारे में भी सोचा जो लड़ाई के लिये बहुत दूर गया हुआ था। उसने अपने प्यार के बारे में सोचा जिसे वह अब शायद कभी नहीं देख पायेगी। वह यह सब सोच कर इतनी दुखी हो गयी कि उसको यही पता नहीं चला कि वह रो भी रही थी।

जब वह इस तरह वहॉ बैठी बैठी सोच में डूबी हुई थी तो उसने किसी की मीठी धीमी आवाज सुनी — "गुड ईवनिंग ओ प्यारी सी लड़की। तुम यहॉ अकेली इतनी दुखी क्यों बैठी हो।"

यह सुनते ही वह जल्दी से उठ कर खड़ी हो गयी। उसे बहुत बुरा लगा कि किसी ने उसे रोते देख लिया था। जब उसने अपने चारों तरफ देखा तो देखा कि वहॉ तो कोई नहीं था सिवाय एक बहुत ही छोटे बूढ़े के जो उसकी तरफ देख कर अपना मुँह ऊपर नीचे हिला रहा था और बहुत ही नम्र दिखायी दे रहा था।

वह बोली — "हॉ यह ठीक है कि मेरी किस्मत में ही दुख लिखा है और लिखा है कि मैं कभी खुश न रहूँ। पहले मेरा प्यार मुझसे खो गया था और अब मैं इस जंगल में रास्ता भूल गयी हूँ। मुझे डर है कि अब जंगली जानवर मुझे खा जायेंगे।"

बूढ़ा बोला — "इसके लिये तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। अगर जैसा मैं तुमसे कहता हूँ तुम वैसा ही करोगी तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।" यह सुन कर राजकुमारी बहुत खुश हुई क्योंकि उसको लग रहा था जैसे सारी दुनियॉ ने उसे छोड़ दिया हो।

तब उस बूढे ने एक चकमक पत्थर[28] निकाला और थोड़ा सा लोहा निकाला और लड़की से कहा "पहले तुम आग जलाओ।" उसने वैसा ही किया जैसा कि उस बूढ़े ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने कुछ घास फूस और कुछ डंडियॉ इकट्ठी कीं और ऐसी आग जलायी जिसकी लपटें आसमान तक पहुॅच रही थीं। उसके बाद बूढ़े ने कहा "थोड़ी दूर और आगे चलो तो तुमको कोलतार का एक डिब्बा मिल जायेगा। उस डिब्बे को मेरे पास ले आओ।"

राजकुमारी वह डिब्बा वहॉ से उठा लायी तो बूढ़े ने कहा "अब इसको आग पर रख दो।" राजकुमारी ने वह भी कर दिया। जब कोलतार उबलने लगा तो उसने कहा "अब तुम अपना सफेद लिली का फूल इसमें डाल दो।"

राजकुमारी को उसका यह कहना कुछ अच्छा नहीं लगा सो उसने उससे बड़ी ईमानदारी से उससे विनती की कि वह उस फूल को उसके पास ही रहने दे।

बूढ़ा बोला — "क्या तुमने मेरा कहा मानने का वायदा नहीं किया था? तुम उसे इसमें फेंक दो नहीं तो तुम बहुत पछताओगी।"

राजा की बेटी ने आग की तरफ से अपनी ऑखें फेरीं और वह सुन्दर सफेद लिली का फूल उस उबलते हुए कोलतार में फेंक

[28] Translated for the word "Flint"

दिया। पर यह उसने अपनी मर्जी से नहीं किया था क्योंकि वह उस फूल को बहुत पसन्द करने लगी थी।

जैसे ही उसने यह किया कि उसने जंगल से आती एक बहुत ज़ोर की आवाज सुनी जैसे कोई जंगली जानवर दहाड़ा हो। वह दहाड़ और पास आती गयी जिससे सारा जंगल कॉप रहा था। उसकी गुर्राहट से सारी पहाड़ी गूँज रही थी।

आखीर में जंगल के पेड़ों के टूटने की आवाज सुनायी देनी शुरू हुई। फिर झाड़ियों के इधर उधर फेंकने की आवाज आयी। उसके बाद राजकुमारी ने देखा कि एक भयानक भेड़िया जंगल के पेड़ों के बीच से हो कर उसी की तरफ भागा चला आ रहा है।

वह उसको देख कर बहुत डर गयी और तुरन्त ही भाग जाती अगर वह भाग सकती तो। कि उस बूढ़े ने उससे कहा — "यह डिब्बा उठाओ और जल्दी से पहाड़ी के उस किनारे की तरफ भाग जाओ। और जैसे ही वह भेड़िया तुम्हारे पास आये यह डिब्बा उसके ऊपर पलट देना।"

राजकुमारी इतनी डरी हुई थी कि उसको यही पता नहीं था कि वह क्या कर रही है फिर भी उसने वही किया जो उस बूढ़े ने उससे करने के लिये कहा था। उसने डिब्बा उठाया और पहाड़ी के किनारे की तरफ भागी। और जैसे ही भेड़िया पहाड़ी के ऊपर आया उसने वह डिब्बा उसके ऊपर उॅडेल दिया।

उसी समय एक अजीब सी घटना घटी। जैसे ही उसने डिब्बे को उसके ऊपर पलटा तो भेड़िये ने अपना भूरा कोट उतार कर फेंक दिया और उस भयंकर जंगली जानवर की जगह अब एक बहुत सुन्दर आदमी खड़ा हुआ था जो पहाड़ी के ऊपर की तरफ देख रहा था।

जब राजकुमारी को होश आया तो उसने उसकी तरफ देखा तो देखा कि वह तो उसका प्यार खड़ा था जिसको एक वीयरवुल्फ़ में बदल दिया गया था।

अब यह तो सोचना बहुत आसान है कि राजकुमारी को उसे देख कर कैसा लग रहा होगा। वह तो बस इतनी खुश थी कि वह उससे लिपटने के लिये दौड़ पड़ी। न तो उससे कोई सवाल ही पूछ सकी और ना ही उसके किसी सवाल का जवाब दे सकी।

उधर राजकुमार भी जल्दी से उसकी तरफ दौड़ा और उसको गले लगा लिया। उसने उसको इस शाप से आजाद कराने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। वह उस छोटे बूढ़े को भी नहीं भूला। उसने उसको बहुत तरीके से उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दिया।

उसके बाद वे दोनों वहीं पहाड़ी की चोटी पर एक जगह बैठ गये और बहुत देर तक बातें करते रहे। राजकुमार ने उसे बताया कि कैसे उसको वीयरवुल्फ़ बनाया गया और कैसे वह उस शक्ल में जंगल में इधर उधर भागता रहा। राजकुमारी ने भी उसको अपने

दुख बताये और बताये कि उसके जाने के बाद वह कितना रोयी थी।

इस तरह वह सारी रात उन्होंने वहीं बिता दी। उनको यही पता ही नहीं चला कि कब तारे डूबने लगे और कब इतना उजाला हो गया कि वे अब रास्ता देख सकते थे।

जब सूरज निकल आया तो उनको वहॉ से किले का रास्ता साफ साफ दिखायी देने लगा क्योंकि उस पहाड़ी के चोटी से शहर और उसके चारों तरफ का सब कुछ दिखायी दे रहा था।

तब उस बूढ़े ने लड़की से पूछा — "ओ लड़की। घूम कर देखो क्या तुमको आस पास में कुछ दिखायी दे रहा है?"

राजकुमारी बोली — "हॉ मुझे एक घुड़सवार फेन उगलते हुए घोड़े पर सवार दिखायी दे रहा है। वह बहुत तेज़ भागा हुआ चला आ रहा है।"

बूढ़ा बोला — "यह तुम्हारे पिता राजा का भेजा हुआ दूत है जो आगे आगे चला आ रहा है। उसके पीछे पीछे राजा अपनी सारी फौज ले कर चला आ रहा है।"

इस बात ने तो राजकुमारी को बहुत ही खुश कर दिया। वह तुरन्त ही अपने पिता से मिलने के लिये पहाड़ी से उतरने वाली थी पर बूढ़े ने उसे ऐसा करने से रोक लिया — "अभी थोड़ा इन्तजार करो। अभी जल्दी है। हमको यह देखने दो कि यह सब क्या है।"

समय गुजर रहा था। सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था। उसकी किरनें किले पर सीधी पड़ कर उसे चमका रही थीं।

बूढ़े ने फिर से लड़की से कहा — "घूमो और देखो अब तुम्हें नीचे क्या दिखायी दे रहा है।"

राजकुमारी बोली — "मैं अब देख रही हूँ कि मेरे पिता के किले से बहुत सारे लोग निकल रहे हैं। उनमें से कुछ लोग सड़क की तरफ जा रहे हैं और कुछ जंगल की तरफ आ रहे हैं।"

बूढ़े ने कहा — "ये लोग तुम्हारी सौतेली माँ के भेजे हुए लोग हैं। उसने कुछ को राजा की अगवानी करने के लिये भेजे हैं जबकि दूसरों को जंगल में तुम्हें ढूँढने के लिये भेजे हैं।"

यह सुन कर राजकुमारी तो बहुत बेचैन हो गयी और उसने अपनी माँ के नौकरों के पास जाना चाहा पर बूढ़े ने उसे फिर से रोक लिया — "अभी ज़रा रुको। देखते हैं कि आगे क्या होता है।"

कुछ और समय निकल गया। लड़की बार बार नीचे सड़क की तरफ देखती रही ताकि वह अपने पिता की एक झलक देख सके। तब उस बूढ़े ने पूछा — "अब तुम वहाँ क्या देखती हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं देख रही हूँ कि मेरे पिता के किले में कुछ हलचल मची हुई है। वे लोग उसको काले कपड़े में लिपटा कर टाँग रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "वे तुम्हारी सौतेली माँ और उसके आदमी हैं जो तुम्हारे पिता को को यह विश्वास दिलायेंगे कि तुम मर चुकी हो।"

यह सुन कर राजा की बेटी को बहुत गुस्सा आ गया। उसने अपने दिल के अन्दर से उस बूढ़े से विनती की कि वह उसको अब जाने दे ताकि वह अपने पिता को इस गहरे दुख से बचा सके पर बूढ़े ने उसको फिर से यह कह कर मना कर दिया कि अभी भी जल्दी है अभी उसको कुछ और इन्तजार करना चाहिये और देखना चाहिये कि आगे क्या होता है।

फिर कुछ समय निकल गया। सूरज ऊपर आसमान में बहुत तेज़ चमक रहा था। मैदानों में और जंगल में गर्म हवा बहने लगी थी। राजकुमारी और नौजवान बूढ़े के साथ अभी भी वहीं पहाड़ी की चोटी पर बैठे हुए थे जहॉ हमने उन्हें बैठे हुए छोड़ा था।

तभी उनको दूर क्षितिज पर एक बादल उठता हुआ दिखायी दिया। वह बादल धीरे धीरे बढ़ता गया बढ़ता गया और सड़क के पास आता चला गया। जैसे जैसे वह बादल पास आता जा रहा था

उनके हथियार उनके ऊपर नीचे हिलते हैल्मैट और राजा के झंडे साफ दिखायी देते जा रहे थे। तलवारों के लड़ने की आवाजें भी आने लगी थीं। बाद में राजा के झंडे भी पहचान में आने लगे।

यह सोचना तो मुश्किल नहीं है कि राजा की बेटी उस सबको देख कर कितनी खुश हुई होगी और फिर कैसे उसने उस बूढ़े से अपने पिता से मिलने की इजाज़त मॉगी होगी। पर बूढ़े ने उसे फिर से उसे अपने पिता से मिलने से रोक लिया।

बूढ़े ने पूछा — "ओ सुन्दर लड़की। पीछे घूम कर देखो कि तुमको अपने किले में क्या दिखायी देता है।"

राजकुमारी बोली — "मैं देख रही हूँ कि मेरी सौतेली मॉ और मेरी सौतेली बहिनें किले से बाहर निकल रही हैं। वे दुख वाले कपड़े पहने हुए हैं और उन्होंने सफेद रूमाल अपने चेहरे पर लगाया हुआ है और वे बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही हैं।"

बूढ़ा बोला — "अभी वे इस तरह तुम्हारी मौत का बहाना ले कर दुखी होने का बहाना कर रही हैं। इसलिये तुम अभी रुक जाओ क्योंकि हमने अभी पूरी तरह देखा नहीं है कि क्या क्या होने वाला है।"

कुछ देर बाद बूढ़े ने फिर पूछा — "ओ सुन्दर लड़की। अब पीछे घूमो और देख कर बताओ कि नीचे तुम्हें क्या दिखायी दे रहा है।"

राजकुमारी बोली — "मैं देख रही हूँ कि कुछ लोग एक काले रंग का ताबूत ला रहे हैं। मेरे पिता उसको खुलवा रहे हैं। रानी और उसकी दोनों बेटियॉ अपने घुटनों पर बैठी हैं और मेरे पिता अपनी तलवार दिखा कर उनको धमका रहे हैं।"

इस पर बूढ़े ने कहा — "राजा तुम्हारा शरीर देखना चाहते थे सो तुम्हारी नीच सौतेली मॉ को सच स्वीकार करना पड़ा।"

जब राजकुमारी ने यह सुना तो बड़े दीनता से कहा — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दीजिये ताकि मैं अपने पिता को इस दुख में कुछ तसल्ली दे सकूँ।"

पर बूढ़े ने उसको जाने के लिये फिर से मना किया — "मेरी बात मान लो और अभी रुक जाओ। देखते हैं कि आगे क्या होता है अभी हमने सब कुछ देखा नहीं है।"

समय फिर गुजरता रहा। राजकुमारी राजकुमार और बूढ़ा तीनों वहीं पहाड़ी की चोटी पर ही बैठे रहे। कुछ देर बाद बूढ़ा फिर बोला — "लड़की घूम कर देखो कि अब तुम नीचे क्या देखती हो।"

लड़की बोली — "मैं देख रही हूँ कि मेरे पिता मेरी सौतेली माँ और सौतेली बहिनों के साथ इधर ही चले आ रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "अब वे तुम्हें ढूँढने निकले हैं। अब तुम नीचे जाओ और भेड़िये की खाल ऊपर ले आओ।"

राजा की बेटी ने वैसा ही किया जैसा बूढ़े ने उससे करने के लिये कहा था। बूढ़ा आगे बोला — "अब तुम पहाड़ी के किनारे पर खड़े हो जाओ।"

राजकुमारी ने फिर वैसा ही किया तो उसने देखा कि रानी और उसकी बेटियाँ उसी की तरफ चली आ रही हैं और आ कर पहाड़ी के नीचे खड़ी हो गयी हैं। बूढ़ा बोला "अब इस खाल को नीचे फेंक दो।"

राजकुमारी ने उसका कहा मान कर वह खाल नीचे फेंक दी। वह खाल नीच रानी और उसकी दोनों बेटियों के ठीक ऊपर पड़ी। और तभी एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी जैसे ही उस खाल ने उन तीनों को छुआ उन तीनों की शक्ल बदल गयी।

अब वे तीनों ही भयानक वीयरवुल्फ़ बन गयी थीं। वीयरवुल्फ़ बनते ही वे तीनों भयानक तरीके से आवाज करते हुए जंगल में भाग गयीं।

कुछ ही देर में राजा अपनी फौज के साथ वहॉ आ गया। जब उसने पहाड़ी के ऊपर की तरफ देखा तो वह अपनी बेटी को वहीं से पहचान गया। पहले तो उसको अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वहॉ उसकी बेटी खड़ी थी। वह तो बस यह सोच कर बिना हिले डुले ही खड़ा रह गया कि वह सच देख रहा था या फिर कोई सपना।

तब बूढ़े ने कहा — "जाओ ओ सुन्दर लड़की नीचे जाओ और अपने पिता के पास जा कर उनका दुख दूर करो।"

लड़की को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने राजकुमार का हाथ पकड़ा और तुरन्त ही पहाड़ी के नीचे की तरफ भाग ली। जब वे लोग नीचे आये तो राजकुमारी आगे आगे थी। वह भाग कर अपने पिता के गले लग गयी और खुशी से रो पड़ी। राजकुमार भी खुशी से रो पड़ा। राजा खुद भी रो पड़ा।

उन सबको इस तरह से खुशी से रोते देख कर और लोग भी बहुत खुश हुए। सब तरफ लोग बहुत खुश थे। राजकुमारी ने तब अपनी सौतेली मॉ और बहिनों की नीचता बतायी।

राजकुमार के बारे में भी बताया कि उनकी वजह से उस बेचारे को भी कितना परेशान होना पड़ा। फिर उसने उन्हें अपने बारे में भी बताया कि कैसे एक बूढ़े और बुढ़िया की सहायता से वह उसको ढूँढ सकी।

पर जब राजा उस बूढ़े को धन्यवाद देने के लिये घूमा तो वह तो वहॉ से गायब ही हो चुका था। उस दिन के बाद से न तो किसी ने उसे देखा और न ही कोई यह बता सका कि वह कहॉ गया।

राजा अपने बच्चों और फौज के साथ किले लौट आया। वहॉ आ कर उसने एक बहुत शानदार दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने अपने राज्य के सब बड़े और कुलीन लोगों को बुलाया। तभी उन सबके सामने उसने अपनी बेटी राजकुमार को दे दी। दोनों की शादी बहुत धूमधाम से बाजे गाजे के साथ हुई। यह उत्सव कई दिनों तक चला।

मैं भी वहीं था और जब मैं अपने घोड़े पर सवार हो कर जंगल से गुजर रहा था तो मुझे एक भेड़िया मिला जिसके साथ दो बच्चे भेड़िये भी थे। उन्होंने गुस्से से मुझे अपने दॉत दिखाये। मुझे किसी ने बताया कि वे राजकुमारी की सौतेली मॉ और उसकी दोनों सौतेली बहिनें थे।

8 पहला बेटा पहले शादी[29]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक तीन साल का बेटा था। एक बार उसको एक दुश्मन राजा से लड़ने के लिये जाना पड़ा। पर अपनी जीत के बाद जब उसके जहाज़ वापस लौट रहे थे तो एक बहुत ज़ोर का तूफान आ गया और उसके जहाज़ के सारे लोग करीब करीब डूबने वाले हो गये।

तब राजा ने कसम खायी कि वह समुद्र की देवी को उस नर जीव की बलि चढ़ायेगा जो जमीन पर पहुॅचने पर उसकी राजधानी पहुॅचने पर उससे सबसे पहले मिलने आयेगा। उसकी इस कसम खाने के बाद राजा के सारे लोग सही सलामत किनारे पहुॅच गये।

लेकिन राजा का पॉच साल का बेटा जिसने अपने पिता को दो साल से नहीं देखा था और जो अपने पिता की जीत की खुशी में छूटी हुई तोपों की तेज़ आवाज सुन कर बहुत खुश था अपने नौकरों से ऑख बचा कर चुपचाप खिसक गया और समुद्र के किनारे की तरफ भाग गया।

और जब राजा ने धरती पर कदम रखा तो वही पहला नर जीव था जो खुशी से रोता हुआ राजा से जा कर लिपट गया। राजा उसको देख कर खुश तो बहुत हुआ पर साथ में समुद्र की रानी को

[29] First Born First Wed – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_12.html

बलि चढ़ाने की बात सोच कर रो पड़ा। पर फिर उसने सोचा कि राजकुमार तो केवल बच्चा ही था इसलिये वह दूसरे किसी आदमी की बलि चढ़ा देगा।

पर उसके बाद कोई भी समुद्र की यात्रा सुरक्षित रूप से नहीं कर सका। अब राजा की जनता में कानाफूसी होने लगी। उनका कहना था कि क्योंकि राजा ने समुद्र की रानी से जो अपनी कसम ली थी उसे नहीं निभाया इसी लिये ऐसा हो रहा था।

राजा और रानी भी राजकुमार को अब अकेला नहीं छोड़ते थे। उसके साथ बहुत सारे लोग लगे रहते थे। हालॉकि जहाज़ में जाने की उसकी बहुत इच्छा रहती थी पर जहाज़ में तो अब उसको घुसने ही नहीं दिया जाता था।

कुछ साल बाद वे सब समुद्र की रानी को भूल गये। जब राजकुमार दस साल का हुआ तो उसका एक छोटा भाई आया। कुछ ही दिनों में बड़ा राजकुमार अपने टीचर और कई दूसरे कुलीन लोगों के साथ इधर उधर घूमने लगा।

एक दिन गर्मी के मौसम में जब मौसम बहुत साफ था जब वह घूमते घूमते अपने शाही बागीचे के आखीर के किनारे तक आया जो समुद्र के किनारे के पास ही था कि अचानक बहुत ज़ोर का बादल छा गया। और जितना अचानक वह आया था उतना अचानक ही वह गायब भी हो गया।

लेकिन जब वह गायब हुआ तो राजकुमार भी वहॉ से गायब हो गया था। वह कहीं भी दिखायी नहीं दे रहा था। बाद में भी वह वापस नहीं लौटा। इससे राजा रानी और जनता सभी बहुत दुखी हुए।

इस बीच छोटा राजकुमार जो अब राजगद्दी का अकेला वारिस था बड़ा होता रहा। जब वह सोलह साल का हुआ तो राजा ने सोचा कि अब उसकी शादी कर दी जाये।

अब क्योंकि राजा और रानी अपने मरने से पहले उसकी शादी एक ऐसे ताकतवर राजा की बेटी से करने की सोच रहे थे जिसके वे आधीन थे। यह ध्यान में रखते हुए राजा ने चिट्ठियॉ और अपने दूत दूर देशों में भेजे।

जब यह सब तय हो रहा था तो ऐसा कहा जाने लगा कि समुद्र का किनारा कुछ डरावना हो गया। बहुत सारे लोगों ने वहॉ रोने की आवाजें सुनीं। जो कोई शाम को वहॉ गया तो वह बीमार हो गया। आखिर लोगों ने वहॉ रात के ग्यारह बजे के बाद जाना बन्द कर दिया क्योंकि रात में वहॉ समुद्र से रोने चिल्लाने की आवाज आती थी – "पहला बेटा पहले शादी"।

फिर जब भी कभी कोई उसके पास तक गया तो वह बस अपनी जान हथेली पर रख कर ही गया।

आखिर ये शिकायतें राजा के पास पहुॅचीं। उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और यह तय पाया गया कि इस बारे में

किसी अक्लमन्द स्त्री से सलाह लेनी चाहिये जिसने पहले ही बहुत सारी अजीबोगरीब घटनाओं की भविष्यवाणी की हो और जो वैसे ही हुई हों जैसा कि उसने बताया हो कि होंगीं।

जब वह अक्लमन्द स्त्री राजा के पास लायी गयी तो उसने बताया कि कि यह आवाजें लगाने वाला वह राजकुमार था जो समुद्र में ले जाया गया था। अब अगर वे उसके लिये कोई नौजवान कुलीन सुन्दर सी दुलहिन ढूँढ लेंगे जो पन्द्रह साल से कम की न हो और सत्रह साल से बड़ी न हो तो ये आवाजें आनी बन्द हो जायेंगीं।

अब यह तो एक बड़ी उलझन थी क्योंकि कोई भी अपनी बेटी समुद्र के राजा को देने के लिये तैयार नहीं था। फिर भी जब रोने चिल्लाने में कोई कमी नहीं हुई तो उस अक्लमन्द स्त्री ने कहा कि पहले समुद्र के किनारे एक छोटा सा घर बनवाना ठीक रहेगा तब शायद ये परेशानियॉ दूर हो जायें।

उसने यह भी कहा कि जब वह मकान बन रहा होगा तो किसी भी हालत में कोई भी चीज़ उनको नहीं डरायेगी।

सो शुरू शुरू में चार आदमी काम पर लगाये गये। उन्होंने वहॉ पर जगह तैयार की फिर पत्थर की नींव रखी और फिर बाद में एक छोटा सा घर बनाया जिसमें केवल दो बहुत सुन्दर कमरे थे, एक के पीछे एक और जिनका फर्श बहुत सुन्दर था।

घर बड़ी सावधानी से बनाया गया था। शाही घर बनाने वाले ने खुद यह घर अपनी निगरानी खड़े रह कर बनवाया था ताकि हर चीज़ ठीक और सही हो।

जब यह मकान बन रहा था तो कोई भी अनजानी आवाज सुनायी नहीं दी और हर आदमी समुद्र के किनारे शान्ति से आता जाता रहा।

इसी लिये काम करने वालों को कोई जल्दी भी नहीं थी पर उन दिनों में कोई भी आदमी एक दिन के लिये भी वहॉ से गैरहाजिर भी नहीं रह सका क्योंकि अगर किसी ने रहने की कोशिश भी की तो वे आवाजें फिर से वहॉ आनी शुरू हो गयीं जिन्हें कोई भी वहॉ सुन सकता था "पहला बेटा पहले शादी"।

जब वह मकान बन कर तैयार हो गया तो राज्य के सबसे अच्छे बढ़ई बुलवाये गये और उन्होंने उसमें काम करना शुरू कर दिया। फिर पेन्ट करने वाले आये और कुछ और कलाकारी करने वाले आये।

आखीर में उसको सजाया गया क्योंकि जब भी कभी एक दिन के लिये भी काम रोका गया तो फिर से आवाजें आनी शुरू हो गयीं। दोनों कमरे बहुत अच्छी तरह से सजाये गये। बैठने वाले कमरे में एक बहुत बड़ा शीशा लगवाया गया।

उस अक्लमन्द स्त्री के कहने के अनुसार उसको इस तरीके से लगवाया गया कि सोने वाले कमरे में अगर कोई लेटा हो तो वहॉ के

बिस्तर से चाहे वह दीवार की तरफ ही मुँह कर के ही क्यों न लेटा हो उसको बैठने वाले कमरे में आने वाला आदमी उसकी देहरी पर से ही नजर आ जायेगा क्योंकि दोनों कमरों के बीच का दरवाजा हमेशा ही खुला रहने वाला था।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो उस मकान को शाही तरीके से सजा दिया गया तो "पहला बेटा पहले शादी" की आवाजें समुद्र के किनारे से फिर से सुनायी देने लगीं।

हालॉकि किसी की इच्छा नहीं थी पर फिर भी यही ठीक समझा गया कि उस अक्लमन्द स्त्री की सलाह मानी जाये। सो पन्द्रह से सत्रह साल तक के बीच की उम्र की तीन लड़कियॉ जो राज्य के बहुत कुलीन घरों से आती थीं महल ले आयी गयीं जैसे कि वे शाही खून वाली हों।

फिर उनको एक एक कर के उस समुद्र वाले घर में ले जाया जाये क्योंकि अगर उनमें से एक भी समुद्र के राजकुमार को पसन्द आ गयी तब समुद्र से जो शोर आदि आता था वह यकीनन खत्म हो जायेगा।

इस बीच छोटे राजकुमार की शादी की बात चलती रही। जिससे उसकी शादी होने को थी वह दुलहिन जल्दी ही वहॉ आने वाली थी। समुद्र के राजकुमार के लिये भी लड़कियॉ चुनी गयीं।

वे तीनों चुनी हुई लड़कियॉ और उनके माता पिता दोनों ही उनकी किस्मत पर बहुत दुखी थे। कोई उनको तसल्ली नहीं दे पा

रहा था। उनसे यह कहना भी कि उनकी तीनों बेटियों को राजकुमारी की तरह से ही रखा जायेगा उनको कोई तसल्ली नहीं दे पा रहा था। वे सोचती रहीं कि उनके साथ कुछ और बुरा होने वाला है।

पहली लड़की जिसको पहले दिन समुद्र के पास वाले महल में सोना था उन तीनों में सबसे बड़ी थी। जब उसने अक्लमन्द स्त्री से बात की और उससे उसकी सलाह मॉगी तो उसने उससे कहा कि वह अपने सुन्दर बिस्तर पर आराम से सोये पर अपना चेहरा दीवार की तरफ कर के लेटे।

किसी भी हालत में उत्सुकता से पीछे की तरफ न देखे कि देखूॅ कि पीछे क्या हो रहा है। क्योंकि उसका चेहरा दीवार की तरफ होगा तो वह केवल वही देखे जो उसको शीशे में दिखायी दे।

रात को दस बजे दुलहिन को बड़ी शान शौकत के साथ उस मकान में ले जाया गया। दरबार के लोग और उसके रिश्तेदारों ने उसको रो रो कर विदा किया। रात को ग्यारह बजे उन्होंने घर का ताला लगाया चाभी अपने साथ ली और उसे वहॉ अकेली छोड़ कर अपने किले चले गये।

वह अक्लमन्द स्त्री भी वहीं थी उसने सबको तसल्ली दी कि अगर लड़की नहीं बोली और उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा तो वह सुबह को ताजा और खुश खुश बाहर आयेगी।

बेचारी लड़की ने अपनी रात की प्रार्थना कही और फिर रोती रही जब तक कि उसको नींद नहीं आने लगी।

रात को बारह बजे घर का बाहर का दरवाजा अचानक खुला और फिर बैठक का दरवाजा खुला। वह चौंक गयी और डर गयी जब उसने दीवार पर लगे शीशे में देखा कि एक लम्बा तन्दुरुस्त नौजवान अन्दर घुसा। उसके कपड़ों से फर्श पर पानी टपक रहा था। वह ऐसे कॉप रहा था जैसे सरदी से ठिठुर रहा हो। उसके मुँह से आवाज निकल रही थी "उह उह"।

फिर वह बिस्तर के पीछे चला गया और वहॉ एक बहुत सुन्दर और बहुत ही बड़ा सेब रख दिया। उसने कपड़े में लिपटी हुई एक बोतल भी टॉग दी।

फिर वह बिस्तर के पास आया सोयी हुई लड़की के ऊपर झुका उसकी तरफ देखा फिर इधर उधर कुछ कदम चला "उह उह" करते हुए अपने गीले कपड़ों से पानी झटका। उसने जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतारे और बिस्तर की तरफ आ कर बिस्तर पर लेट गया और सो गया।

लड़की खुश थी क्योंकि वह सोच रही थी कि अब वह सो गया है। वह उस समय अक्लमन्द स्त्री की चेतावनी भी भूल गयी कि किसी भी हालत में उसको पलट कर नहीं देखना चाहिये।

उसकी उत्सुकता उसके ऊपर हावी हो गयी और उसने सोचा कि वह पीछे मुड़ कर यह देख लेती है कि वह सचमुच का आदमी है

या नहीं। उसने बहुत धीरे से करवट बदली ताकि वह कहीं उठ न जाये।

पर जैसे ही वह उस नौजवान को ठीक से देखने के लिये अपने बिस्तर पर चुपचाप से बैठी हुई कि उसने उसका दॉया हाथ पकड़ लिया और उसे काट कर बिस्तर के नीचे फेंक दिया।

वह फिर तुरन्त ही लेट गया और सो भी गया। जैसे ही सुबह दिन निकला उस नौजवान ने बिना बिस्तर की तरफ देखे अपने कपड़े पहने खिड़की में से बोतल और सेब उठाया और अपने पीछे दरवाजा बन्द कर के जल्दी से वहॉ से चला गया।

यह केवल सोचा ही जा सकता है कि वह बेचारी लड़की किस हाल से गुजर रही होगी। सुबह को जब उसकी दोस्त और रिश्तेदार उसको लेने के लिये वहॉ आये तो वहॉ उन्होंने उसको रोते हुए पाया और देखा कि उसका एक हाथ गायब था।

उसको किले में लाया गया और अक्लमन्द स्त्री को बुलवाया गया। उसने आते ही कहा कि अगर लड़की ने उत्सुकता से मुड़ कर न देखा होता तो यह सब न हुआ होता। उसका हाथ भी न काटा गया होता।

सब लोग उसके साथ वैसा ही बर्ताव कर रहे थे जैसे कि वह कोई राजकुमारी हो। पर वह तो अब उस छोटे घर के पास भी नहीं जा सकती थी।

बाकी बची दोनों लड़कियॉ यह घटना देख कर बहुत परेशान थीं। उनको लगा कि अब तो बस उनको मौत ही आने वाली है। उस अक्लमन्द स्त्री ने उनको बहुत तसल्ली दी हालॉकि वह जानती थी कि कैसे उनको तसल्ली देनी थी। सो दूसरी वाली ने वायदा किया कि वह किसी भी हालत में पीछे मुड़ कर नहीं देखेगी। फिर भी उसके साथ भी वही हुआ जो पहली लड़की के साथ हुआ था।

राजकुमार पानी टपकते कपड़े पहन कर रात को बारह बजे घर में आया अपने आपको झटका जिससे सारे फर्श पर पानी बिखर गया। "उह उह" करते हुए इधर उधर चला खिड़की में सेब और कपड़े में लिपटी बोतल रखी जल्दी से अपने कपड़े उतारे बिस्तर में लेटा और तुरन्त ही सो गया।

यह दूसरी लड़की भी अपनी उत्सुकता नहीं रोक पायी सो इसने भी बहुत धीरे से उठ कर अपने साथी की तरफ देखा तो उसने उसका भी दॉया हाथ पकड़ कर काट दिया और बिस्तर के नीचे फेंक दिया। वह फिर लेट गया और सो गया।

अगले दिन सुबह को उस लड़की के दोस्त और रिश्तेदार उसको लेने के लिये वहॉ आये तो उन्होंने भी उसको बिना दॉये हाथ के रोता हुआ पाया। उसको भी किले में ले जाया गया जहॉ उसका भी पहली लड़की की तरह बहुत ही मामूली स्वागत हुआ।

अक्लमन्द स्त्री ने कहा कि इस लड़की ने भी जरूर ही मुड़ कर देखा होगा हालॉकि पहले तो उसने इस बात को मना ही कर दिया था कि उसने ऐसा नहीं किया था।

अब सबसे छोटी सबसे प्यारी और सबसे सुन्दर लड़की की बारी थी समुद्री मकान में जाने की। सो वह भी बहुत सारे रोते हुए लोगों के बीच समुद्री मकान में ले जायी गयी। अक्लमन्द स्त्री भी उसके साथ थी। उसने उससे बहुत मिन्नतें कीं कि वह किसी भी हाल में मुड़ कर न देखे क्योंकि इस जादू का और कोई तोड़ नहीं था।

लड़की ने कहा कि वह उसकी बात ध्यान रखेगी और साथ में यह भी कहा कि वह भगवान से प्रार्थना करेगी कि वह उसकी उत्सुकता को शान्त रखे।

जैसा पहले हुआ था वैसा ही उस दिन भी हुआ। जैसे ही रात के बारह बजे राजकुमार आया जिसके कपड़ों से पानी टपक रहा था। अपने को हिला डुला कर "उह उह" की आवाज के साथ उसने पानी झटका सेब और कपड़े में लिपटी बोतल खिड़की में रखी।

फिर वह सोने के कमरे में गया कुछ देर इधर उधर घूमा अपने कपड़े उतारे और पलंग पर सो गया।

वह लड़की बेचारी डर के मारे आधी मरी सी हो रही थी। वह भगवान से प्रार्थना करती रही कि वह उसकी उत्सुकता को शान्त रखे। आखिर प्रार्थना करते करते वह पता नहीं कब सो गयी।

उसकी ऑख तब तक नहीं खुली जब तक कि राजकुमार ने उठ कर कपड़े नहीं पहन लिये। वह फिर बिस्तर तक आया उसने नीचा मुँह कर के देखा फिर कमरे के दरवाजे से एक बार फिर पीछे देखा अपना सेब और बोतल उठायी और कमरे से बाहर चला गया।

सुबह को सारा दरबार लड़की के दोस्त और रिश्तेदार और अक्लमन्द स्त्री सब उसे किले ले जाने के लिये आये तो वह उनसे मिल कर खुशी से रो पड़ी। उसको वैसी ही खुशी से किले में ले जाया गया जैसे वह कुछ जीत कर आयी हो।

राजा रानी ने उसको गले लगाया और उसको वही इज़्ज़त दी जो वे लोग उस राजकुमारी को देते जो कुछ ही दिन में छोटे राजकुमार से शादी के लिये आने वाली थी।

अब उस लड़की को हर रात अपने उसी समुद्री मकान में सोना होता था। हर शाम राजकुमार अपने सेब और बोतल के साथ आता था और हर सुबह चला जाता था।

पर लड़की को ऐसा लगता था कि हर आने वाली शाम और सुबह राजकुमार उसको पहली रात से ज़्यादा देर देखता था जबकि वह वह बेचारी डरी डरी से दीवार की तरफ मुँह किये पड़ी रहती थी। उसकी उससे ज़्यादा देखने की हिम्मत ही नहीं होती जितना कि उसको उसका शीशा दिखाता। वह केवल उसका आना और जाना ही देख पाती।

जिन दो लड़कियों ने अपने हाथ खो दिये थे वे अब किले में भी नहीं रहती थीं उस तीसरी लड़की को जो इज़्ज़त मिल रही थी वे उससे भी बहुत जलती थीं। उन्होंने उसको धमकी दी कि अगर उसने उनके हाथ उन्हें फिर से नहीं दिलवाये तो वे उसे मार देंगीं।

यह सुन कर वह लड़की उस अक्लमन्द स्त्री के पास रोती हुई गयी कि वह क्या करे। अक्लमन्द स्त्री ने कहा कि जब राजकुमार उसके पास लेट जाये तो वह दीवार की तरफ अपना चेहरा किये हुए ही राजकुमार से कहे — "राजकुमार वे दोनों लड़कियॉ अपने हाथ मॉग रही हैं नहीं तो वे मुझे मार देंगीं।" उसको और कुछ कहना भी नहीं है और इसके अलावा उसे और कुछ बताना भी नहीं है।"

धड़कते दिल से वह लड़की उस शाम का इन्तजार करती रही। फिर वह तब तक इन्तजार करती रही जब तक राजकुमार आया। वह उसके बिस्तर पर काफी देर तक झुका रहा और एक लम्बी सॉस ली जल्दी से कपड़े उतारे और बिस्तर में लेट गया।

तब लड़की ने कॉपते हुए कहा — "अगर उन दोनों लड़कियों को उनके हाथ वापस नहीं दिये गये तो वे मुझे मार देंगीं।"

राजकुमार तुरन्त बोला — "तुम उनके हाथ उठा लो वे इस पलंग के नीचे पड़े हैं और बोतल ले लो जो खिड़की में लटक रही है। उस बोतल में से थोड़ा सा पानी ले कर उनकी बॉहों और हाथों पर डाल कर उनको आपस में जोड़ कर बॉध दो। तीन दिन बाद

उनकी पट्टी खोल दो तो वे आपस में जुड़ जायेंगे और ठीक हो जायेंगे।"

लड़की उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और जल्दी ही सो गयी। सुबह को राजकुमार रोज की तरह से उठा और उसके पैरों की तरफ कई बार गया। उसके पैरों की तरफ से उसने उसे काफी देर तक देखा पर लड़की की हिम्मत उसकी तरफ देखने की बिल्कुल भी नहीं हुई। बल्कि उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं। राजकुमार ने एक लम्बी आह भरी अपना सेब उठाया बोतल वहीं छोड़ी और वहॉ से चला गया।

सुबह को जब लड़की उठी तो उसने वैसा ही किया जैसा राजकुमार ने उससे करने के लिये कहा था। तीन दिन बाद जब उन दोनों के हाथों की पट्टी खोली गयी तो उनके हाथ साबुत और ठीक थे।

कुछ दिन बाद वह विदेशी राजकुमारी भी आ गयी। उसकी शादी छोटे राजकुमार जल्दी से जल्दी होने वाली थी पर वह समुद्री राजकुमार की पत्नी के बराबर सुन्दर नहीं थी। पर राजा रानी और दरबारी लोग दोनों की एक सी इज़्ज़त करते थे।

इस बात से पहली दोनों लड़कियॉ जलने लगीं तो उन्होंने फिर से समुद्री राजकुमार की होने वाली पत्नी को धमकाया कि अगर उसने उनको वह सेब नहीं चखाया जो राजकुमार रोज ले कर आया करता था तो वे उसको मार देंगी।

इस बारे में उस लड़की ने फिर से अक्लमन्द स्त्री की सलाह मॉगी क्योंकि उसमें उसका पूरा विश्वास था।

सो उस रात जब राजकुमार उसके पास आया तो उसने उससे कहा — "वे दोनों लड़कियॉ मुझे मार देंगी अगर उसने उनको उसका लाया सेब नहीं खिलाया तो।"

इस पर राजकुमार बोला — "सेब खिड़की में रखा है ले लेना। जब तुम बाहर जाओ तो उसको जमीन पर रख देना और फिर जहॉ जहॉ वह लुढ़कता जाये तुम उसके पीछे चली जाना। जब यह रुक जाये तो वहॉ से तुम्हें जितने सेब चाहिये तोड़ लेना और उसी रास्ते से लौट आना जिससे तुम गयी थीं।"

लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया और सो गयी। अगली सुबह राजकुमार को वह जगह छोड़ने में बहुत परेशानी हुई। वह बहुत खुश था और बेचैन था और अक्सर लम्बी लम्बी सॉसें ले रहा था। उसने लड़की को कई बार झुक कर देखा फिर वह बाहर वाले कमरे में गया वह लड़की को देखने के लिये एक बार फिर घूमा।

इस तरह से उसको कई बार देखने के बाद जब सूरज निकल आया तो वह जल्दी से कमरा बन्द कर के वहॉ से चला गया। लड़की जब सुबह उठी तो वह रो पड़ी क्योंकि वह राजकुमार को सचमुच में प्यार करने लगी थी।

उसने खिड़की में से सेब उठाया और घर के बाहर निकल कर उसे नीचे जमीन पर रख दिया। वहॉ उसने लुढ़कना शुरू कर दिया

और वह लड़की उसके पीछे पीछे चलने लगी। वह उसके पीछे बहुत दूर तक चली और एक ऐसी जगह आ पहुँची जो उसके लिये अनजान थी।

वहाँ वह एक बागीचे की ऊँची सी दीवार के पास आ गयी। उसके अन्दर के पेड़ों की शाखें जिसके बाहर तक लटकी हुई थीं। उन शाखों पर बहुत सारे फल लदे हुए थे। आखिर वह एक दरवाजे के पास आ गयी जो बहुत सारी सजावट की चीज़ों से सजा हुआ था।

जैसे ही वह सेब लुढ़कता हुआ उधर पहुँचा तो वह दरवाजा अपने आप ही खुल गया। सेब उसके अन्दर लुढ़कता चला गया और उसके पीछे पीछे चलती चली गयी वह लड़की। ऐसा सुन्दर बागीचा उसने पहले कभी कहीं नहीं देखा था।

सेब लुढ़कता हुआ कुछ छोटे छोटे पेड़ों की तरफ चल दिया जिन पर बहुत सारे सेब लटक रहे थे। वहाँ जा कर वह सेब रुक गया। लड़की ने उसमें से जितने सेब उसके सिल्क के ऐप्रन में आ सकते थे तोड़ लिये।

सेब तोड़ कर उसने घूम कर देखा कि वह किस रास्ते से आयी थी और उसका दरवाजा कहाँ था जिससे उसको वापस बाहर जाना था पर वह उस सुन्दर बागीचे की सुन्दरता को कुछ देर और देखती रह गयी। वह राजकुमार की कही बात को भूल गयी। उसने सेब को अपने पैर से छू दिया तो वह सेब फिर से लुढ़कने लगा।

अचानक बागीचे का दरवाजा एक बहुत तेज़ आवाज के साथ बन्द हो गया। यह देख कर लड़की डर गयी और जो कुछ उसने किया था उस पर उसे बहुत अफसोस हुआ। अब वह उस बागीचे से बाहर नहीं जा सकती थी सो वह फिर से उस सेब के पीछे पीछे जाने पर मजबूर हो गयी।

वह उस बागीचे में बहुत दूर तक लुढ़कता चला गया और जा कर एक छोटी सी अँगीठी[30] के पास जा कर रुक गया। उस अंगीठी के पास पानी से भरी दो केटली रखी हुई थीं – एक छोटी और एक बड़ी। उनमें से बड़ी केटली के नीचे एक बड़ी सी आग जल रही थी और छोटी केटली के नीचे एक छोटी सी आग जल रही थी।

जब सेब वहाँ जा कर रुका तो लड़की को पता ही नहीं था कि वह वहाँ पहुँच कर क्या करे। तब उसको ख्याल आया कि वह उस बड़ी आग में से थोड़ी सी आग निकाल कर छोटी आग में डाल दे। उसने ऐसा ही किया तो छोटी केटली का पानी बहुत जल्दी ही उबलने लगा और बड़ी केटली का पानी कम ज़ोर से उबलने लगा।

पर वह वहाँ रुक नहीं सकी और क्योंकि वह पहले ही राजकुमार की बात नहीं मान कर उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर चुकी थी सो उसने सोचा कि बस अब तो वह मर ही जायेगी। राजकुमार को भी वह अब नहीं पा पायेगी।

[30] Translated for the word “Fireplace”.

यह सोच कर उसने सेब को एक बार पैर और मारा। अबकी बार वह सेब बागीचे के बीच में बने घास के मैदान की तरफ चल दिया उस मैदान में दो बच्चे सोये हुए थे। कड़ी धूप उनके ऊपर सीधी पड़ रही थी।

लड़की को उन बच्चों पर दया आ गयी। उसने अपना ऐप्रन उन बच्चों को ओढ़ा दिया ताकि धूप से उनकी रक्षा हो सके।

अपने ऐप्रन में से सेब निकाल कर उसने केवल उतने ही सेब अपने पास रखे जितने उसकी छोटी सी टोकरी में आ सके।

वह वहॉ भी नहीं रुक सकती थी सो उसने उस सेब में एक बार फिर से पैर मारा। इस बार पैर मारने के बाद इससे पहले कि उसको पता चलता कि वह कहॉ जा रही थी वह समुद्र के किनारे खड़ी थी।

वहॉ एक सायेदार पेड़ के नीचे राजकुमार सोया हुआ था। उसके पास समुद्र की रानी बैठी हुई थी।

जब वह लड़की उनके पास पहुॅचे तो वे दोनों उठ गये। राजकुमार ने अपनी चमकती हुई ऑखों से उसकी तरफ चौंक कर देखा और तुरन्त ही समुद्र में कूद गया। उसके समुद्र में कूदते ही उसके ऊपर सफेद समुद्र फेन तैर गये।

इससे समुद्र की रानी बहुत गुस्सा थी। उसने लड़की को पकड़ लिया। लड़की ने सोचा बस अब तो उसकी ज़िन्दगी का आखिरी पल आ गया। उसने उससे विनती की कि उसको बहुत कठोर मौत

न दी जाये। समुद्र की रानी ने उसकी तरफ देखा और उससे पूछा कि उसको सेब के पेड़ से आगे आने की इजाज़त किसने दी।

लड़की ने कहा कि उसने राजकुमार की बात नहीं मानी थी पर इसमें भी उसका किसी को कोई नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था। इस पर समुद्र की रानी ने कहा कि वह उसके व्यवहार को देख कर ही उसकी सजा तय करेगी।

उसने सेब को एक धक्का मारा तो वह दरवाजे से होता हुआ सेब के पेड़ के पास जा कर रुक गया। समुद्र की रानी ने देखा कि कि सेब का पेड़ तो सुरक्षित था उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया गया था।

उसने उसको एक बार फिर धक्का मारा तो वह उसी अँगीठी के पास पहुँच गया जहाँ से वह लड़की आयी थी। समुद्र की रानी ने देखा कि वहाँ तो छोटी केटली का पानी बहुत ज़ोर से उबल रहा है और बड़ी केटली का पानी ठंडा हुआ जा रहा है तो वह बहुत गुस्सा हुई।

गुस्से में आ कर उसने लड़की की बाँह पकड़ ली और अपनी पूरी लम्बाई तक खड़ी हो गयी और उससे पूछा — "तूने यहाँ कुछ करने की हिम्मत कैसे की। तूने हिम्मत ही कैसे की कि तू मेरी केटली के नीचे से आग हटा कर अपनी केटली के नीचे रख दे।"

लड़की को यह पता ही नहीं था कि उसने इसमें कुछ गलती की है सो उसने कहा कि उसको नहीं मालूम कि ऐसा कैसे हुआ। इस

पर समुद्र की रानी बोली कि बड़ी केटली को नीचे की आग मेरे और समुद्र के राजकुमार के बीच का प्यार बताती है और छोटी केटली के नीचे की आग तेरे और राजकुमार के बीच का प्यार बताती है।

अब क्योंकि तूने मेरी केटली के नीचे की आग निकाल कर अपनी केटली के नीचे रख दी है तो राजकुमार अब तुझसे ज़्यादा प्यार करता है बजाय मेरे।

फिर वह ज़ोर से चिल्ला कर बोली — "देख ज़रा। मेरी केटली के पानी ने उबलना बन्द कर दिया है और तेरी केटली का पानी कितनी ज़ोर से उबल रहा है। पर मैं देखती हूँ कि तूने और क्या क्या नुकसान मेरे बागीचे में पहुँचाया है और फिर तेरी सजा तय करती हूँ।"

कह कर समुद्र की रानी ने फिर से एक बार सेब को अपने पैर से धक्का मारा तो वह लुढ़कता हुआ सोते हुए बच्चों के पास जा कर रुक गया। समुद्र की रानी ने उन्हें देख कर पूछा "यह तूने किया है?"

लड़की रोते हुए बोली — "जी हाँ। पर ऐसा करने में मेरा मतलब उनको किसी तरह का नुकसान पहुँचाने का नहीं था।

मैंने इन छोटे बच्चों को अपने ऐप्रन से इसलिये ढक दिया था ताकि वे उस कड़कती धूप में जलें नहीं और मैंने वे सेब जो मेरी टोकरी में आये नहीं उन्हें इनके पास छोड़ दिया था।"

समुद्र की रानी बोली — "तेरा यह काम और तेरी सच्चाई तुझे मुक्ति दिलायेगी। मैं देख रही हूँ कि तू बहुत ही दयालु है। ये बच्चे मेरे और राजकुमार के हैं पर क्योंकि अब वह तुझे मुझसे ज़्यादा प्यार करता है इसलिये अब मैं उसको तुझे देती हूँ।"

अब तू अपने किले को लौट जा और वहाँ जा कर वही कहना जो मैंने तुझसे कहा है "तेरी शादी मेरे राजकुमार के साथ तभी होगी जिस समय उसके छोटे भाई की शादी होगी। तेरे जवाहरात गहने शादी का जोड़ा और तेरी शादी वाली कुर्सी सब कुछ वैसी ही होनी चाहिये जैसी दूसरी राजकुमारी की होगी।"

उसी पल से जब पुजारी जी तुझे और राजकुमार को आशीर्वाद देंगे तभी से उसके ऊपर से मेरी ताकत खत्म हो जायेगी। लेकिन क्योंकि मैंने यह देख लिया है कि उसके अन्दर वे सब गुण हैं जो एक राजा में होने चाहिये इसलिये मैं चाहती हूँ कि उसको उसके पिता का वारिस बन जाना चाहिये क्योंकि वह अपने पिता का बड़ा बेटा है।

छोटा राजकुमार उस राज्य का राजा बन सकता है जो उसकी पत्नी उसके लिये ले कर आयेगी। यह तू उनसे मेरी तरफ से कह देना क्योंकि केवल इन्हीं शर्तों पर मैं राजकुमार को आजाद करूँगी।

और जब तू दुलहिन के रूप में सज जाये तो किसी को बताये बिना ही तू यहाँ मेरे पास आना ताकि मैं यह देख सकूँ कि उन लोगों

ने तुझे किस तरह सजाया है। और ले यह सेब ले यह तुझे बिना किसी को बताये रास्ता दिखायेगा।"

इसके बाद समुद्र की रानी ने उस सेब में एक ठोकर मारी और उस लड़की को वहीं छोड़ कर चली गयी। वह सेब बागीचे के बाहर किले की तरफ चल पड़ा। किले पहुँच कर लड़की ने डर और खुशी से भर कर राजा और रानी को समुद्र की रानी का सन्देश सुनाया और साथ में यह भी बताया कि वह किन शर्तों पर राजकुमार को आजाद करने वाली थी।

राजा ने खुशी से वह सब स्वीकार कर लिया जो समुद्र की रानी ने कहा था। तुरन्त ही दो शादियों की तैयारियॉ शुरू कर दी गयीं। दो दुलहिन वाली कुर्सियॉ बराबर बराबर रखी गयीं। दो शादी की पोशाकें बनवायी गयीं। गहनों के दो सैट बनवाये गये। सब चीज़ें दोनों दुलहिनों के लिये एक सी बनवायी गयीं।

जब लड़की को उसकी दुलहिन की पोशाक में सजा दिया गया तो उसने बहाना बनाया कि वह नीचे की मंजिल से कुछ भूल आयी है। सो वह अपने सेब के साथ नीचे गयी और उसको जमीन पर रख दिया। वह तुरन्त ही समुद्र के किनारे की तरफ लुढ़क गया।

वहॉ उसको समुद्र की रानी और राजकुमार उसका इन्तजार करते मिल गये। समुद्र की रानी बोली — "अच्छा हुआ कि तू आ गयी क्योंकि अगर ज़रा सा भी तूने मेरे कहे का उल्लंघन किया होता तो तेरे ऊपर बदकिस्मती का पहाड़ टूट पड़ा होता।

पर तू कैसी लगती है? क्या तू वैसी ही सजी हुई है जैसी कि वह दूसरी राजकुमारी सजी हुई है? वह तुझसे ज़्यादा अच्छी तरह से तो नहीं सजी हुई – कपड़ों में या गहनों में? उस राजकुमारी के पास तुझसे ज़्यादा अच्छे कपड़े और गहने तो नहीं हैं?"

लड़की ने हिचकते हुए जवाब दिया कि नहीं ऐसा नहीं है वह भी ठीक वैसी ही सजी हुई है जैसी दूसरी राजकुमारी सजी हुई है। यह सुन कर समुद्र की रानी ने उसकी शाही पोशाक फाड़ दी उसके सब गहने खोल दिये उसके बालों में से जवाहरात निकाल कर जमीन पर फेंक दिये

उन सबको जमीन पर फेंकते हुए चिल्लायी — "मेरे राजकुमार की दुलहिन क्या ऐसी लगनी चाहिये जैसी और दुलहिनें लगती हैं? क्योंकि मैंने उसे तुझे दे दिया है तो मैं ही तुझे दुलहिन की पोशाक भी दूँगी।"

कह कर उसने एक पेड़ के नीचे से कुछ घास उखाड़ी तो वहाँ कीमती पत्थरों से जड़ा हुआ एक सोने का मन्दिर प्रगट हो गया। उसमें से उसने शादी का एक जोड़ा निकाला जो उस लड़की के इतना फिट आया जैसे वह उसके नाप का ही बनाया गया हो।

वह जोड़ा इतना मँहगा था और कीमती पत्थरों की चमक से इतना चमक रहा था कि लड़की की आँखें तो उनकी रोशनी में चौंधियाने लगीं। उसका ताज भी रोशनी से खूब दमक रहा था।

समुद्र की रानी उसको इन कपड़ों और गहनों में सजा कर बोली — "अब तू किले वापस चली जा और उन्हें बताना कि मैंने जब राजकुमार से शादी की थी तो मैं कैसे सजी हुई थी। यह सब मैं तुझे और तेरे बच्चों को मुफ्त दे रही हूँ।

पर तू हमेशा राजकुमार से अच्छा व्यवहार करना ताकि वह तुझसे सन्तुष्ट रहे। ज़िन्दगी भर सबसे पहले उसी की खुशी के बारे में ही सोचना।"

लड़की ने इस बात का वायदा किया और समुद्र की रानी ने बड़े प्यार से रो कर उस लड़की को विदा किया।

जब वह लड़की किले में पहुँची तो सारे लोग उसकी पोशाक की सुन्दरता और कीमत देख कर ही हैरान रह गये। उसके मुकाबले में और राजकुमारियाँ तो कुछ भी नहीं लग रही थीं। सारे राज्य का खजाना भी वैसी पोशाक खरीदने के लिये बहुत कम था।

अब कोई उससे जलने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा था क्योंकि अभी तक उस राज्य में कोई भी राजकुमारी इतना दहेज ले कर नहीं आयी थी।

सब लोग शादी के लिये चर्च में गये। पादरी दुलहिनों की कुरसियों के सामने खड़ा हुआ। उनकी किताबें खुली हुई थीं। सब लोग उस राजकुमार का इन्तजार कर रहे थे जिसके लिये समुद्र की रानी ने उसको आजाद करने के लिये कहा था। पर उसको तो तब तक नहीं आना था जब तक पादरी आशीर्वाद नहीं बोलता।

सब लोग उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। फिर राजा ने अपने एक बहुत बड़े कुलीन आदमी से कहा कि उस राजकुमार की जगह वह दुलहिन की कुर्सी पर बैठे। वह बेचारा वहॉ जा कर बैठ गया।

पर जैसे ही पादरी ने अपनी प्रार्थना करनी शुरू की कि चर्च के दरवाजे के दोनों किवाड़ खुल गये और एक लम्बा मजबूत नौजवान अपनी चमकती ऑखें लिये वहॉ आ पहुॅचा। उसने शाही कपड़े पहन रखे थे और वह दुलहिन की कुर्सी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

उसने अपनी जगह पर बैठे हुए आदमी को इतनी ज़ोर से हटाया कि वह बेचारा गिरते गिरते बचा। और फिर खुद उस पर बैठते हुए बोला "यह मेरी जगह है। हॉ पादरी जी अब आप अपना आशीर्वाद पढ़िये।"

जब आशीर्वाद बोला जा रहा था तो राजकुमार चुप था। फिर बाद में उसने अपने माता पिता और दरबार को खुशी से नमस्ते की। सबके सामने अपनी पत्नी को गले लगाया। उसकी पत्नी को पहली बार उसको अच्छी तरह देखने का मौका मिला था।

उसके बाद वह राजकुमार दूसरे लोगों की तरह से मामूली आदमी हो गया। अपने पिता के मरने के बाद में वह राजा बन गया। वह एक बहुत बड़ा और मशहूर राजा साबित हुआ। उसके लोग उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी पत्नी भी उससे बहुत खुश थी।

वे लोग बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे और अब उनके बच्चे उनके राज्य पर राज कर रहे हैं।

9 सुनहरी रानी का पहाड़[31]

एक बार की बात है कि एक लड़का था जो अपने जानवर चराने के लिये जंगल ले जाया करता था। एक दिन वह जंगल में पड़े हुए एक खुले मैदान में बैठ कर अपना दोपहर का खाना खा रहा था कि उसने एक चूहा एक मोरपंखी की झाड़ी[32] में भागता हुआ देखा।

उसको कुछ उत्सुकता हुई तो वह उसको पकड़ने पहुॅचा। जैसे ही वह उसके ऊपर झुका तो वह तो नीचे चला गया और सो गया। सपने में उसने देखा कि वह तो सुनहरी रानी के पहाड़ पर रहने वाली राजकुमारी को ढूॅढने जा रहा है। पर उसको रास्ता नहीं मालूम है।

अगले दिन वह फिर अपने जानवर चराने ले गया। जब वह फिर से उसी मैदान में आया और फिर से उसने अपना खाना खाया तो फिर से उसने एक चूहा देखा। वह फिर से उस चूहे को ढूॅढने जा पहुॅचा।

जब वह उसको देखने के लिये झुका तो फिर से वह नीचे गिर पड़ा और सो गया। उसने फिर से सपने में देखा कि वह सुनहरी रानी के पहाड़ की तरफ वहॉ की राजकुमारी के पास जा रहा है।

---

[31] Mount of the Golden Queen – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_14.html

[32] Translated for the word "Juniper-bush". See its picture above.

पर उसको वहॉ पहुॅचने के लिये सत्तर पौंड लोहा और एक जोड़ी लोहे का जूता चाहिये।

वह जाग गया पर वह तो केवल एक सपना ही था। फिर भी उसने अपना मन बना लिया कि वह सुनहरी रानी के पहाड़ का पता खोज कर रहेगा। शाम होने पर वह अपने जानवरों के झुंड के साथ अपने घर चला गया।

तीसरे दिन जब वह अपने जानवर चराने के लिये फिर जंगल की तरफ चला तो वह जंगल के मैदान तक ही पहुॅच पाया था कि जल्दी हो उसको वह सपना फिर दिखायी दिया। उसको वह चूहा फिर दिखायी दिया वह फिर उसके पीछे भागा।

जब वह उसको ढूॅढ रहा था तो वह फिर सो गया और उसने फिर वही सपना देखा जैसा कि उसने पिछले दिनों देखा था। इस बार उसने सुनहरी रानी के पहाड़ वाली राजकुमारी को देखा। वह उसके पास आयी और उसने एक चिट्ठी और एक सोने का कंगन उसकी जेब में रख दिया।

जब वह नींद से जागा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो कुछ उसने देखा वह सपना नहीं था वह तो सच था। एक चिट्ठी और एक सोने का कंगन उसकी जेब में रखा हुआ था।

अब उसके पास जानवरों को चराने का कोई समय नहीं था। वह तुरन्त ही उनको हॉक कर घर ले गया।

फिर वह अपनी घुड़साल में गया वहॉ से एक घोड़ा निकाला उसको बेच कर सत्तर पौंड लोहा और एक जोड़ी लोहे का जूता खरीदा। उसने उस लोहे की कई पतवारें बनवायीं और अपने लोहे के जूते पहन लिये और चल दिया।

काफी दूर तक तो वह जमीन पर ही चलता रहा पर चलते चलते वह एक झील के पास आ गया। उसको उसे पार करना था। उसको अपने आगे पीछे सब तरफ पानी ही पानी दिखायी दे रहा था पानी के अलावा और कुछ नहीं। वह उस पानी में बड़ी आसानी से अपनी नाव चला रहा था। उसकी पतवारें एक के बाद एक टूटती गयीं।

आखिर वह जमीन पर पहुॅच गया जहॉ दूर दूर तक घास का मैदान पड़ा हुआ था पर पेड़ एक भी नहीं था। वह उस मैदान में चारों तरफ घूमता रहा आखिर उसे एक मिट्टी का टीला मिल गया जिसमें से धुॅआ उड़ रहा था।

जब उसने उसे और पास से देखा तो उसके अन्दर से एक स्त्री निकली जो नौ गज लम्बी थी। उसने उससे सुनहरी रानी के पहाड़ का रास्ता पूछा।

वह बोली — "वह तो मैं नहीं जानती तुम मेरी बहिन से जा कर पूछ लो जो मुझसे भी नौ गज ज़्यादा लम्बी है। वह भी मिट्टी के एक टीले में रहती है जिसे ढूॅढना कोई मुश्किल काम नहीं है।"

यह सुन कर उसने उसे वहीं छोड़ दिया और आगे बढ़ा।

फिर वह एक और मिट्टी के टीले के पास आया जो दिखने में पहले जैसा ही था। उसमें से भी धुँआ निकल रहा था। तुरन्त ही उसमें से एक स्त्री निकल कर आयी जो कुछ ज़रा ज़्यादा ही लम्बी थी। उसने उससे भी सुनहरी रानी के पहाड़ का पता पूछा।

उसने भी यही कहा कि वह उसका पता नहीं जानती पर शायद उसका भाई जानता हो। सो उसको उसके भाई से जा कर पूछना चाहिये। उसने कहा कि वह उससे भी नौ गज ज़्यादा लम्बा है और वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर रहता है।

सो वह वहाँ से चल कर एक और टीले के पास आया। उस टीले से भी धुँआ उठ रहा था। वहाँ आ कर उसने उस टीले को खटखटाया तो तुरन्त ही एक आदमी निकल कर आया जो वाकई में एक बड़े साइज़ का आदमी[33] था। उसकी ऊँचाई सत्ताईस गज थी।

उसने उससे भी सुनहरी रानी के पहाड़ के बारे में पूछा तो उसने एक सीटी निकाली और उसे धरती के सारे जानवरों को अपने पास बुलाने के लिये चारों तरफ को मुँह कर के बजाया। सीटी की आवाज सुन कर जंगल के सारे जानवर वहाँ आ कर इकट्ठा हो गये। उनमें सबसे आगे भालू था।

बड़े साइज़ के आदमी ने उस भालू से पूछा कि क्या उसको सुनहरी रानी के पहाड़ का अता पता मालूम है। भालू ने कहा कि नहीं वह नहीं जानता।

[33] Translated for the word “Giant”

अबकी बार उसने पानी में जितनी भी मछलियॉ थीं उन सारी मछलियों को अपने पास बुलाने के लिये सीटी बजायी। सारी मछलियॉ उसके पास तुरन्त ही आ गयीं। उसने उन सबसे पूछा कि क्या उनमें से कोई सुनहरी रानी का पहाड़ का अता पता जानता था। पर उन्होंने भी मना कर दिया कि वे नहीं जानतीं।

इसके बाद उसने आसमान की सारी चिड़ियों को बुलाने के लिये अपनी सीटी बजायी तो सारी चिड़ियें उसके पास आ कर इकट्ठा हो गयीं। उसने गरुड़ से पूछा कि क्या उसने सुनहरी रानी का पहाड़ देखा है।

गरुड़ बोला "हॉ मैंने देखा है।"

बड़े साइज़ वाला आदमी बोला — "तो इस लड़के को वहॉ ले जाओ। और देखो उससे ठीक से पेश आना।"

गरुड़ ने कहा कि वह उसको ठीक से ही ले जायेगा और उसको अपनी पीठ पर बिठा लिया। उसको ले कर वह हवा में उड़ चला – जंगलों और खेतों के ऊपर पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों में से हो कर। बहुत जल्दी ही वे समुद्र के ऊपर उड़ रहे थे। इस समय उन्हें आसमान और पानी के अलावा और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

तभी गरुड़ ने लड़के को पानी में उसके टखनों तक डुबोया और उससे पूछा "क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

नौजवान बोला — "नहीं।"

गरुड़ फिर थोड़ी देर उड़ा और उसने नौजवान को उसके घुटनों तक पानी में डुबोया और पूछा — "क्या तुम डर रहे हो?"

नौजवान बोला "हॉ। पर बड़े साइज़ के आदमी ने कहा था कि तुमको मेरे साथ ठीक से पेश आना है।"

गरुड़ ने उससे एक बार फिर पूछा — "क्या तुमको सचमुच में डर लग रहा है?"

नौजवान बोला — "हॉ।"

गरुड़ बोला — "तुम्हारा यह डर वैसा ही डर है जैसा कि मैंने तब महसूस किया था जब राजकुमारी ने तुम्हारी जेब में वह चिट्ठी और सोने का कंगन रखा था।"

और यह कहते कहते वे समुद्र के एक तरफ खड़े एक बहुत ही बड़े और ऊॅचे पहाड़ के पास पहुॅच गये जिसके एक तरफ लोहे का दरवाजा लगा हुआ था।

वहॉ जा कर उन्होंने वह दरवाजा खटखटाया तो एक नौकरानी ने दरवाजा खोला और उनके अन्दर ले गयी।

नौजवान तो वहीं रहा। वहॉ उसका बड़े अच्छे से स्वागत हुआ पर गरुड़ वहॉ से विदा ले कर अपने देश चल दिया। नौजवान ने कुछ पीने के लिये मॉगा तो उसको शीशे के एक गिलास में कुछ पीने को दिया गया। जब उसने वह पी लिया तो उसने उस गिलास में सोने का कंगन डाल कर उसे वापस कर दिया।

जब नौकरानी सोने का कंगन पड़ा हुआ गिलास वापस अपनी मालकिन के पास ले कर गयी जो सुनहरी रानी के पहाड़ की राजकुमारी थी तो उसने उस गिलास में सोने का एक कंगन पड़ा देखा तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह उसी का था।

उसने पूछा — "क्या यहॉ कोई आया है?"

और जब नौकरानी ने कहा कि "हॉ यहॉ कोई आया है।"

तो राजकुमारी ने उससे कहा कि वह उसको उसके सामने ले कर आये। जैसे ही नौजवान उसके कमरे में अन्दर घुसा तो उसने उससे पूछा कि क्या उसको चिट्ठी भी मिली या नहीं।

नौजवान ने अपनी चिट्ठी को अपनी जेब से निकाला जो उसको कितनी अजीब तरीके से मिली थी और राजकुमारी को दे दिया। राजकुमारी ने उसको पढ़ा और खुशी से चिल्ला पड़ी "अब मेरे ऊपर पड़ा जादू टूट गया।"

उसी समय वह पहाड़ एक बहुत ही सुन्दर किले में बदल गया। बहुत तरीके के जवाहरात कीमती चीज़ें सब तरह की आराम की चीज़ें नौकर चाकर आदि उसमें प्रगट हो गये।

यह कहानी यह तो नहीं बताती कि फिर उन दोनों की शादी हो गयी या नहीं पर हम मान लेते हैं कि इस कहानी के अन्त में भी ऐसा ही हुआ होगा क्योंकि सभी कहानियों के अन्त में ऐसा ही होता है।

नोट — यह कहानी पढ़ने में कुछ अधूरी सी लगती है। कई चीज़ें इसमें ठीक से समझायी नहीं गयी हैं।

10 राजकुमारी और सोने का पहाड़[34]

एक समय की बात है कि एक राजा था जिसको अपने शिकार को मारने की बजाय उसका पीछा करने में बहुत आनन्द आता था। वह कभी भी जंगल में जा कर अपने बाज़ और कुत्तों के साथ अपना कैम्प लगा लेता और फिर शिकार में उसको हमेशा ही कामयाबी मिलती।

मगर एक बार कुछ ऐसा हुआ कि उसको कोई शिकार नहीं मिला हालॉकि सुबह से वह हर दिशा में कोशिश कर चुका था। जब शाम होने लगी तो वह घर लौटने लगा तो उसको एक बौना या एक जंगली आदमी दिखायी दे गया। वह उसके आगे आगे दौड़ा जा रहा था।

राजा ने तुरन्त ही अपने घोड़े को एड़ लगायी और उस बौने का पीछा किया और उसको पकड़ लिया। इस अचानक पकड़े जाने से उसको बहुत आश्चर्य हुआ। वह एक ट्रौल जैसा छोटा और बदसूरत था और उसके बाल तिनकों की तरह खड़े हुए थे।

[34] The Princess and the Glass Mountain – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_16.html

पर राजा ने उससे हर तरीके से कुछ भी बात करनी चाही पर वह कुछ नहीं बोला, एक शब्द भी नहीं।

एक तो राजा को सारा दिन कोई शिकार नहीं मिला था तो वह वैसे ही बहुत दुखी था और जब इस बौने ने इसको कोई जवाब नहीं दिया तो राजा को बहुत गुस्सा आ गया।

उसने अपने आदमियों को उस जंगली आदमी को पकड़ने का हुक्म दिया और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा ताकि वह कहीं बच कर न भाग जाये। उसके बाद राजा घर आ गया।

राजा के उन आदमियों ने जो उसको पकड़ कर लाये थे राजा से कहा — "राजा साहब। आप इस आदमी को अपने दरबार में ही रख लें ताकि लोग इसको देख कर आपकी तारीफ कर सकें कि आप कितने ताकतवर आदमी हैं।

इसके अलावा आप ही उसके ऊपर पहरा रखें ताकि वह कहीं भाग न सके क्योंकि यह हमें बहुत ही चालाक और निर्दयी किस्म का आदमी लगता है।"

राजा ने जब यह सुना तो काफी देर तक तो वह बोला ही नहीं फिर बोला — "मैं ऐसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है। क्योंकि तब अगर यह भाग जायेगा तो कम से कम उसमें मेरी कोई गलती नहीं होगी। पर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जो कोई भी उसको भाग जाने देगा उसको मैं बिना किसी रहम के मार दूँगा फिर चाहे फिर वह मेरा अपना बेटा ही क्यों न हो।"

अगली सुबह जैसे ही राजा उठा तो उसको अपनी प्रतिज्ञा याद आयी। उसने तुरन्त ही लकड़ी और शहतीरें[35] मँगवायीं।

उस लकड़ी और शहतीरों से उसने किले के पास ही एक छोटा सा घर बनवाया। उसको कई तरह के ताले और चटखनियों से सुरक्षित किया ताकि उसको कोई तोड़ न सके। दीवार के बीच में एक छेद बनवा दिया ताकि उसमें से उसे खाना दिया जा सके।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो राजा उस बौने को उस मकान में ले गया वहाँ उसको रख कर घर आ गया। उस घर की चाभी उसके अपने पास थी। इस तरह वह बौना उस घर में दिन रात एक कैदी की तरह से रहने लगा।

बहुत सारे लोग उसको देखने के लिये पैदल या घोड़े पर चढ़ कर भी आते थे पर किसी ने उसे कभी कोई शिकायत करते नहीं सुना। शिकायत तो शिकायत किसी ने उसे एक शब्द बोलते हुए भी नहीं सुना।

कुछ समय तक इस तरह चलता रहा कि फिर देश में एक लड़ाई छिड़ गयी तो राजा को लड़ाई के मैदान में जाना पड़ा। जाते समय उसने अपनी रानी से कहा — "मेरी गैरहाजिरी में तुम मेरी जगह राजकाज सँभालना। मैं अपना देश और अपनी जनता तुम्हारी देखरेख में छोड़ कर जा रहा हूँ। फिर भी तुम मुझसे एक बात का

[35] Translated for the word "Beam" – wooden logs used to support the roof. See its picture above.

वायदा करो कि तुम वह करोगी। तुम उस जंगली आदमी की ठीक से देखभाल करोगी ताकि जब मैं यहाँ नहीं हूँ तो वह मेरे पीछे कहीं भाग न जाये।"

रानी ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी। राजा ने उसे उस घर की चाभी दे दी और अपनी बड़ी सी सेना ले कर समुद्र के रास्ते हो कर अपने जहाज़ दूसरे देश की तरफ खे दिये।

राजा और रानी के केवल एक ही बच्चा था – एक राजकुमार जो अभी उम्र में तो बहुत छोटा था पर होशियार बहुत था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि वह बाहर खेल रहा था कि खेलते खेलते वह उस जंगली आदमी के घर की तरफ निकल आया। वह सोने के एक सेब के साथ खेल रहा था। और फिर कुछ ऐसा हुआ कि उसका सोने का सेब उस मकान की खिड़की से हो कर उस मकान के अन्दर जा पड़ा।

जंगली आदमी तुरन्त ही वहाँ आया और उसने उसका सेब वापस उसको फेंक दिया। छोटे बच्चे को यह एक खेल जैसा लगा तो उसने वह सेब फिर से मकान के अन्दर फेंक दिया। जंगली आदमी ने भी वह सेब फिर से उसको वापस फेंक दिया।

यह खेल कुछ देर तक चलता रहा। सारा खेल खुशी खुशी चलता रहा कि उसका अन्त बुरा हो गया। एक बार जब राजकुमार ने वह सेब उस मकान के अन्दर फेंका तो उस आदमी ने उसको वह

वापस नहीं फेंका। वह सेब उसने रख लिया और वह उसको किसी तरह भी वापस न दे।

उससे कई बार विनती की गयी कई बार धमकी दी गयी कोई चीज़ काम नहीं कर रही थी तो राजकुमार ने रोना शुरू कर दिया।

उस समय उसने राजकुमार से कहा — "तुम्हारे पिता ने मुझे बन्दी बना कर मेरे साथ बुरा किया। अब तुम अपना यह सोने का सेब मुझसे कभी वापस नहीं ले पाओगे जब तक कि तुम मुझे इस घर में से बाहर नहीं निकालोगे।"

राजकुमार बोला — "मैं तुम्हें बाहर कैसे निकाल सकता हूँ। तुम मेरा सोने का सेब मुझे वापस कर दो। मेरा सोने का सेब मुझे दे दो।"

जंगली आदमी बोला — "अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ उसे तुम सुनो और तुम वही करना जो मैं तुमसे कहूँ। तुम अपनी माँ के पास जाओ और उससे कहना कि वह तुम्हारे बालों में कंघी करे। उस समय तुम उसकी कमर से इस घर की चाभी निकाल लेना। उस चाभी को ले कर यहाँ आ जाना और यहाँ आ कर इस घर का दरवाजा खोल देना।

इसके बाद तुम उसे फिर से वैसे ही वापस रख देना जैसे तुमने उसे ली थी। इस तरह इस बारे में कोई जान भी नहीं पायेगा।"

जब जंगली आदमी ने उसे यह बता दिया तो उसने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। वह अपनी माँ के पास गया और उससे

अपने सिर में कंघी करने के लिये कहा। जब वह कंघी कर रही थी तो उसने उसकी कमर से चाभी निकाल ली।

चाभी निकाल कर वह उस घर की तरफ भागा जिसमें वह जंगली आदमी बन्द था। वहॉ पहुँच कर उसने मकान का दरवाजा खोल दिया।

जब वे दोनों अलग हुए तो बौना बोला — "लो यह लो तुम अपना सोने का सेब लो जिसका मैंने तुम्हें वापस दे देने का वायदा किया था। मुझे आजाद करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। फिर कभी जब तुम्हें जरूरत पड़ेगी तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।"

और यह कह कर वह वहॉ से अपने रास्ते चला गया। राजकुमार अपना सोने का सेब ले कर अपने घर आ गया। चाभी उसने अपनी मॉ की कमर में वापस रख दी।

जब राजा के दरबारियों को यह पता चला कि जंगली आदमी जेल तोड़ कर भाग गया है। सारे दरबार में हलचल मच गयी। रानी ने उनको पहाड़ियों और खाइयों सबमें उसको ढूँढने के लिये अपने आदमी भेजे। पर वह तो चला गया था और फिर दिखायी ही नहीं दिया।

यह खोज कुछ दिन तक चलती रही। रानी रोज रोज दुखी होती रही क्योंकि उसको लग रहा था कि अब किसी भी दिन राजा घर वापस आते होंगे।

और जब राजा किनारे पर उतरे तो सबसे पहले उसने यही पूछा कि क्या उस जंगली आदमी की रक्षा ठीक से की गयी।

रानी को सारा मामला स्वीकर करना पड़ा कि वहॉ क्या हुआ था और सब कुछ बताना पड़ा। राजा यह सब सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। उसने कहा कि चाहे जो कोई भी क्यों न हो वह उसको सजा अवश्य ही देगा।

उसने अपने दरबार के सब लोगों से उसके बारे में पूछा पर किसी को उसके बारे कुछ पता नहीं था। अन्त में राजकुमार को भी बुलाया गया। राजकुमार ने राजा के सामने आ कर कहा — "मुझे मालूम है कि मेरे पिता मुझसे इस बात पर बहुत गुस्सा होंगे फिर भी मैं सच को नहीं छिपाऊॅगा। मैंने ही उस जंगली आदमी को भगाया है।"

यह सुन कर रानी का चेहरा तो सफेद पड़ गया। दूसरे लोग भी यह सुन कर परेशान हो गये क्योंकि ऐसा कोई नहीं था जो राजकुमार को प्यार न करता हो।

आखिर राजा बोला — "यह बात मेरे बारे में कोई भी कभी नहीं कहेगा कि मैंने जो प्रतिज्ञा की उसे पूरा नहीं किया चाहे वह मेरा अपना खून या मॉस ही क्यों न हो। इसलिये तुमको वही मौत मरना पड़ेगा जो ऐसे आदमी के लिये तय की गयी थी।"

इसके साथ ही उसने लोगों को हुक्म दिया कि वे राजकुमार को जंगल ले जायें और वहॉ ले जा कर उसे मार दें। उनको यह भी

कहा गया कि वह राजकुमार का दिल ला कर उसे दें जिससे उसे यह पता चल जाये कि उसके हुक्म का पालन कर दिया गया है।

लोग बेचारे खुले रूप से तो कुछ कह नहीं सकते थे पर दिल ही दिल में सब बहुत दुखी थे। सबने राजकुमार को माफ कर देने की बहुत विनती की पर राजा ने जो कह दिया था सो कह दिया था अब उसे वापस नहीं लिया जा सकता था।

उसके नौकर चाकर तो उसके हुक्म को टालने की हिम्मत ही नहीं कर सकते थे। सो उन्होंने राजकुमार को अपने बीच में लिया और जंगल की तरफ चल दिये। जब वे जंगल में काफी दूर तक चल लिये तो उन्होंने एक सूअर चराने वाला सूअर चराता हुआ दिखायी दिया।

तो उनमें से एक आदमी ने दूसरे से कहा — "मुझे यह ठीक नहीं लगता कि हम राजा के बेटे के ऊपर हाथ उठायें। क्यों न हम एक सूअर खरीद लें और उसका दिल ले जा कर राजा को दे दें। वे लोग यह विश्वास कर लेंगे कि वह राजकुमार का दिल है।"

राजा के दूसरे नौकरों ने सोचा कि यह आदमी तो अक्लमन्दी की बात कर रहा है सो उन्होंने राजकुमार को तो छोड़ दिया और उस सूअर चराने वाले से एक सूअर खरीदा उसे जंगल में ले जा कर मारा और उसका दिल ले कर किले चले गये।

राजकुमार से उन्होंने कहा कि वह वहॉ से कहीं चला जाये और फिर उधर कभी न लौटे। अब यह सोचना तो बहुत आसान है कि

जब उन्होंने यह कहा होगा कि "हमने राजकुमार को मार दिया है।" तो घर में कितना कोहराम मचा होगा।

राजा के बेटे ने वही किया जो राजा के नौकरों ने उससे करने के लिये कहा था। वह बहुत दूर दूर तक घूमता रहा। उसके पास कोई खाना नहीं था सिवाय गिरियों के और बैरीज़ के जो अक्सर जंगलों में उगती हैं। बहुत देर तक घूमने के बाद वह एक पहाड़ के पास आया जिसकी चोटी पर फ़र का एक पेड़ खड़ा था।

उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ चढ़ जाऊँ तो शायद मैं देख सकूँ कि कौन सा रास्ता किधर जाता है। वह तुरन्त ही पेड़ की तरफ चल दिया। जैसे ही वह फ़र के पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर पहुँचा और नीचे चारों तरफ देखा तो उसको दूर एक बहुत ही शानदार किला दिखायी दिया। धूप में वह चमक रहा था।

उसे देख कर वह बहुत खुश हुआ और उधर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसे एक किसान मिला जिससे उसने विनती की कि वह उससे अपने कपड़े बदलना चाहता है। किसान ने उसे अपने कपड़े दे दिये और वह उनको पहन कर किले चल दिया।

वहाँ जा कर उसने राजा से उससे काम माँगा तो उसने उसको एक गड़रिये[36] का काम दे दिया। अब वह राजा के जानवर चराने लगा। वह जंगल कभी जल्दी चला जाता कभी देर से जाता। समय के साथ वह अपने दुख भूल गया।

[36] Animal tenderer

समय के साथ साथ वह बड़ा होने लगा और इतना लम्बा और बहादुर हो गया कि उस जैसा वहॉ कोई नहीं था।

अब हमारी कहानी उस राजा की तरफ मुड़ती है जो इस शानदार किले में रह कर राज करता था। उसकी शादी हो गयी थी और उसके एक बेटी थी। वह दूसरी बहुत सारी लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

वह इतनी खुशमिजाज और दयालु थी कि हर आदमी यही सोचता कि जो कोई भी उसको अपने घर ले जायेगा वह दुनियॉ का एक बड़ा खुशकिस्मत आदमी होगा।

जब राजकुमारी पन्द्रह साल की हो गयी तो उसके लिये बहुत सारे उम्मीदवारों की एक भीड़ सी लग गयी। जैसा कि सोचा जा सकता है उस लड़की ने सबको शादी करने से मना कर दिया था। पर आने वालों की गिनती तो बढ़ती ही रही।

आखिर राजकुमारी ने कहा — "मुझसे केवल वही शादी करेगा जो पूरा जिरहबख्तर[37] पहन कर शीशे के पहाड़ पर चढ़ जायेगा।"

राजा ने सोचा कि यह तो अच्छा विचार है। उसने अपनी बेटी की इच्छा को बढ़ावा दिया और अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी पूरा जिरहबख्तर पहन कर शीशे के पहाड़ पर चढ़ेगा मेरी बेटी उसी से शादी करेगी।

[37] Translated for the word "Armor" – normally made of iron, from head to toe, to wear in war to save oneself from injury.

जब राजा का नियत किया हुआ दिन आया तो राजकुमारी को शीशे के पहाड़ पर ले जाया गया। वहॉ उसको उसकी सबसे ऊॅची चोटी पर बिठा दिया गया। उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में एक सोने का सेब था।

वह इतनी ज़्यादा सुन्दर दिखायी दे रही थी कि वहॉ पर कोई ऐसा नहीं था जो उसके लिये अपनी ज़िन्दगी को दॉव पर न लगाना चाहता हो।

पहाड़ी के नीचे उससे शादी करने वाले उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तर पहिने अपने अपने घोड़ों पर सजे खड़े हुए थे। उनके जिरहबख्तर धूप में सोने जैसे चमक रहे थे। इनके अलावा और बहुत सारे लोग इस मुकाबले को देखने के लिये वहॉ आ कर खड़े हो गये थे।

बिगुल बजा कर उनको पहाड़ पर चढ़ने का सिगनल दिया गया और उन सबने अपनी पूरी ताकत के साथ उस पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। पर पहाड़ ऊॅचा था और बर्फ की तरह फिसलना था। साथ में उसकी चढ़ाई बहुत खड़ी थी।

कोई भी उम्मीदवार उस पहाड़ पर थोड़ी दूर से ज़्यादा नहीं चढ़ पाता था कि नीचे गिर जाता था। कइयों की तो इस चढ़ाई में हाथ पैरों की हड्डियॉ भी टूट गयीं।

घोड़े भी हिनहिनाने लगे लोग चिल्लाने लगे इस सबने इतना शोर मचाया कि उसे दूर तक सुना जा सकता था।

जब यह सब चल रहा था तब राजा का बेटा अपने बैल चरा रहा था। जब उसने यह शोर सुना तो वह एक पत्थर पर बैठ गया। अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और विचारों में खो गया। उसको लग रहा था कि वह दूसरों के साथ इस मुकाबले में हिस्सा नहीं ले पायेगा।

कि अचानक उसने किसी के पैरों की आहट सुनी। आहट पर उसने अपना सिर उठा कर ऊपर देखा तो वह जंगली आदमी वहॉ खड़ा था जिसको एक बार उसने अपने पिता के घर से आजाद किया था और जिसकी वजह से वह आज यहॉ इस हाल में था।

वह बोला — "उस दिन के लिये तुम्हारा धन्यवाद। और तुम यहॉ अकेले दुखी से क्यों बैठे हो?"

राजकुमार बोला — "मेरे पास कोई और चारा नहीं है सिवाय इसके कि मैं दुखी और नाखुश बैठा रहूॅ। तुम्हारी वजह से मैं अपने देश से बाहर भागा भागा फिर रहा हूॅ। और अब मेरे पास न तो कोई जिरहबख्तर है और ना ही कोई घोड़ा है जो मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ सकूॅ और राजकुमारी को जीत सकूॅ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह बस इतनी सी बात। अगर तुम्हें बस यही चाहिये तो मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में आज मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।"

कह कर उसने राजकुमार को हाथ पकड़ कर उठाया और उसको धरती के नीचे अपनी गुफा में ले गया तो लो देखो वहॉ तो

एक बहुत सुन्दर जिरहबख्तर था जो सबसे मजबूत लोहे का बना हुआ था।

उसके पास ही एक बहुत सुन्दर शानदार घोड़ा खड़ा था जिस पर बढ़िया किस्म की जीन कसी हुई थी। उसके खुरों में स्टील के बढ़िया जूते लगे थे और वह कभी कभी अपना मुँह चलाता था जिससे उसके मुँह से सफेद झाग नीचे गिरता था।

जंगली आदमी बोला — "लो तुम यह जिरहबख्तर जल्दी से पहन लो और इस घोड़े पर सवार हो कर अपनी किस्मत आजमाओ। तुम्हारे बैलों को खाना मैं खिला दूँगा।"

राजकुमार ने उसके दूसरी बार कहने का इन्तजार नहीं किया। तुरन्त ही उसने जिरहबख्तर और हैल्मैट पहना तलवार अपने एक तरफ लटका ली और घोड़े पर बैठ कर पहाड़ की तरफ हवा की तरह उड़ गया।

राजकुमारी के उम्मीदवार अब इस मुकाबले को छोड़ने ही वाले थे क्योंकि अभी तक कोई भी शीशे के पहाड़ पर नहीं चढ़ पाया था। हालॉकि सबने अपनी अपनी तरह से अपनी सबसे अच्छी कोशिश की थी पर फिर भी।

जब वहॉ वे लोग यही सब सोचते हुए खड़े हुए थे कि शायद उनकी किस्मत किसी दूसरे समय पर काम आये कि अचानक उनको एक नौजवान घोड़े पर सवार जंगल की तरफ से सीधा पहाड़ की तरफ ही आता दिखायी दिया।

वह सिर से पैर तक लोहा पहने था। उसके सिर पर हैल्मैट था। बॉह पर ढाल थी और वह अपने घोड़े पर इतनी शान से बैठा हुआ था कि उसको देख कर ही दिल खुश होता था। सबकी निगाहें उसकी तरफ घूम गयीं।

लोगों ने आपस में पूछा कि वह कौन था क्योंकि उसको पहले किसी ने नहीं देखा था। फिर भी उनके पास बात करने के लिये और सवाल करने के लिये वक्त बहुत कम था। जैसे ही उसने जंगल पार किया उसने अपने घोड़े को एक चाबुक मारा और सीधा शीशे के पहाड़ पर चढ़ गया।

वह एक साथ ही उस पर नहीं चढ़ गया बल्कि जब वह बीच चढ़ाई पर पहुॅचा तो वह वहॉ से नीचे उतर आया इससे उसके घोड़े के खुरों से चिनगरियॉ निकलने लगीं। नीचे उतर कर वह फिर जंगल की तरफ चला गया और वहॉ जा कर ऐसे गायब हो गया जैसे चिड़िया फुर्र हो जाती है।

यह देख कर लोगों को कितनी खुशी हुई होगी यह आसानी से सोचा जा सकता है। वहॉ कोई भी ऐसा नहीं था जो उस नाइट[38] की तारीफ न कर रहा हो। सब यही कह रहे थे कि उन्होंने इतना बहादुर नाइट पहले कभी कहीं नहीं देखा।

समय गुजरता गया। राजकुमारी के उम्मीदवारों ने सोचा कि वे फिर से उस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करें। सो राजा की बेटी

[38] Knight – a higher rank officer in British government. See his picture above.

एक बार फिर से अपने शानदार कीमती कपड़ों में पहाड़ की चोटी पर आ कर बैठी।

उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में सोने का सेब था और पहाड़ी के नीचे सब उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तरों में सुन्दर घोड़ों पर सवार जमा थे।

जब सब तैयार हो गये तब दौड़ शुरू करने के लिये बिगुल बजाया गया और सब सवार एक के बाद एक उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पर सब पहले की ही तरह से हुआ। पहाड़ी ऊँची थी बरफ जैसी फिसलनी थी और बहुत ढालू थी। कोई भी आदमी अपने घोड़े को उस पर थोड़ी दूर से ज़्यादा ऊपर तक नहीं चढ़ा पाया कि लुढ़क गया।

इस बीच पहले की तरह से फिर से वहाँ शोर मचने लगा – घोड़ों के हिनहिनाने का लोगों के चिल्लाने का उनके जिरहबख्तरों के आपस में टकराने का। और यह शोर इतना ज़्यादा था कि पहले की तरह से यह फिर से जंगल तक पहुँच गया।

और जब यह सब यहाँ हो रहा था तो नौजवान राजकुमार अपने बैल चरा रहा था जो उसका काम था। पर जब उसने शोर सुना तो वह फिर एक पत्थर पर बैठ गया अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और रोने लगा।

उस समय वह राजा की बेटी के बारे में सोच रहा था। उसको लगा कि वह कितना चाहता था कि वह भी उस मुकाबले में हिस्सा

ले। तभी उसको किसी के पैरों की आहट सुनायी दी। आहट सुन कर उसने ऊपर जो देखा तो उसने देखा कि वही जंगली आदमी वहॉ खड़ा है।

वह आदमी बोला — "गुड डे। तुम यहॉ इतने अकेले उदास क्यों बैठे हो?"

इस पर राजकुमार ने जवाब दिया — "मेरे पास दुखी और नाखुश होने के सिवा और कोई चारा ही नहीं है। क्योंकि तुम्हारी वजह से मैं अपने राज्य से निकाल दिया गया हूॅ और अब मेरे पास न तो कोई घोड़ा है और ना ही कोई जिरहबख्तर है जिससे मैं राजकुमारी के लिये मुकाबले में हिस्सा ले सकूॅ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह अगर तुम यही चाहते हो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूॅ। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में अब मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।"

कह कर उसने राजकुमार का हाथ पकड़ कर उठाया और उसको धरती के नीचे बनी अपनी गुफा में ले गया। वहॉ असली चॉदी का बना एक जिरहबख्तर टॅगा हुआ था। वह इतना चमकदार था कि उसकी चमक दूर दूर तक जा रही थी।

उसके पास ही एक बर्फ जैसा सफेद घोड़ा खड़ा था जिसके ऊपर जीन कसी हुई थी। वह अपने चॉदी के खुरों से जमीन खुरच रहा था और मुॅह से सफेद झाग गिरा रहा था।

जंगली आदमी बोला — "लो जल्दी से अपना यह जिरहबख्तर पहन लो इस घोड़े पर चढ़ जाओ और जा कर अपनी किस्मत आजमाओ। इस बीच तुम्हारे बैल मैं चरा दूँगा।"

राजकुमार ने उसके दूसरी बार कहने का इन्तजार नहीं किया। उसने तुरन्त ही अपना जिरहबख्तर पहना अपनी कमर से तलवार लटकायी घोड़े पर सवार हुआ उसकी गर्दन में लगाम डाली उसे एड़ लगायी और शीशे के पहाड़ की तरफ हवा में चिड़िया की तरह उड़ गया।

राजकुमारी के लिये जो उम्मीदवार वहाँ इकट्ठे हुए थे वे सब नाउम्मीद हो कर जाने वाले ही थे और यह सोच ही रहे थे कि शायद अगली बार उनकी किस्मत चमक जाये कि तभी उन्होंने जंगल की तरफ से एक नौजवान घुड़सवार आता देखा।

वह सिर से पैर तक चाँदी से ढका हुआ था। उसके सिर पर हैल्मैट था बाँह पर ढाल थी और वह घोड़े पर एक नाइट की शान से बैठा था। उनको लगा कि शायद उन्होंने उससे ज़्यादा बहादुर नाइट पहले कभी कोई नहीं देखा।

तुरन्त ही सबकी आँखें उसकी तरफ घूम गयीं। लोगों ने देखा कि यह तो वही नाइट था जो पिछली बार आया था। मगर राजकुमार ने उनको आश्चर्य करने के लिये बहुत समय तक नहीं छोड़ा क्योंकि जैसे ही वह मैदान में आया वह तुरन्त ही पहाड़ पर चढ़ गया।

हालॉकि वह बिल्कुल ऊपर तक तो नहीं पहुँच सका पर जैसे ही वह चोटी के पास तक पहुँचा उसने राजकुमारी को बड़ी इज़्ज़त से सिर झुकाया और नीचे उतर आया। नीचे उतरने में उसके घोड़े के खुरों से चिनगारियॉ निकल रही थीं। उसके बाद वह जंगल की तरफ जा कर तूफान की तरह वहीं गायब हो गया। इस बार लोग पहले से भी ज़्यादा खुश थे।

कोई भी ऐसा नहीं था जो उसके इस हिम्मत के काम से उसकी तारीफ न कर रहा हो। सब इस बात पर एक राय थे कि ऐसा शानदार घोड़ा और ऐसा सुन्दर नौजवान उन्होंने पहले कभी कहीं नहीं देखा।

फिर कुछ दिन बीत गये। राजकुमारी के उम्मीदवारों ने सोचा कि वे फिर से उस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करें। सो राजा की बेटी एक बार फिर से अपने शानदार कीमती कपड़ों में पहाड़ की चोटी पर आ कर बैठी। उसके सिर पर सोने का ताज था और हाथ में सोने का सेब था। पहाड़ी के नीचे सब उम्मीदवार अपने चमकदार जिरहबख्तरों में सुन्दर घोड़ों पर सवार जमा थे।

जब सब तैयार हो गये तब दौड़ शुरू करने के लिये बिगुल बजाया गया और सब सवार एक के बाद एक उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पर सब पहले की ही तरह से हुआ। पहाड़ी ऊॅची थी बरफ जैसी फिसलनी थी और बहुत ढालू थी। कोई भी आदमी अपने घोड़े

को उस पर थोड़ी दूर से ज़्यादा ऊपर तक नहीं चढ़ा पाया कि लुढ़क गया।

इस बीच पहले की तरह से फिर से वहॉ शोर सुनायी देने लगा – घोड़ों के हिनहिनाने का लोगों के चिल्लाने का उनके जिरहबख्तरों के आपस में टकराने का। और यह शोर इतना ज़्यादा था कि पहले की तरह से यह फिर से जंगल तक पहुँच गया।

और जब यह सब यहॉ हो रहा था तो नौजवान राजकुमार अपने बैल चरा रहा था जो उसका काम था। पर जब उसने शोर सुना तो वह फिर एक पत्थर पर बैठ गया अपना गाल अपने हाथ पर रख लिया और रोने लगा।

उस समय वह राजा की बेटी के बारे में सोच रहा था। उसको लगा कि वह कितना चाहता था कि वह उस मुकाबले में हिस्सा ले। तभी उसको किसी के पैरों की आहट सुनायी दी। आहट सुन कर उसने ऊपर जो देखा तो उसने देखा कि वही जंगली आदमी वहॉ खड़ा है।

वह आदमी बोला — "गुड डे। तुम यहॉ इतने अकेले उदास क्यों बैठे हो?"

इस पर राजकुमार ने जवाब दिया — "मेरे पास दुखी और नाखुश होने के सिवा और कोई चारा ही नहीं है। क्योंकि तुम्हारी वजह से मैं अपने राज्य से निकाल दिया गया हूँ और अब मेरे पास

न तो कोई घोड़ा है और ना ही कोई जिरहबख्तर है जिससे मैं राजकुमारी के लिये मुकाबले में हिस्सा ले सकूँ।"

जंगली आदमी बोला — "ओह अगर तुम यही चाहते हो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुमने एक बार मेरी सहायता की थी उसके बदले में अब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

कह कर वह उसको हाथ पकड़ कर जमीन के अन्दर बनी अपने गुफा में ले गया। वहाँ उसके पास एक बहुत सुन्दर खालिस सोने का बन हुआ जिरहबख्तर था जो इतना चमक रहा था कि उसकी चमक की रोशनी बहुत दूर दूर तक जा रही थी।

उसके बराबर में ही एक शानदार घोड़ा खड़ा था जिस पर जीन कसी हुई थी। वह अपने सोने के खुरों से जमीन खुरच रहा था और मुँह चला रहा था और झाग उगल रहा था।

जंगली आदमी बोला — "लो तुम तुरन्त ही इस जिरहबख्तर को पहन लो घोड़े पर सवार हो जाओ और जा कर अपनी किस्मत आजमाओ। इस बीच तुम्हारे बैल मैं चरा देता हूँ।"

अब सच कहो तो राजकुमार इतना भी सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त ही जिरहबख्तर पहना अपना हैल्मैट लगाया सोने के बक्सुए[39] लगाये कमर में तलवार लटकायी और चिड़िया की तरह से उड़ कर पहाड़ की तरफ चल दिया।

[39] Translated for the word "Buckles"

राजकुमारी के लिये जो उम्मीदवार वहॉ इकट्ठे हुए थे वे सब नाउम्मीद हो कर जाने वाले ही थे क्योंकि अभी तक किसी ने भी इनाम नहीं जीता था। और यह सोच ही रहे थे कि अगर इस बार न सही शायद अगली बार उनकी किस्मत चमक जाये कि तभी उन्होंने जंगल की तरफ से एक नौजवान घुड़सवार आता देखा।

सबका ध्यान उधर चला गया। वह सिर से पैर तक सोने से ढका हुआ था। उसके सिर पर हैल्मैट था बॉह पर ढाल थी और वह एक बहुत ही शानदार घोड़े पर एक नाइट की शान से बैठा था। उनको लगा कि शायद उससे ज़्यादा बहादुर नाइट उन्होंने पहले कभी कोई नहीं देखा था।

तुरन्त ही सबकी ऑखें उसकी तरफ घूम गयीं। लोगों ने देखा कि यह तो वही नाइट था जो पिछली बार आया था। इस बार वह सारा का सारा सोने से ढका हुआ था – ऊपर से ले कर नीचे तक।

उसका सोने का हैल्मैट था सोने का जिरहबख्तर था उसकी बॉह पर सोने की ढाल थी और उसकी कमर से सोने की तलवार लटक रही थी। वह इतनी शान से घोड़े पर बैठा था जैसा कि दुनियॉ भर में कोई और नहीं बैठ सकता था।

मगर राजकुमार ने उनको आश्चर्य करने के लिये बहुत समय तक नहीं छोड़ा क्योंकि जैसे ही वह मैदान में आया वह तुरन्त ही बिजली की सी तेज़ी के साथ पहाड़ पर चढ़ गया और सीधा पहाड़ की चोटी पर पहुॅच गया।

उसने राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से सिर झुकाया और उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया। राजकुमारी से उसने सोने का सेब लिया और अपने घोड़े पर बैठ कर नीचे उतर आया।

जब वह पहाड़ी से नीचे उतर रहा था तो उसके घोड़े के सोने के खुरों से आग की चिनगारियॉ निकल रही थीं। इस तरह की चमकीली धारी छोड़ता हुआ वह वहॉ से जंगल की तरफ चला गया। वहॉ जा कर वह एक तारे की तरह गायब हो गया।

अब तो पहाड़ के पास क्या हल्ला गुल्ला मचा। लोगों ने क्या खुशी से तालियॉ बजायीं। बिगुल बजने लगे। घोड़े हिनहिनाने लगे। ये आवाजें बहुत दूर तक सुनायी पड़ रही थीं। राजा ने सब जगह मुनादी पिटवा दी कि एक अनजान सुनहरे नाइट ने इनाम जीत लिया है।

अब तो बस यही बचा था कि उस सुनहरे अनजान नाइट के बारे में कुछ बातें जानी जायें क्योंकि उसको तो कोई जानता ही नहीं था। सारे लोगों को यही आशा थी कि वह अब किले में आयेगा पर वह तो आया ही नहीं।

यह देख कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। राजकुमारी पीली पड़ गयी और बीमार हो गयी। राजा भी उदास हो गया। लोग कुछ कुछ गलत बोलने लगे। कुछ समय बाद उनकी वे बातें भी खत्म हो गयीं।

एक दिन राजा ने अपने किले में एक बहुत बड़ी मीटिंग की। इस मीटिंग में सबको आना था चाहे कोई छोटा हो या बड़ा ताकि राजकुमारी उनमें से अपने आप ही किसी को चुन सके।

सारे लोग बहुत खुश थे क्योंकि उनको राजकुमारी के सामने आने का मौका मिल रहा था। इसके अलावा यह एक शाही हुक्म था सो अनगिनत लोग वहॉ इकट्ठे हुए थे।

जब वहॉ सब इकट्ठे हो गये तो बड़ी शानो शौकत के साथ राजकुमारी अपने महल से बाहर आयी। उसके साथ उसकी दासियॉ भी थीं। वह सारे लोगों के बीच से हो कर गयी पर वह कितना भी अपने चारों तरफ ढूँढती उसको वह कहीं नहीं मिला जिसको वह ढूँढ रही थी।

जब वह आखिरी लाइन में पहुँची तब उसने एक आदमी को देखा जो भीड़ से छिप कर बैठा हुआ था। वह एक टोपी पहने बैठा था जो थोड़ी सी आगे को निकली हुई थी और एक भूरे रंग का शाल[40] पहना हुआ था जैसी गड़रिये लोग पहनते हैं। उससे उसका चेहरा कुछ छिपा हुआ था।

उसको देखते ही राजकुमारी उसकी तरफ दौड़ पड़ी। उसने उसकी टोपी ऊपर उठायी और उसके गले से लिपट गयी चिल्ला कर बोली — "वह यहॉ है। वह यहॉ है।"

[40] Translated for the word "Mantle". See its picture above.

यह देख कर सारे लोग हॅस पड़े क्योंकि उन्होंने देखा कि वह तो राजा का गड़रिया है। इसको देख कर तो राजा भी चिल्ला पड़ा — "हे भगवान मुझे हिम्मत देना क्योंकि मेरा दामाद अब मेरा हिस्सा बनने जा रहा है।"

पर इस बात से उस आदमी को ज़रा सी भी शर्म नहीं आयी। बल्कि वह बोला — "ओह उसके लिये आपको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। जैसे आप राजा हैं वैसे ही मैं भी एक राजा का बेटा हूॅ।"

कह कर उसने अपना शाल उतार दिया।

अब उस पर कोई नहीं हॅस रहा था क्योंकि अब वहॉ भूरे गड़रिये की बजाय एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था जो अपने हाथ में राजकुमारी का दिया हुआ सोने का सेब लिये ऊपर से ले कर नीचे तक सोने से ढका हुआ था।

लोगों ने देखा कि वह तो वही नौजवान था जो शीशे के पहाड़ पर चढ़ा था।

बस उसके बाद तो शादी की दावत की तैयारी शुरू हो गयीं जैसी कि पहले कभी नहीं देखी गयी थीं। राजकुमार की शादी राजकुमारी से हो गयी और उसको राजा का आधा राज्य भी मिल गया।

शादी के बाद वे अपने राज्य में खुशी खुशी रहे। अगर वे मर नहीं गये होंगे तो वे अभी भी वहॉ रह रहे होंगे। पर उसके बाद उस

जंगली आदमी के बारे में कुछ नहीं सुना गया। बस यही इस कहानी का अन्त है।

11 रानी सारस[41]

एक समय की बात है कि एक बहुत ही गरीब लड़का था। एक बार वह राजा के पास गया और उससे उसके यहॉ नौकरी मॉगी कि वह उसके चरवाहे का काम कर लेगा। राजा ने उसको अपना चरवाहा रख लिया। अब लोग उसको भेड़ पीटर[42] कहने लगे।

जब वह अपनी भेड़ चराने ले जाता था तो मन बहलाने के लिये वह अपने तीर कमान[43] से खेलता रहता। एक दिन उसने एक ओक के पेड़ के ऊपर एक मादा सारस बैठी देखी तो उसने उसको मारना चाहा।

यह देख कर मादा सारस वहॉ से कूद गयी और एक नीची डाली पर आ कर बैठ गयी। वह पीटर से बोली — "अगर तुम मुझे न मारने का वायदा करो तो जब भी कभी तुम मुश्किल में होगे तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। बस तुमको यह कहना है "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊँगा।"

इतना कह कर चिड़िया उड़ गयी।

---

[41] Queen Crane – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_17.html

[42] Translated for the words "Sheep Peter".

[43] Translated for the word "Crossbow" – a kind of bow and arrow.

कुछ समय बाद देश में लड़ाई छिड़ गयी और राजा को लड़ाई लड़ने के लिये जाना पड़ा। उस समय भेड़ पीटर राजा के पास आया और उससे पूछा कि क्या वह भी लड़ाई के मैदान में जा सकता था।

उन्होंने उसको एक बूढ़ा सा घोड़ा दे दिया और वह उस पर सवार हो कर बड़ी सड़क के किनारे किनारे चल दिया। बीच रास्ते में उसका घोड़ा मर गया। उसने अपने मुँह से कुछ आवाजें निकालीं पर वह तो हिल कर ही नहीं दिया।

उसके साथ साथ जो लोग चल रहे थे वे उसका मजाक बनाने लगे। उस लड़के ने दुखी होने का बहाना बनाया। जब सारे लोग वहॉ से चले गये तो वह लड़का उस ओक के पेड़ के पास गया जिसमें रानी सारस रहती थी।

यहॉ रानी सारस ने उसको एक काला घोड़ा दिया एक चमकीला जिरहबख्तर[44] दिया और चॉदी की एक तलवार दी। इस सबके साथ वह लड़ाई के मैदान की तरफ चल दिया और वहॉ जितनी जल्दी वह चाहता था पहुँच गया।

वहॉ जा कर उसने कहा "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊँगा।" इसके साथ ही उसने बहुत सारे दुश्मन मार दिये और वहॉ से लौट पड़ा।

[44] Translated for the word "Armor" – normally made of iron to be worn on the body to protect it from injuries in the war.

राजा को लगा कि शायद कोई देवदूत उसकी सहायता के लिये आ गया होगा। वह उसके दुश्मन से लड़ कर उसे जिता गया पर वह नौजवान तो तुरन्त ही ओक के पेड़ के पास लौट आया।

उसने तुरन्त ही अपना जिरहबख्तर उतारा और दलदल की तरफ चला गया और फिर से घोड़े के सामने अपने मुँह से आवाज निकालने लगा।

जब लोग उधर से वापस जा रहे थे तो वे उसके ऊपर हँस कर बोले — "आज तुम हम लोगों के साथ नहीं थे। तुमने वह दृश्य नहीं देखा जब हमारे बीच एक देवदूत आया और हमारे सारे दुश्मनों को मार कर चला गया।"

यह सुन कर नौजवान ने बहाना किया कि वह उस दृश्य को न देख पाने के लिये बहुत ही दुखी था।

अगले दिन राजा को फिर से लड़ाई के मैदान में जाना पड़ा तो भेड़ पीटर फिर से उसके पास आया और फिर से उसके साथ लड़ाई पर जाने की विनती की। उसको फिर से एक बूढ़ा घोड़ा दे दिया गया।

वह उस घोड़े पर सवार हो कर उसको सड़क के पास वाली दलदल की तरफ ले गया। वहाँ जा कर वह उस पर सवार हो कर अपने मुँह से आवाज निकाल कर चलाने लगा पर वह चल कर ही न दे।

और लोग जो उसके पास से हो कर गुजर रहे थे उसकी हालत पर हॅसने लगे। उसने भी दुखी होने का बहाना किया। जब सब लोग उधर से चले गये तो वह फिर से उसी ओक के पेड़ के पास गया जिसमें वह मादा सारस रहती थी।

इस बार उसको एक सफेद घोड़ा मिला चॉदी का चमचमाता हुआ जिरहबख्तर मिला और सोने की एक तलवार मिली। इस तरह वह लड़ाई के लिये तैयार हो कर लड़ाई के मैदान में चला।

जब वह लड़ाई के मैदान में पहुॅचा तो वहॉ जा कर वह बोला "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस... और मैं सफल हो जाऊॅगा।" यह सब तो उसने कहा पर वह यह कहना भूल गया "मेरे पास रहो।" सो उसकी टॉग में चोट लग गयी।

पर राजा ने तुरन्त ही अपना रूमाल निकाला और उसकी चोट पर बॉध दिया। तब उस नौजवान ने फिर से कहा "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊॅगा।" और उसने सारे दुश्मनों को मार दिया।

राजा को फिर यही लगा कि वह स्वर्ग से आया कोई देवदूत था जो उसके दुश्मन को रोकना चाहता था पर वह तो वहॉ भाग कर अपने उसी ओक के पेड़ के नीचे आ गया।

वहॉ आ कर फिर से उसने अपना जिरहबख्तर उतारा और दलदल की तरफ चल दिया जहॉ वह अपना बूढ़ा घोड़ा छोड़ गया था।

वहॉ पहुॅच कर वह फिर से अपने घोड़े को चलाने में लग गया। उस समय जो बाकी सिपाही उधर से गुजर रहे थे वे उसके ऊपर हॅसने लगे और कहने लगे — "तुम आज हमारे साथ नहीं थे वरना तुम देखते कि किस तरह से स्वर्ग से एक देवदूत हमारे बीच आया और कैसे उसने हमारे दुश्मनों को मार डाला।"

नौजवान ने फिर से दुखी होने का बहाना किया कि उसको बहुत अफसोस है कि वह ऐसा दृश्य नहीं देख सका।

तीसरे दिन राजा को फिर से लड़ाई के मैदान में जाना पड़ा तो भेड़ पीटर ने फिर से उसके साथ जाने की प्रार्थना की तो उसको फिर से एक बूढ़ा घोड़ा दे दिया गया।

वह उस घोड़े पर सवार हो कर उसको सड़क के पास वाली दलदल की तरफ ले गया। वहॉ जा कर वह उस पर सवार हो कर अपने मुॅह से आवाज निकाल कर चलाने लगा पर वह चल कर ही न दे।

और लोग जो उसके पास से हो कर गुजर रहे थे उसकी हालत पर हॅसने लगे। उसने भी दुखी होने का बहाना किया कि उसका घोड़ा नहीं चल पा रहा।

जब सब लोग उधर से चले गये तो वह उसी ओक के पेड़ के पास गया जिसमें वह मादा सारस रहती थी। इस बार उसको एक लाल घोड़ा मिला सोने का चमचमाता हुआ जिरहबख्तर मिला और

सोने की एक तलवार मिली। इस तरह वह लड़ाई के लिये तैयार हो कर लड़ाई के मैदान में चला।

फिर से वही सब हुआ। उसने कहा "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊँगा।"

कह कर उसने सारे दुश्मनों को मार दिया। राजा ने फिर वही सोचा कि शायद स्वर्ग से कोई देवदूत आ कर उसकी सहायता कर गया है। उसने उसको रोकना भी चाहा पर वह तो तुरन्त ही वहाँ से अपने ओक के पेड़ के पास दौड़ गया।

वहाँ जा कर उसने अपना जिरहबख्तर उतारा और फिर दलदल में उसी जगह चला गया जहाँ उसके तीनों घोड़े थे। राजा का बाँधा हुआ रूमाल उसने छिपा लिया था।

जब लोग उधर से जाना शुरू हुए तब वह अपने घोड़ों के पास बैठा हुआ उनको मुँह से आवाज निकाल कर चलाने की कोशिश कर रहा था।

राजा की तीन बेटियाँ थीं। उन तीनों को तीन मीर स्त्रियाँ उठा कर ले जाने वाली थीं। सो राजा ने यह मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई भी उसकी बेटियों को उनसे बचायेगा उसकी शादी उनमें से एक राजकुमारी से कर दी जायेगी।

जिस दिन उसकी बड़ी बेटी को उठाया जाने वाला था उस दिन भेड़ पीटर अपने ओक के पेड़ के पास गया और उससे एक

जिरहबख्तर एक तलवार और एक घोड़ा लिया और किले की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने बड़ी राजकुमारी को अपने आगे अपने घोड़े पर बिठाया और समुद्र के किनारे सोने के लिये लेट गया। उसके पास एक कुत्ता भी था। जब वह सो गया तो राजकुमारी ने अपने बालों में से एक रिबन निकाल कर उसके बालों में लगा दिया।

अचानक मीर स्त्री वहॉ प्रगट हुई तो राजकुमारी ने नौजवान को जगाया और उससे अपने घोड़े पर चढ़ जाने के लिये कहा। वहॉ बहुत सारे लोग खड़े हुए थे पर जब मीर स्त्री वहॉ प्रगट हुई तो वे सब डर गये और वहॉ पास में लगे ऊॅचे ऊॅचे पेड़ों पर चढ़ गये।

पर हमारे नौजवान भेड़ पीटर ने कहा "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊॅगा।" कह कर उसने मीर स्त्री को मार दिया। उसके बाद वह तुरन्त ही ओक के पेड़ के पास भाग गया जिरहबख्तर वापस किया और फिर से अपनी भेड़ें चराने लगा।

पर देखने वालों में एक कुलीन आदमी भी था जो राजकुमारी को धमकियॉ देने लगा और उसे मजबूर किया कि वह राजा से यह कहे कि उस कुलीन आदमी ने उसे मीर स्त्री से बचाया है। भेड़ पीटर ने कुछ नहीं कहा।

अगले दिन मीर स्त्री को राजा की दूसरी बेटी को उठा कर ले जाना था। भेड़ पीटर फिर से रानी सारस के पास गया जिसने

उसको फिर से एक जिरहबख्तर एक तलवार और एक घोड़ा दिया। उनको पहन कर उसने दूसरी राजकुमारी को लिया और समुद्र के किनारे आ गया। तब तक मीर स्त्री वहॉ नहीं आयी थी सो वह वहीं सोने के लिये लेट गया।

उसने राजकुमारी से कहा — "जब मीर स्त्री आये तो मुझे जगा देना। और अगर तुम मुझे न जगा सको तो मेरे घोड़े को बोल देना वह मुझे जगा देगा।" यह कह कर वह सो गया।

जब मीर स्त्री आयी तो राजकुमारी ने भेड़ पीटर को जगाने की बहुत कोशिश की पर वह तो उठ ही नहीं पाया सो उसने उसके घोड़े से कहा कि वह उसे जगा दे। घोड़े ने उसे जगा दिया।

बड़े बड़े लौर्ड[45] जो वहॉ आस पास में खड़े हुए थे उस स्त्री को देखते ही डर के मारे पेड़ों पर चढ़ गये। भेड़ पीटर ने राजकुमारी को अपने घोड़े पर चढ़ाया और बोला "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे पास रहो और मैं सफल हो जाऊॅगा।" यह कह कर उसने उस मीर स्त्री को मार दिया।

उसके बाद वह जल्दी से अपने ओक के पेड़ के पास चला गया अपना जिरहबख्तर वापस किया और अपनी भेड़ें निकाल कर उन्हें चराने के लिये घास के मैदान में ले गया।

[45] Lord and Count are the titles in European administration.

पर देखने वालों में एक काउन्ट था जिसने राजकुमारी को धमकी दी कि वह राजा से जा कर यह कहे कि उस काउन्ट ने उसको मीर स्त्री से बचाया है।

अगर उसने उससे इस बात का वायदा नहीं किया तो वह अपनी तलवार उसके शरीर में घोंप देगा। बेचारी राजकुमारी को डर के मारे यह बात अपने पिता से कहनी पड़ी पर भेड़ पीटर कुछ नहीं बोला।

तीसरे दिन फिर से वही हुआ। भेड़ पीटर को रानी सारस से एक जिरहबख्तर मिला एक तलवार मिली और एक घोड़ा मिला। उसने घोड़े पर सबसे छोटी राजकुमारी को बिठाया और समुद्र के किनारे ले आया। वहॉ आ कर वह सो गया।

उसने राजकुमारी से कहा कि जब मीर स्त्री आये तो वह उसे जगा दे। अगर उसके जगाने से वह न जागे तो वह उसके घोड़े को उठाने के लिये बोल दे और अगर वह घोड़े के उठाने से भी न उठे तो वह उसके कुत्ते को उठाने के लिये बोल दे।

यह कह कर वह सो गया। जब मीर स्त्री आयी तो राजकुमारी ने उसे जगाया पर वह नहीं उठा। फिर उसने उसके घोड़े से उसे उठाने के लिये कहा पर वह उससे भी नहीं जागा। फिर उसने उसके कुत्ते से उसे जगाने के लिये कहा।

आखिर वह जाग गया। उसने राजकुमारी को अपने घोड़े पर बिठाया और बोला "भगवान मेरी सहायता करो। रानी सारस मेरे

पास रहो और मैं सफल हो जाऊँगा।" कह कर उसने उस मीर स्त्री को भी मार दिया।

वहाँ से वह रानी सारस के वापस गया और अपना जिरहबख्तर लौटाया और अपनी भेड़ें ले कर घास के मैदान में उन्हें चराने ले गया।

जल्दी ही राजकुमारियों को बचाने वालों को उन राजकुमारियों से शादी करने के लिये किले में आना था। पर पहले राजा ने अपनी बेटियों से पूछना ठीक समझा कि वे किससे शादी करना चाहती थीं।

उसकी सबसे बड़ी बेटी ने कहा "दरबार के कुलीन आदमी से।"

उसकी दूसरी बेटी ने कहा "काउन्ट से।"

पर तीसरी ने कहा "भेड़ पीटर से।"

यह सुन कर राजा अपनी तीसरी बेटी से बहुत नाराज हुआ क्योंकि एक पल के लिये तो वह यह विश्वास ही नहीं कर सका कि उसकी बेटी को मीर स्त्री से भेड़ पीटर ने छुड़ाया है। पर राजकुमारी ने उससे कहा कि अगर वह शादी करेगी तो उसी से किसी और से नहीं।

तब राजा ने कुलीन आदमी और काउन्ट को एक एक सोने का सेब दिया पर भेड़ पीटर को कुछ नहीं दिया।

अब उन तीनों को तीन दिन की निशाने बाजी का एक मुकाबला जीतना था। इससे राजा यह देखना चाहता था कि उन

तीनों में से किसका निशाना सबसे अच्छा था। राजा को यह पूरा विश्वास था कि इस मुकाबले में लोग भेड़ पीटर पर जरूर ही हॅसेंगे क्योंकि वह अपने साथियों से बहुत पीछे रह जायेगा।

पर भेड़ पीटर तो बहुत अच्छा निकला। उसने उन सारे निशानों पर बहुत अच्छे से निशाना लगाया जिन पर भी उसने निशाना साधा। पहले दिन ही उसने बहुत सारे निशाने लगा लिये जबकि दूसरों ने बहुत ही कम निशाने लगाये।

उसने जितने भी शिकार मारे थे उसके दोनों साथियों ने वे सब शिकार उससे एक सेब दे कर खरीद लिये। वे सब उन्होंने राजा के सामने पेश किये। ऐसा ही दूसरे दिन भी हुआ। दूसरे दिन भी उन्होंने उससे उसके मारे हुए शिकार एक और सोने का सेब दे कर खरीद लिये।

पर जब पहले और दूसरे दिन भेड़ पीटर शाम को घर आया तो अपने घर में उसने केवल एक कौआ ही लटका हुआ पाया। वह जब उसने राजा को ला कर दिया तो राजा ने उसका कौआ जमीन पर फेंक दिया और कहा — "ऐसे कौए तो मेरे पास थैला भर कर हैं।"

तीसरे दिन भी उसने जितने शिकारों पर निशाना साधा उतने ही शिकार मारे पर दूसरों ने एक भी शिकार नहीं मारा। तो भेड़ पीटर ने उनसे वायदा किया कि वह उनको वे सब शिकार दे देगा जो

उसने मारे हैं अगर वे उसको अपनी गर्दनों पर वह लिखने देंगे जो वह चाहेगा। वे इस बात पर राजी हो गये।

सो उसने उन दोनों की गर्दनों पर लिखा "गधा और चोर"। उसके बाद वे तीनों घर चले गये। इस तरह पीटर के पास उस दिन भी एक कौए के सिवा कुछ और नहीं था दिखाने के लिये।

तीनों उस रात एक ही कमरे में सोये। जब वे सुबह उठ गये तो राजा उनसे मिलने आया तो उसने उन सबको "गुड मौर्निंग" की और पूछा कि वे लोग कैसे थे। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भेड़ पीटर उनके साथ था।

तब भेड़ पीटर ने कहा — "मैं लड़ाई में गया और मैंने सारे दुश्मनों को मारा।"

राजा बोला — "ऐसा क्या? नहीं नहीं। तुमने यह नहीं किया। वह तो स्वर्ग का एक देवदूत था क्योंकि उस समय तुम तो दलदल में बैठे हुए थे।"

इस पर भेड़ पीटर ने राजा का अपनी टॉग पर बॅधा हुआ रूमाल निकाल कर उसे दिखाया तब कहीं जा कर राजा ने उसको पहचाना।

इसके बाद उसने राजा से यह भी कहा कि उसी ने तीनों राजकुमारियों को मीर स्त्री से छुड़ाया है। राजा को इस बात पर भी विश्वास नहीं हुआ बल्कि वह हॅस पड़ा। तब सबसे छोटी राजकुमारी आयी और उसने राजा को सारी बातें खोल कर बतायीं।

उसके बाद भेड़ पीटर ने दोनों बड़ी राजकुमारियों ने जो उसके बालों में अपने अपने रिबन बॉध दिये थे वे दिखाये। तब राजा को विश्वास करना पड़ा कि यह भी सच था।

उसके बाद भेड़ पीटर बोला कि सारे शिकार मैंने ही किये थे पर राजा फिर से उसका विश्वास नहीं कर रहा था। वह बोला — "पर फिर तुम सिवाय एक कौए के कुछ और क्यों नहीं लाये।"

तब भेड़ पीटर ने उसको सोने के सेब पेश किये और बोला — "यह सेब मुझे अपने शिकारों के बदले में पहले दिन मिला था और यह दूसरा सेब दूसरे दिन के लिये।"

"और तीसरे दिन दिन के लिये तुम्हें क्या मिला।"

तब उस चरवाहे ने राजा को वह दिखाया जो उसने उन दोनों आदमियों की गर्दन पर लिख दिया था – "गधा और चोर"।

जब राजा ने वह देखा तब उसको विश्वास आया। उसने अपनी सबसे छोटी बेटी की शादी भेड़ पीटर से कर दी और उसको आधा राज्य दे दिया। राजा के मरने के बाद उसको सारा राज्य मिल गया जबकि दूसरे दोनों उम्मीदवारों को अपनी बदमाशी के लिये बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं।

12 तीन कुत्ते[46]

एक बार की बात है कि एक राजा दुनियॉ में बाहर घूमने गया तो वहॉ से एक बहुत सुन्दर राजकुमारी ले कर लौटा। उसने उससे शादी कर ली। शादी के कुछ समय बाद ही भगवान ने उनको एक प्यारी सी बच्ची दी।

राजकुमारी के जन्म की सारे शहर में ही नहीं बल्कि सारे देश में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं क्योंकि राजा की जनता राजा का सब तरह से अच्छा ही चाहती थी क्योंकि वह खुद बहुत अच्छा था। वह सब पर दया करता था और सबसे न्यायपूर्ण व्यवहार करता था।

जब बच्ची अपने पालने में ही थी कि एक अजीब सी दिखायी देने वाली स्त्री उसके कमरे में घुसी। उसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं था कि वह कौन है और कहॉ से आयी है।

उस बुढ़िया ने उस बच्ची के ऊपर एक कविता पढ़ी और कहा कि उसको खुले आसमान में नहीं जाना चाहिये जब तक कि वह पूरे पन्द्रह साल की न हो जाये। अगर वह गयी तो एक पहाड़ी ट्रौल[47] उसको पकड़ कर ले जायेगा।

[46] The Three Dogs – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_20.html

[47] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

राजा ने जब यह सुना तो यह बात उसके दिल में बैठ गयी। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी के चारों तरफ पहरेदार लगा दिये ताकि वे सब इस बात का पूरा ध्यान रखें कि वह पन्द्रह साल की होने तक खुले आसमान के नीचे न जाये।

कुछ समय बीतने के बाद राजा और रानी के एक और बेटी हुई। सारे राज्य में फिर से ढेर सारी खुशियॉ मनायी गयीं। पर वह अक्लमन्द बुढ़िया एक बार फिर से वहॉ प्रगट हुई और राजा को सावधान किया कि इस बच्ची को भी वह खुले आसमान के नीचे न ले जाये जब तक कि वह पूरे पन्द्रह साल की न हो जाये।

कुछ समय बाद भगवान ने उनको एक तीसरी बेटी दी। इस बार भी वह बुढ़िया वहॉ आयी और इसके लिये भी वही कहा जो उसने उसकी पहली दोनों बेटियों के लिये कहा था।

इस बार यह सुन कर राजा को बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अपने बच्चों को दुनियॉ की किसी भी चीज़ से बहुत ज़्यादा प्यार करता था। उसलिये उसका यह सख्त हुक्म था कि उसकी बच्चियों को महल की छत के नीचे ही रखा जाये और कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता था।

समय बीतता गया और राजा की बेटियॉ बड़ी होती गयीं। बड़ी हो कर सब बहुत सुन्दर हो गयीं।

अब एक ऐसा समय आया जब राज्य में लड़ाई छिड़ गयी और राजा को उनको छोड़ कर लड़ाई पर जाना पड़ा।

एक दिन जब वह लड़ाई पर बाहर था तो तीनों राजकुमारियॉ खिड़की में बैठी बाहर झॉक रही थीं। बाहर सुन्दर धूप खिली हुई थी जिसमें बागीचे के फूल खूब चमक रहे थे। उन सबकी बहुत इच्छा हुई कि वे बाहर जा कर उन फूलों से खेलें।

सो उन्होंने अपने पहरेदारों से विनती की कि वे बाहर बागीचे में जा कर थोड़ी देर के लिये खेलना चाहती हैं। पर उनके पहरेदारों ने उनको इस बात की इजाज़त नहीं दी क्योंकि वे राजा से डरते थे।

इस पर भी राजकुमारियों ने उनसे बड़े मीठे शब्दों में जिद की कि वे उनको बस थोड़ी देर के लिये जाने दें। फिर वे उनकी विनती को ठुकरा नहीं सके और उनको बाहर जाने दिया।

राजकुमारियॉ अभी बहुत दूर नहीं गयी थीं और जैसे ही वे खुले आसमान के नीचे आयीं कि अचानक एक बादल नीचे आया और उनको वहॉ से उठा ले गया। हालॉकि उनको चारों तरफ ढूँढा गया पर फिर भी उनको वापस लाने की सारी कोशिशें बेकार गयीं। सारे राज्य में दुख और उदासी छा गयी।

जब राजा घर आया तो यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसका यह दुख तो बस सोचा ही जा सकता है। पर जो हो गया था वह तो हो गया था उसको तो वापस नहीं किया जा सकता था। आखीर में उन्होंने उसको पाने की अपनी आशा छोड़ दी।

राजा को पता ही नहीं था कि वह अपने आपको तसल्ली देने के लिये क्या करे सो उसने राज्य भर में यह मुनादी पिटवा दी कि

जो कोई भी उसकी तीनों बेटियों को पहाड़ के ट्रौल से छुड़ा कर ले आयेगा तो उन तीनों में से एक की शादी उससे कर दी जायेगी। साथ में उसके उसको आधा राज्य भी दे दिया जायेगा।

यह खबर विदेशों में भी पहुँची। बहुत सारे नौजवान अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर राजकुमारियों की खोज में निकले। राजा के अपने दरबार में भी दो राजकुमार थे जो यह देखने के लिये राजकुमारियों को खोजने के लिये निकले कि उनकी किस्मत इस मामले में काम करती है या नहीं।

उन्होंने अपने आपको सबसे अच्छे तरीके से तैयार किया। सब तरह के कीमती सबसे अच्छे हथियार लिये और शान बघारते हुए वहाँ से चले कि वे बिना राजकुमारियों को लिये हुए वापस नहीं लौटेंगे।

अब हम राजा के बेटों को राजकुमारियों को ढूँढते हुए यहाँ छोड़ते हैं और दूसरे लोगों की तरफ चलते हैं।

बहुत दूर एक जंगल में एक गरीब विधवा रहती थी जिसके एक बेटा था। वह रोज अपनी माँ के सूअर चराने ले जाया करता था।

जब वह मैदानों से हो कर गुजरता था तो उसके पास एक बाँसुरी थी जिसको वह अक्सर बजाता जाता था। वह वह बाँसुरी इतनी अच्छी बजाता था कि जो कोई उसको सुनता था वह उसी को अच्छी लगती थी। वह उसको सुन कर मग्न हो जाता था।

एक बार ऐसा हुआ कि वह नौजवान चरवाहा जंगल में बैठा अपनी बॉसुरी बजा रहा था और उसके तीन सूअर एक पाइन के पेड़ की जड़ें खोद रहे थे कि उसको एक बहुत ही बूढ़ा आता दिखायी दिया। उसकी दाढ़ी बहुत ही घनी थी और लम्बी तो इतनी थी कि वह उसकी कमर से भी नीचे लटक रही थी।

उस बूढ़े के पास एक बहुत बड़ा कुत्ता था। जब नौजवान ने वह बड़ा सा कुत्ता देखा तो सोचा कि इस बूढ़े के पास जंगल के अकेलेपन में यह इतना बड़ा कुत्ता है तो यह तो अपने आपको कितना खुशकिस्मत समझ रहा होगा।

जब बूढ़े ने नौजवान को देखा तो वह समझ गया कि वह क्या सोच रहा होगा। उसने उससे कहा — "मैं यहॉ इसी लिये तो आया हूॅ। मैं अपना कुत्ता तुम्हारे एक सूअर से बदलना चाहता हूॅ।"

वह नौजवान तो तैयार था ही। उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही अपना एक सूअर उसको दे दिया और उसका कुत्ता खुद ले लिया।

जब वह बूढ़ा वहॉ से जाने लगा तो उससे बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस कुत्ते से बहुत खुश और सन्तुष्ट रहोगे। क्योंकि यह कोई दूसरे कुत्तों जैसा मामूली कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "पकड़ लो"[48]। और जिस चीज़ को भी तुम इससे पकड़ लेने के

[48] Take Hold

लिये कहोगे यह उसी को पकड़ कर रखेगा चाहे वह कोई कितना भी भयंकर ट्रौल ही क्यों न हो।"

यह कह कर बूढ़ा चला गया। नौजवान ने सोचा कि उसकी खुशकिस्मती थी कि उसको ऐसा अच्छा कुत्ता मिल गया। शाम को उसने अपने कुत्ते को बुलाया और अपने सूअर ले कर घर चला आया।

जब उसकी बूढ़ी मॉ ने सुना कि वह एक सूअर दे कर एक कुत्ता ले आया है वह तो गुस्से से पागल सी हो गयी और उसने अपने बेटे को बहुत डॉट लगायी।

बेटे ने उससे बहुत कहा कि वह शान्त हो जाये पर उसके कहने का कोई असर ही नहीं हो रहा था। जितनी देर होती जा रही थी उसका गुस्सा उतना ही ज़्यादा बढ़ता जा रहा था।

बेटे की समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे सो उसने अपने कुत्ते को पुकारा और कहा "इसे पकड़ ले।"

कुत्ता तुरन्त ही उसकी मॉ की तरफ दौड़ पड़ा और जा कर उसे पकड़ लिया। उसको उसने इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह तो हिल भी नहीं सकी पर उसने उसको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया। उसने उनके पास जो कुछ था उसका ठीक इस्तेमाल करने का वायदा किया और फिर उन दोनों में सुलह हो गयी।

अगले दिन बेटा फिर से अपने दोनों सूअरों को चराने को लिये अपने कुत्ते को साथ ले कर मैदान में गया। कुछ देर बाद वह बैठ

गया और अपनी बॉसुरी बजाने लगा। कुछ देर बाद ही उसका कुत्ता उसकी बॉसुरी की धुन पर इतने अच्छे तरीके से नाचने लगा कि यह उसको एक जादू जैसा लगा।

और जब वह अपनी बॉसुरी बजा रहा था तो पहले दिन वाला सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा वहॉ फिर से आ पहुँचा। अबकी बार उसके पास एक और कुत्ता था। यह कुत्ता उस कुत्ते से भी बड़ा था जो उसने उससे पहले दिन लिया था।

जब उसने उसके इस कुत्ते को देखा तो उसने अपने मन में सोचा "अगर ऐसे अकेलेपन में किसी के पास ऐसा कुत्ता हो तो उसको तो डरने की कोई जरूरत ही नहीं है।"

जब बूढ़े ने यह देखा कि वह लड़का क्या सोच रहा था तो वह उससे बोला — "इसी लिये तो मैं यहॉ आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं अपने इस कुत्ते को तुम्हें दे कर तुम्हारा एक सूअर ले लूँ।"

नौजवान ने बिल्कुल भी वक्त नहीं गॅवाया और तुरन्त ही उसको अपना एक सूअर दे कर उससे उसका वह शानदार कुत्ता ले लिया।

कुत्ता दे कर जब वह जाने लगा तो वह उससे बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस कुत्ते से बहुत खुश और सन्तुष्ट रहोगे। क्योंकि यह कोई दूसरे कुत्तों जैसा मामूली कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "फाड़ दो"[49]। तुम इसे कोई भी चीज़ दे कर अगर इससे कहोगे "फाड़ दो" तो तुरन्त ही यह उसके टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

[49] Tear

यह कह कर उसने उससे सूअर लिया और अपने रास्ते चला गया। पर वह लड़का बहुत खुश था क्योंकि वह समझ रहा था कि उसने एक बहुत ही अच्छा सौदा कर लिया है हालॉकि उसको यह भी पता था कि उसकी बूढ़ी मॉ इस सौदे से बिल्कुल भी सन्तुष्ट नहीं होगी।

जब शाम हुई तो उसने बचे हुए सूअर को बुलाया दोनों कुत्ते साथ लिये और घर चला गया। मॉ तो उस कुत्ते को देख कर बहुत ही गुस्सा हो गयी। पर इस बार वह अपने बेटे को मारने की हिम्मत नहीं कर सकी क्योंकि वह बड़े बड़े कुत्तों से बहुत डरती थी।

पर फिर भी जैसा कि होता है काफी डॉटने के बाद लोग अपने आप ही चुप हो जाते हैं ऐसा ही उसके साथ भी हुआ। उसको काफी डॉटने के बाद वह अपने आप ही चुप हो गयी और फिर दोनों में सुलह हो गयी। क्योंकि मॉ को भी लगा कि जो नुकसान उसके बेटे ने कर दिया है उसको वापस तो नहीं लाया जा सकता।

अगले दिन बेटा फिर से अपने दो कुत्तों और एक सूअर को अपने साथ ले कर मैदान में गया। वह बहुत खुश था। कुछ देर बाद वह फिर बैठ गया और अपनी बॉसुरी बजाने लगा। इस बार उसके दोनों कुत्ते उसकी बॉसुरी की धुन पर इतने अच्छे से नाचने लगे कि लड़के को उनका नाच देखने में बहुत अच्छा लगने लगा।

जब यह लड़का शान्ति से बैठा हुआ था तो पहले दो दिनों वाला सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा वहॉ फिर आ पहुँचा।

इस बार भी उसके साथ के लिये उसके पास एक शानदार कुत्ता था जिसको देख कर वह लड़का यह सोचे बिना न रह सका कि "अगर किसी के पास जंगल के इस अकेलेपन में ऐसा कुत्ता हो तो उसके पास तो शिकायत करने के लिये कुछ है ही नहीं।"

बूढ़े ने जब यह देखा तो वह उस लड़के से बोला — "इसी लिये तो मैं यहॉ हूॅ। मैं अपना यह कुत्ता तुम्हें दे कर तुम्हारे आखिरी सूअर से बदलने आया हूॅ।"

लड़का भी तुरन्त ही अपने सूअर के बदले में उसका कुत्ता लेने के लिये तैयार हो गया।

बूढ़े ने वह कुत्ता उसको दिया और बोला — "तुमको इस सौदे से कोई शिकायत नहीं होगी क्योंकि यह कुत्ता दूसरे मामूली कुत्तों जैसा कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "ध्यान से सुनो"[50]। इसकी सुनने की ताकत इतनी ज़्यादा है कि यह कई मील दूर तक की आवाज भी आसानी से सुन सकता है और घास और पेड़ों को बढ़ते हुए भी सुन सकता है।"

इसके बाद वे दोनों एक दोस्त की तरह से अलग हो गये पर ये कुत्ते पा कर वह लड़का बहुत खुश था कि अब उसे दुनियॉ में किसी चीज़ से डरने की जरूरत नहीं है।

[50] Hark

जब शाम हुई तो उसने अपने तीनों कुत्ते लिये और घर की तरफ चल पड़ा। उसकी मॉ यह देख कर बहुत दुखी थी कि उसने उनके घर की सारी चीज़ें बेच दी थीं।

बेटे ने उसको बहुत समझाया कि वह हिम्मत रखे। वह इस बात को ठीक से देखेगा कि उन लोगों को किसी बात की कोई कमी न रहे। जब वह खुशी खुशी यह सब अपनी मॉ से कह रहा था तो उसको थोड़ी सी तसल्ली मिली। उसको लगा कि उसका बेटा अब बड़े आदमियों की तरह से अक्लमन्दी और जिम्मेदारी से बात कर रहा था।

अगली सुबह लड़का शिकार करने के लिये जंगल गया तो वह अपने तीनों कुत्तों को अपने साथ ले गया। और शाम को जब वह घर वापस लौटा तो उसके पास इतना शिकार था जितना वह ला सकता था। इस तरह से वह रोज शिकार कर के घर लाना शुरू कर दिया जब तक कि उसकी मॉ का भंडारघर खाने और दूसरी चीज़ों से अच्छी तरह भर नहीं गया।

तब उसने अपने तीनों कुत्तों को बुलाया मॉ को विदा कहा और उससे कहा कि वह अब बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहता है। मॉ ने उसे इजाज़त दे दी।

वह टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर पहाड़ के ऊपर की तरफ जाने लगा। धीरे धीरे वह एक जंगल के बीच में आ गया। वहॉ उसे

फिर वही सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा मिल गया जिससे उसने अपने ये तीनों कुत्ते खरीदे थे। उससे मिल कर नौजवान बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "गुड डे बाबा। पिछली बार के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

बूढ़ा बोला — "तुमको भी गुड डे। किधर जाते हो?"

नौजवान बोला — "मैं दुनियॉ में यह देखने के लिये बाहर निकला हूँ कि चलूँ देखूँ मेरी किस्मत में क्या लिखा है।"

बूढ़ा बोला — "तुम यहॉ से सीधे चले जाओ जब तक कि एक शाही महल न आ जाये। वहॉ जा कर तुम्हारी किस्मत पलटा खा जायेगी।" यह कह कर बूढ़ा चला गया।

बूढ़े को धन्यवाद दे कर और उसकी सलाह मान कर वह भी सीधे शाही महल की तरफ चल दिया। धीरे धीरे वह एक सराय तक आ पहुँचा।

वहॉ आ कर उसने अपनी बॉसुरी निकाल ली और उसे बजाने लगा। उसके कुत्ते उसकी बॉसुरी की धुन पर नाचने लगे। यह देख कर सराय वाले ने खुश हो कर उसे खाना और रहने की जगह दे दी। और भी बहुत कुछ दे दिया जो उसको चाहिये था। अगले दिन वह फिर चल दिया।

जब वह बहुत दूर तक चल लिया तब वह एक बड़े शहर में आ पहुँचा जहॉ की सड़कें लोगों से भरी हुई थीं। यह देख कर नौजवान को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह सब क्या था।

चलते चलते वह एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ राजा के हुक्म की एक मुनादी पिट रही थी कि जो कोई भी राजा की तीन बेटियों को पहाड़ वाले ताकतवर ट्रौल से छुड़ा कर लायेगा उसके साथ एक राजकुमारी की शादी होगी और आधा राज्य दिया जायेगा।

यह सुन कर उसकी समझ में आ गया कि उस बूढ़े ने उससे ऐसा क्यों कहा था। क्यों उसने उसे यहाँ भेजा था।

उसने अपने कुत्ते बुलाये और राजा के किले की तरफ चल पड़ा। पर जिस दिन से वहाँ से राजकुमारियाँ गायब हुई थीं सारा राजभवन दुख के समुद्र में डूबा पड़ा था। और राजा और रानी का तो रोते रोते बुरा हाल था।

वह लड़का महल के चौकीदार के पास गया और उससे इजाज़त माँगी कि क्या वह राजा के सामने अपनी बाँसुरी बजा सकता है और उन्हें अपने कुत्तों को दिखा सकता है।

दरबारी लोग तो इस बात के लिये राजी थे क्योंकि वे सोच रहे थे कि यह शायद राजा को कुछ खुश कर सके। सो उसको अन्दर जाने की इजाज़त मिल गयी और उसको अन्दर बुला लिया गया।

जब राजा ने उसको बाँसुरी बजाते सुना और उसके कुत्तों का सुन्दर नाच देखा तो उसका दिल खुश हो गया। किसी ने उसको पिछले सात सालों में जबसे उसकी बेटियाँ गायब हुई थीं इतना खुश कभी नहीं देखा था।

जब कुत्तों का नाच खत्म हो गया तो राजा ने उससे पूछा कि उसको राजा को खुश करने के लिये क्या इनाम चाहिये। नौजवान बोला — "आदरणीय राजा। मैं आपके पास कोई सोना या कपड़ा मॉगने नहीं आया। मैं आपसे केवल इस बात की इजाज़त मॉगने आया हूँ कि आप मुझे अपनी बेटियों को पहाड़ के ट्रौल से छुड़ा लाने की इजाज़त दें।"

जब राजा ने यह सुना तो राजा और उदास हो गया।

राजा बोला — "तुम मेरी बेटियों को उस ट्रौल से छुड़ा कर लाने की तो सोचना भी मत। यह कोई बच्चों का खेल नहीं है। तुमसे अच्छे अच्छे लोग अब तक कोशिशें कर चुके हैं पर अब तक सबकी कोशिशें बेकार गयी हैं। पर अगर तुम मेरी एक भी बेटी को वहॉ से छुड़ा कर ला सके तो मैं अपने वायदे से नहीं मुकरूँगा।"

सो उसने राजा से इजाज़त ली और पहाड़ के ट्रौल की तरफ चल दिया। उसने निश्चय किया कि वह जब तक वह जो कुछ ढूँढ रहा है वह उसे नहीं मिल जायेगा वह चैन से नहीं बैठेगा।

उसने कई बड़े बड़े राज्य बिना किसी खास घटना के पार किये। वह जहॉ भी गया उसके कुत्ते उसके साथ ही रहे। ध्यान से सुनो उसके बिल्कुल साथ साथ चल रहा था ताकि वह उसके आस पास की हर चीज़ को ध्यान से सुन सके जो उसको सुननी चाहिये।

पकड़ कर रखो अपने मालिक का थैला पकड़ कर ले जा रहा था और फाड़ दो जो इन सब कुत्तों में सबसे ज़्यादा ताकतवर था

अपने मालिक को तब उठा कर ले जाता था जब वह चलते चलते थक जाता था।

एक दिन ध्यान से सुनो लड़के के पास दौड़ता हुआ आया और बोला कि वह एक ऊँचे से पहाड़ पर गया था जहाँ उसने राजकुमारी को सुना। उस समय ट्रौल घर में नहीं था और वह वहीं आस पास में ही घूम रहा था। यह सुन कर लड़का बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही अपने तीनों कुत्तों के साथ उस पहाड़ की तरफ चल दिया।

जब वे लोग वहाँ पहुँचे तो ध्यान से सुनो बोला — "अब समय बरबाद करने का समय नहीं है। जो कुछ करना है जल्दी करो। ट्रौल अभी यहाँ से दस मील दूर है। और मैं पत्थरों पर उसके सोने के खुरों की आवाज सुन पा रहा हूँ।"

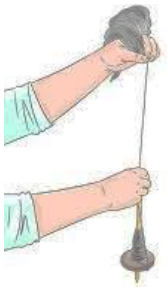

लड़के ने अपने कुत्तों को पहाड़ में एक दरवाजा तोड़ने के लिये कहा जो उन्होंने किया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जो उस पहाड़ के एक कमरे में बैठी थी और सोने का धागा एक सोने की तकली[51] पर लपेट रही थी।

लड़का उसकी तरफ बढ़ा और उसको बड़े मीठे शब्दों में नमस्ते की। राजा की बेटी को उस लड़के को वहाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोली — "तुम कौन हो जिसने यहाँ पहाड़ वाले ट्रौल के कमरे में आने की हिम्मत की। पिछले सात सालों से मैं यहाँ इस

[51] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

पहाड़ में बैठी हुई हूँ पर मैंने आज तक कोई आदमी यहाँ नहीं देखा।"

वह आगे बोली — "भगवान के लिये तुम ट्रौल के घर से जल्दी से जल्दी चले जाओ वरना तुम्हारी जान खतरे में है।"

पर हमारा नौजवान बिल्कुल निडर था। उसने कहा कि वह किसी से डरता नहीं और वह उस ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

जब वे लोग बातें कर रहे थे तभी ट्रौल अपने घोड़े पर सवार वहाँ आ पहुँचा। उसके घोड़े पर सोने का साज सजा था। जब उसने देखा कि उसका दरवाजा खुला पड़ा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ और इतने ज़ोर से चिल्लाया कि सारा पहाड़ काँप उठा — "किसने मेरे पहाड़ का दरवाजा तोड़ा?"

नौजवान ने बिना किसी डर के जवाब दिया — "मैंने तोड़ा। और अब मैं तुम्हें भी तोड़ दूँगा। ओ पकड़ने वाले पकड़ ले इसको। फाड़ने वाले और ध्यान से सुनने वाले इसके हजारों टुकड़े कर दो।"

जैसे ही उसने यह बोला वैसे ही उसके तीनों कुत्ते भागे और उसके हजारों टुकड़े कर के फेंक दिये। राजकुमारी तो यह देख कर बहुत खुश हुई — "भगवान की जय हो। आखिर मैं यहाँ से छुटकारा पा ही गयी।"

खुशी के मारे वह नौजवान के गले से लिपट गयी और उसको चूम लिया। पर नौजवान वहाँ एक मिनट के लिये भी रुकना नहीं

चाहता था। उसने ट्रौल के घोड़े पर जीन कसी उस पर जितना भी उसको सोना और कपड़ा लादना था लादा और राजकुमारी को ले कर तुरन्त ही राजा के पास दौड़ गया।

वो सब बहुत दूर तक चलते रहे। एक दिन ध्यान से सुनो जो हमेशा लड़के के घोड़े के आगे आगे चला करता था जल्दी से दौड़ता हुआ अपने मालिक के पास आया और बोला कि वह अभी अभी एक ऊँचे से पहाड़ के पास था जब उसने दूसरी राजकुमारी की आवाज सुनी। वह भी उसके अन्दर बैठी बैठी सोने का धागा लपेट रही थी और ट्रौल उस समय वहॉ नहीं था।

नौजवान के लिये तो यह बहुत ही अच्छी खबर थी। वह अपने कुत्तों को ले कर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया।

जब वे उस पहाड़ के पास पहुँचे तो ध्यान से सुनो ने उससे कहा — "अब समय गॅवाने का नहीं है। ट्रौल यहॉ से केवल आठ मील दूर है और मैं उसके घोड़े के सोने के खुरों की आवाज पत्थरों पर साफ सुन रहा हूँ।"

नौजवान ने अपने कुत्तों को कहा कि वह पहाड़ का दरवाजा तोड़ दें। बस कहने की देर थी कि उन्होंने पहाड़ का दरवाजा तोड़ दिया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई सोने का धागा एक सोने की तकली पर लपेट रही है।

राजा की यह बेटी भी लड़के को देख कर आश्चर्यचकित रह गयी बोली — "अरे तुम? तुम कौन हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ इस कमरे में आने की। पिछले सात साल से मैं यहाँ बैठी हुई हूँ पर मैंने अभी तक किसी आदमी को यहाँ आते नहीं देखा।"

उसने आगे कहा — "अगर तुम ट्रौल से अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहते हो तो भगवान के लिये यहाँ से तुरन्त चले जाओ।"

तब नौजवान ने उसे बताया कि वह वहाँ क्यों आया था और वह वहाँ बिना किसी परेशानी के ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

वे लोग अभी बातें कर ही रहे थे कि ट्रौल वहाँ आ पहुँचा और पहाड़ का दरवाजा टूटा हुआ देख कर बहुत गुस्सा हुआ। वह चिल्लाया — "किसने तोड़ा मेरे पहाड़ का दरवाजा?"

नौजवान बोला — "मैंने तोड़ा। और अब मैं तुम्हें भी तोड़ने जा रहा हूँ।" कह कर उसने अपने तीनों कुत्तों को बुलाया और उनसे उसके हजारों टुकड़े कर देने के लिये कहा। बस उसके कहने की देर थी कि तीनों कुत्तों ने मिल कर उसके हजारों टुकड़े कर दिये और उन्हें ऐसे बिखेर दिया जैसे पतझड़ में पत्तियाँ बिखर जाती हैं।

राजा की यह बेटी भी ट्रौल को इस तरह मरा देख कर बहुत खुश हुई। वह भी लड़के के गले लगते हुए और उसे चूमते हुए बोली — "ओह अब मैं आजाद हो गयी।"

लड़का उसको उसकी बहिन के पास ले गया। कोई बस सोच ही सकता है कि वे दोनों बहिनें आपस में एक दूसरे को देख कर कितनी खुश हुई होंगी।

लड़के ने जितना भी खजाना उस पहाड़ में पाया सब बटोरा उसे ट्रौल के घोड़े पर लादा और राजा की दो बेटियों के साथ राजा के घर की तरफ चल पड़ा।

वे लोग फिर बहुत दूर तक चलते रहे कि एक दिन ध्यान से सुनो फिर से दौड़ता हुआ उसके पास आया और बोला कि वह अभी अभी एक ऊॅचे से पहाड़ के पास था जब उसने तीसरी राजकुमारी की आवाज सुनी। वह भी उसके अन्दर बैठी बैठी सोने के धागे से जाल बुन रही थी और ट्रौल उस समय वहॉ नहीं था।

नौजवान के लिये यह तो बहुत अच्छी खबर थी। वह अपने कुत्तों को ले कर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया। जब वे उस पहाड़ के पास पहुॅचे तो ध्यान से सुनो ने उससे कहा — "अब समय गॅवाने का नहीं है। ट्रौल यहॉ से केवल पॉच मील दूर है और मैं उसके घोड़े के सोने के खुरों की आवाज पत्थरों पर साफ सुन रहा हूॅ।"

नौजवान ने अपने कुत्तों को कहा कि वह पहाड़ का दरवाजा तोड़ दें। बस कहने की देर थी कि उन्होंने पहाड़ का दरवाजा तोड़ दिया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें एक

बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई सोने के धागे से एक जाल सा बुन रही है। राजा की यह बेटी उसकी तीनों बेटियों में सबसे सुन्दर थी।

राजा की यह बेटी भी लड़के को देख कर आश्चर्यचकित रह गयी बोली — "अरे तुम? तुम कौन हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहॉ इस कमरे में आने की। पिछले सात साल से मैं यहॉ बैठी हुई हूॅ पर मैंने अभी तक किसी आदमी को यहॉ आते नहीं देखा।"

उसने आगे कहा — "अगर तुम ट्रौल से अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहते हो तो भगवान के लिये यहॉ से तुरन्त चले जाओ।"

तब नौजवान ने उसे बताया कि वह वहॉ क्यों आया था और वह वहॉ बिना किसी परेशानी के ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

वे लोग अभी बातें कर ही रहे थे कि ट्रौल अपने सोने के खुर वाले घोड़े पर सवार वहॉ आ पहुॅचा। जब उसने पहाड़ का दरवाजा टूटा हुआ देखा और बिन बुलाये मेहमान देखे तो वह बहुत डर गया।

उसके दोनों भाइयों के साथ क्या हुआ था यह उसको पता था सो उसने सोचा कि मामला अगर बिना लड़े ही चालाकी से सिलटा लिया जाये तो अच्छा है।

यह सोच कर वह लड़के से बहुत मीठा मीठा बोला। फिर उसने राजा की बेटी से मेहमान को मेहमाननवाजी दिखाने के लिये खाना बनाने के लिये कहा।

क्योंकि इस ट्रौल को बातें बहुत अच्छी करनी आती थीं हमारे नौजवान ने भी उसको बात करने का मौका दिया। इस बात करने में वह इतना घुल मिल गया कि वह अपनी रक्षा की बात बिल्कुल ही भूल गया।

जब खाना मेज पर लगा तो वह उस ट्रौल के साथ मेज पर बैठ गया। पर राजा की बेटी छिप छिप कर रोती रही। उसके कुत्ते भी बहुत बेचैन रहे हालॉकि किसी ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

जब ट्रौल और उसके मेहमान ने खाना खत्म कर लिया तो नौजवान ने अपने मेजबान से कहा — "मैंने अपना खाना खत्म कर लिया अब मुझे अपनी प्यास बुझाने के लिये कुछ पीने के लिये चाहिये।

ट्रौल बोला — "पहाड़ की चोटी पर एक स्रोत[52] है जिसमें से बहुत साफ शराब निकलती है। पर मेरे पास वहॉ से उसे लाने के लिये कोई नहीं है।"

नौजवान बोला — "अगर यही बात है तो मेरे कुत्तों में से एक कुत्ता वहॉ जा कर उसे ला सकता है।"

ट्रौल तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया क्योंकि वह तो दिल ही दिल में यही चाहता था कि उसके कुत्ते वहॉ से चले जायें। नौजवान ने अपने पकड़ कर रखो से पहाड़ की चोटी पर जाने और वहॉ से शराब लाने के लिये कहा।

[52] Translated for the word "Spring".

ट्रौल ने उसको शराब भरने के लिये एक बहुत बड़ा डिब्बा दे दिया और कुत्ता उसको ले कर चला गया पर कोई भी देख सकता था कि वह वहॉ से खुशी खुशी नहीं गया।

समय गुजरता गया पर कुत्ता लौट कर नहीं आया। कुछ देर बाद ट्रौल बोला — "क्या हुआ तुम्हारे कुत्ते को वह अभी तक लौट कर क्यों नहीं आया। शायद तुम अगर अपने दूसरे कुत्ते को उसके पीछे भेजो तो वह उसको वहॉ से ले आये क्योंकि एक तो बर्तन भारी है दूसरे रास्ता लम्बा है।"

नौजवान को इसमें कोई चाल नजर नहीं आयी तो उसने अपने दूसरे कुत्ते फाड़ दो से कहा कि वह जाये और देखे कि पकड़ कर रखो अभी तक क्यों नहीं आया।

कुत्ते ने अपनी पूँछ हिला कर वहॉ से जाने की अपनी अनिच्छा प्रगट की कि वह अपने मालिक को छोड़ कर वहॉ से जाना नहीं चाहता था पर नौजवान ने उसको अपने हाथ से उसे बाहर की तरफ धकेल दिया सो उसे जाना ही पड़ा।

अबकी बार ट्रौल को बहुत ज़ोर की हॅसी आ गयी और राजा की बेटी और ज़ोर से रो पड़ी। पर नौजवान ने उनके हॅसने और रोने पर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि वह बहुत खुश था और बहुत आराम से बैठा था। वह अपनी तलवार से खेल रहा था अैर उसे आने वाले खतरे का कोई अन्दाज़ा भी नहीं था।

फिर काफी समय बीत गया पर न तो कुत्ते ही आये और न शराब ही आयी। तब ट्रौल बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे कुत्ते तुम्हारा कहना नहीं मानते वरना तुम यहाँ प्यासे नहीं बैठे रहते। मुझे लगता है कि अब तुमको अपने तीसरे कुत्ते को उनके पीछे यह देखने के लिये भेजना पड़ेगा कि वे वापस क्यों नहीं आये। कहाँ रह गये वे।"

नौजवान राजी हो गया। उसने अपने तीसरे कुत्ते ध्यान से सुनो को जाने के लिये कहा। पर ध्यान से सुनो भी वहाँ से बिल्कुल भी जाना नहीं चाहता था। वह आवाज करता हुआ अपने मालिक के पैरों के पास खिसक गया।

इस पर नौजवान गुस्सा हो गया और उसको धक्का दे कर बाहर निकाल दिया। जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा तो उसके साथ भी वही हुआ जो उसके दूसरे दोनों साथियों के साथ हुआ था। यानी उसके ऊपर पहुँचते ही ट्रौल के जादू से उसके चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार खड़ी हो गयी और वह उसमें कैद हो गया।

अब नौजवान के तीनों कुत्ते वहाँ से जा चुके थे और उसके तीनों कुत्ते कैद हो चुके थे।

सो ट्रौल उठा। अचानक ही उसकी शक्ल बिल्कुल ही बदल गयी। उसने दीवार पर टँगी हुई अपनी एक लम्बी तलवार उठायी और बोला — "अब मैं वह करूँगा जो मेरे भाई नहीं कर पाये।

तुमको बस अब तुरन्त ही मरना है क्योंकि तुम अब मेरे काबू में हो।"

यह देख कर नौजवान तो डर गया। अब उसे बहुत अफसोस हो रहा था कि उसने अपने तीनों कुत्तों को वहॉ से क्यों जाने दिया।

फिर भी वह बोला — "मैं तुमसे अपनी जान की भीख नहीं मॉगता क्योंकि कभी तो समय आयेगा जब मुझे मरना पड़ेगा पर मैं तुमसे मरने से पहले मैं भगवान की प्रार्थना करने की और अपनी बॉसुरी पर एक साम[53] बजाने की इजाज़त जरूर चाहूॅगा। यह हमारे देश का नियम है।"

ट्रौल ने उसकी प्रार्थना स्वीकार तो कर ली पर उसने कहा कि वह यह सब जल्दी कर ले वह बहुत देर तक उसका इन्तजार नहीं करेगा।

सो नौजवान घुटनों के बल बैठ गया और उसने अपनी बॉसुरी बजानी शुरू की। धीरे धीरे उसकी आवाज इतनी तेज़ हो गयी कि वह सारे पहाड़ पर और घाटियों में गूॅजने लगी। बस उसी समय ट्रौल की बनायी हुई जादू की दीवार टूट गयी।

उसके कुत्ते जो उनमें बन्द थे आजाद हो गये। वे तुरन्त ही वहॉ से तूफान की तरह से भागे भागे चले आये और आते ही ट्रौल पर कूद पड़े। नौजवान भी उठ खड़ा हुआ और अपने एक कुत्ते से

[53] Psalm is a biblical song in praise of God.

बोला — "पकड़ कर रखो इस ट्रौल को पकड़ लो। फाड़ डालो और ध्यान से सुनो तुम लोग उसके हजारों टुकड़े कर दो।"

बस उसके कहने की देर थी कि उसके तीनों कुत्ते ट्रौल पर कूद पड़े और उन तीनों ने मिल कर उसके हजारों टुकड़े कर दिये। तब नौजवान ने उसके किले का सारा खजाना उठाया ट्रौल के घोड़ों को एक गाड़ी में जोता और तीनों राजकुमारियों को ले कर राजा के किले की तरफ चल दिया।

जैसा कि सोचा जा सकता है जब राजा की तीनों बेटियॉ फिर से मिलीं तो वह बहुत खुश हुई। सबने नौजवान को उसके उन्हें पहाड़ के ट्रौल से आजाद कराने के लिये धन्यवाद दिया।

पर नौजवान को राजा की सबसे छोटी बेटी से प्यार हो गया था। दोनों ने आपस में एक दूसरे के ज़िन्दगी भर साथ रहने की कसम खायी।

इस तरह राजा की बेटियॉ रास्ते भर आनन्द मनाती जा रही थीं। नौजवान भी उनकी ठीक से वैसी ही सेवा करता जा रहा था जैसी कि राजकुमारियों की करनी चाहिये थी।

जब वे सब लोग इस तरह से जा रहे थे तो राजकुमारियॉ नौजवान के बालों से खेल रही थीं। हर राजकुमारी ने अपनी अपनी सोने की अॅगूठी उसके बालों में बॉध दी ताकि वे उसे याद रहें।

एक दिन जब वे अभी भी यात्रा कर रहे थे कि उसी सड़क से जाते हुए उनको दो यात्री मिले। उन दोनों यात्रियों के कपड़े फटे

हुए थे और पैरों में छाले पड़ गये थे। उनका हुलिया बता रहा था कि वे कोई लम्बी यात्रा कर के आ रहे हैं।

नौजवान ने अपनी गाड़ी रोकी और उनसे पूछा कि वे कौन थे और कहॉ से आ रहे थे। उन्होंने जवाब दिया कि वे दोनों राजकुमार थे और उन तीनों लड़कियों की खोज में निकले थे जिनको पहाड़ का ट्रौल उठा कर ले गया था।[54] पर किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया सो अब उनको बजाय राजकुमार जैसे के यात्री की तरह से वापस जाना पड़ रहा है।

नौजवान ने जब उनकी कहानी सुनी तो वह उनके लिये बहुत दुखी हुआ। उसने उनसे पूछा कि क्या वे उसके साथ उसकी सुन्दर गाड़ी मैं बैठ कर चलना पसन्द करेंगे। राजकुमारों ने उसके इस प्रस्ताव के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

वे सब एक साथ चलते चलते उस राजा के किले में आ पहुॅचे जिस राजा की वे राजकुमारियॉ थीं।

जब राजकुमारों ने यह सुना कि नौजवान उन तीनों लड़कियों को ट्रौल के चंगुल से छुड़ा लाया है तो उससे उन दोनों राजकुमारों को बहुत जलन हुई कि किस तरीके से वे अपने काम में असफल रहे और वह नौजवान अपना काम कर लाया।

[54] They were the same two princes who set out in search of the princesses from the King's court.

दोनों ने आपस में सलाह की कि किस तरीके से उनको उस नौजवान का सबसे अच्छा इस्तेमाल करना चाहिये ताकि उनकी अपनी ताकत और शान बढ़ सके।

पर उन्होंने अपने इस नीच प्लान को जब तक के लिये छिपा कर रखा जब तक उनको कोई ठीक मौका नहीं मिल जाता।

अचानक वे दोनों अपने साथी के ऊपर कूद पड़े उसको गले से पकड़ कर उसको बॉध दिया और राजकुमारियों को धमकी दी कि अगर उनमें से कोई भी कुछ भी बोला तो वे उनको मार देंगे।

और क्योंकि राजकुमारियॉ अब राजकुमारों के कब्जे में थीं तो वे तो उनको मना कर ही नहीं सकती थीं। पर वे उस नौजवान के लिये बहुत दुखी थीं जिसने उनकी ज़िन्दगी बचाने के लिये अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा दी थी।

उनमें से सबसे छोटी राजकुमारी तो दिल ही दिल में बहुत ज़ोर से रो रही थी क्योंकि ऐसा लग रहा था जैसे अब उसकी हर खुशी खत्म होने जा रही हो।

इतनी बड़ी गलती करने के बाद राजकुमार शाही किले के अन्दर घुसे। अब यह तो केवल सोचा ही जा सकता है कि राजा अपनी तीनों बेटियों को देख कर कितना खुश हुआ होगा।

इस बीच नौजवान अधमरा सा जंगल में पड़ा रहा पर वह अभी पूरा नहीं मरा था। उसके वफादार कुत्ते उसको गर्म रखने के लिये उसके पास ही लेटे हुए थे और उसके घावों को चाट रहे थे। ऐसा

वे तब तक करते रहे जब तक उनका मालिक ढंग से होश में नहीं आ गया।

जब वह बिल्कुल ठीक हो गया तो वह अपने कुत्तों को साथ ले कर राजा के किले की तरफ चला। काफी तकलीफें उठाने के बाद वह शाही किले में आया जहॉ राजकुमारियॉ रहती थीं।

जब वह दरबार में घुसा तो उसने देखा कि लोग तो वहॉ बहुत खुश थे और राजा के कमरे से तो गाने और नाचने की आवाजें आ रही थीं। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा कि इस सबका क्या मतलब था।

राजा के नौकर बोले — "लगता है कि तुम कहीं बहुत दूर से आ रहे हो इसलिये तुम्हें पता नहीं है कि राजा की बेटियॉ उस पहाड़ वाले ट्रौल के चंगुल से निकल कर वापस आ गयी हैं जो उनको उठा कर ले गया था। आज राजा की सबसे बड़ी बेटी की शादी है।"

नौजवान ने फिर सबसे छोटी राजकुमारी के बारे में पूछा और पूछा कि उसकी शादी कब होगी तो नौकरों ने बताया कि वह शादी करना नहीं चाहती और दिन भर रोती रहती है। हालॉकि किसी को यह पता नहीं है कि वह क्यों रोती रहती है। यह सुन कर नौजवान बहुत खुश हुआ कि वह अभी भी उसको प्यार करती है।

नौजवान फिर राजा के दरबान के पास गया और उससे राजा को यह कहने के लिये कहा कि उनसे कहो कि मेहमान आया है जो

शादी की खुशी में अपने कुत्तों का तमाशा दिखा कर लोगों का दिल बहलाना चाहता है।

यह राजा की पसन्द की चीज़ थी सो उसने हुक्म दिया कि अजनबी को बहुत अच्छे से अन्दर लाया जाये और उसकी ठीक से खातिर की जाये।

जब वह नौजवान अन्दर आया और उसने अपने कुत्तों का नाच दिखाया तो शादी में आये वहॉ बैठे सारे लोगों ने दॉतों तले उॅगली दबा ली। सबने उसकी बहुत तारीफ की कि इतना सुन्दर आदमी उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।

पर जैसे ही तीनों राजकुमारियों ने उसे देखा तो तुरन्त ही उसे पहचान लिया कि यह तो वही नौजवान था जो उन सबको ट्रौल के चंगुल से छुड़ा कर लाया था। वे तुरन्त ही मेज पर से उठीं और उसके गले से लिपट गयीं।

उस समय उन दोनों राजकुमारों को लगा कि उनके लिये उस समय यही सबसे अच्छा रहेगा कि वे वहॉ से भाग जायें पर राजा की बेटियों ने राजा को बताया कि किस तरह से उस नौजवान ने उनको ट्रौल के चंगुल छुड़ाया और फिर रास्ते में क्या क्या हुआ। इस बात को साबित करने के लिये वे उसके बालों में अपनी अपनी अंगूठियॉ ढूॅढने लगीं।

जब राजा को उन दोनों राजकुमारों की चालबाजी का पता चला तो वह तो बहुत गुस्सा हो गया और उनको बड़ी बेरहमी से किले के

बाहर निकलवा दिया। लेकिन इस नौजवान को उसने वह इज़्ज़त दी जो उसको मिलनी चाहिये थी। उसने अपनी सबसे छोटी बेटी की शादी उससे कर दी।

राजा के मरने के बाद यह नौजवान उसके पूरे राज्य का राजा बन गया। क्या ही शानदार राजा बना वह। वह और उसकी सुन्दर रानी अभी तक वहॉ राज कर रहे हैं।

13 पिनटौर्प की लेडी[55]

ऐरिक्सबर्ग के बागीचों के बीच आजकल जहॉ किले जैसी बिल्डिंग खड़ी है बहुत पहले वहॉ पिनटौर्प नाम का एक शहर हुआ करता था जिससे एक लेडी औफ पिनटौर्प की कहानी जुड़ी हुई है।

वह कहानी कुछ ऐसे कही जाती है कि पिनटौर्प में एक भला आदमी रहता था जो बेचारा छोटी उम्र में ही मर गया था। उसकी सब सम्पत्ति की मालिक उसकी पत्नी थी। तो भी उसकी पत्नी अपने नौकरों के प्रति बजाय दयालु होने के उनसे हर तरीके से बहुत काम लेती थी और उनसे बहुत बुरा बर्ताव करती थी।

उसके किले के नीचे बहुत सारे तहखाने बने हुए थे। जिनमें बहुत सारे भोले भाले लोग बन्द थे। वह बच्चों और भिखारियों के पीछे कुत्ते छोड़ देती थी। अगर कोई समय पर काम पर नहीं आता था तो वह यकीनन शाम को अपनी पीठ पर कोड़े खा कर ही जाता था।

एक बार सुबह को जब लोग काम पर आ रहे थे वह स्त्री किले की सीढ़ियों पर खड़ी थी। उसने एक लकड़हारे को देर से आते देखा। उसके देर से आने पर वह गुस्से में भर गयी और उसने उसे तुरन्त ही गालियॉ देना और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

---

[55] The Lady of Pintorp – a folktale from Sweden, Europe.
Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_24.html#gsc.tab=0

उसने उसको अपने राज्य के सबसे बड़े ओक के पेड़ को काटने और उसे शाम तक अपने दरबार में लाने का हुक्म दिया। और अगर उसने उसके हुक्म का पालन नहीं किया तो वह उसको बिना किसी दया के उसकी झोंपड़ी से बाहर निकाल देगी और उसके पास जो कुछ भी है वह राज्य का हो जायेगा।

इस कठोर फैसले के ऊपर विचार करते हुए वह बेचारा जंगल की तरफ चल दिया। जंगल में उसे एक बूढ़ा मिला। लकड़हारे को उदास देख कर बूढ़े ने उससे पूछा — "क्या बात है भाई इतने उदास क्यों हो?"

अभागे आदमी ने जवाब दिया — "अगर मेरा मालिक भगवान की दया से मेरी सहायता नहीं करता तो मेरा तो सब कुछ खत्म हो गया।" कह कर उसने अपनी मालकिन का हुक्म उसे बता दिया।

अजनबी बोला — "तुम चिन्ता मत करो। तुम इस ओक के पेड़ को काट लो। फिर इसके कटे हुए तने पर बैठ जाओ तो ऐरिक जिलैन्स्टर्ना और स्वान्ते बनेर[56] इस पेड़ को दरबार तक ले जाने में तुम्हारी सहायता करेंगे।"

लकड़हारे ने वैसा ही किया। उसने उस पेड़ के तने को काटना शुरू किया तो लो वह तो तीसरी मार में ही बहुत शोर की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा। फिर वह उसके तने पर उसके पत्तों की तरफ मुँह कर के बैठ गया।

[56] Erik Gyllenstjerna and Svante Banér

तुरन्त ही पेड़ वहॉ से चलने लगा जैसे घोड़े उसे खींच कर ले जा रहे हों। जल्दी ही वह इतनी तेज़ी से चलने लगा कि रास्ते में जो लकड़ी के खम्भे लगे थे और बागीचों के डंडे आदि खड़े हुए थे वे सब लकड़ी की छीलन की तरह से इधर उधर उड़ने लगे।

जल्दी ही वह दरबार में पहुँच गया। जैसे ही पेड़ का पत्तियों वाल हिस्सा किले के दरवाजे से टकराया तो दोनों ले कर जाने वालों में से एक लड़खड़ा गया। उसी समय एक आवाज आयी — "क्या? क्या तुम गिर रहे हो स्वान्ते?"

पिनटौर्प की लेडी वहीं किले की सीढ़ियों पर खड़ी थी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसकी सहायता कौन कर रहा था। बजाय उसके लिये अफसोस करने के उसने लकड़हारे का बहुत अपमान किया और बहुत डॉटा और आखीर में उसे जेल में बन्द करने का हुक्म दे दिया।

उसी समय धरती कॉपी और किले की दीवारें हिल गयीं। एक काली कोच जिसे दो काले घोड़े खींच रहे थे किले के सामने रुकी। एक सुन्दर सा नौजवान उस कोच में से काले रंग का सूट पहने उतरा। उसने लेडी को सिर झुकाया और तैयार हो कर अपने पीछे आने के लिये कहा।

लेडी जान गयी कि वह कौन था सो वह कॉप गयी। उसने कॉपते हुए तीन साल की मोहलत मॉगी जिसे उस नौजवान ने मना कर दिया। फिर उसने तीन हफ्ते की और फिर तीन दिन की

मोहलत मॉगी पर नौजवान ने उसको उसका घर ठीक करने के लिये केवल तीन मिनट का ही समय दिया।

जब लेडी ने देखा कि उसके पास कोई और सहायता नहीं है तो उसने नौजवान से विनती की कि कम से कम उसे उसका पादरी उसकी दासी और उसके व्यक्तिगत नौकर को अपने साथ ले जाने की इजाज़त दी जाये।

उसकी यह विनती स्वीकार कर ली गयी और सब गाड़ी में बैठे। घोड़े तुरन्त ही भाग लिये। गाड़ी इतनी तेज़ जा रही थी कि जो किले में खड़े हुए थे उनको वह जाती हुई केवल एक काली धारी सी लगी।

जब वह लेडी और उसके साथी कुछ देर तक चल लिये तो वे एक बहुत ही शानदार किले के पास आ गये। काले कपड़े पहने वाला नौजवान उनको सीढ़ियों से ऊपर ले गया।

ऊपर पहुॅच कर लेडी ने अपने कीमती कपड़े उतार दिये और एक मेटे कपड़े का कोट और लकड़ी के जूते पहन लिये। तब नौजवान ने उसके बालों में तीन बार कंघी की उसके बाद वह उसे सहन नहीं कर सकी। फिर वह उसके साथ तीन बार नाचा जब तक वह थक कर चूर नहीं हो गयी।

पहले नाच के बाद लेडी को अपने व्यक्तिगत नौकर को अपनी अॅगूठी देने के लिये बाध्य किया गया तो उसकी अॅगूठी ने उसके नौकर की उॅगली आग की तरह जला दी।

दूसरे नाच के बाद उसे अपनी दासी को अपने किले की चाभियॉ देनी पड़ीं। दासी ने जब उन्हें अपने हाथ में पकड़ा तो उसे लगा जैसे उसने कोई गर्म लोहे की सलाख पकड़ ली हो।

जब वह तीसरी बार नाच ली तो एक छिपा हुआ दरवाजा खुल गया और वह लेडी उसमें लपट और धुँए में गुम हो गयी।

पादरी जो उस समय उसके सबसे पास खड़ा था उसने उत्सुकतापूर्वक उस दरवाजे में झॉका जिसमें उसकी मालकिन गायब हो गयी थी तो उसकी गहराइयों में से एक चिनगारी ऊपर उठी और उड़ कर उसकी ऑख में गिर गयी। जिससे उसकी एक ऑख हमेशा के लिये चली गयी।

जब सब कुछ खत्म हो गया तो काले कपड़े पहने वाले नौजवान ने लेडी के साथ आये हुए सभी लोगों को किले वापस ले जाने का हुक्म दिया। साथ में उनको साफ साफ मना किया कि वे अपने चारों तरफ बिल्कुल न देखें।

वे जल्दी से कोच में बैठ गये। सड़क चौड़ी थी एकसार थी सो घोड़े तेज़ी से भागे जा रहे थे। पर थोड़ी दूर चलने के बाद ही व्यक्तिगत दासी अपने आपको रोक न सकी और उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसी पल घोड़े कोच सड़क सभी कुछ गायब हो गया और उन्होंने अपने आपको एक जंगल में पाया। वहॉ से उन्हें बाहर निकलने और अपने घर पिनटौर्प पहुँचने में तीन साल लग गये।

14 मुर्गा, हाथ की चक्की और बर्र[57]

एक बार की बात है कि एक किसान था जो अपना सूअर बाजार ले जा कर बेचना चाहता था सो वह उसको ले कर बाजार चला। वह कुछ ही दूर गया तो उसको एक आदमी मिला जिसने उससे पूछा "यह तुम अपना सूअर ले कर कहाँ जा रहे हो?"

किसान बोला — "मैं इसे बेचने के लिये ले जा रहा हूँ पर मुझे पता नहीं कि मैं इससे कैसे छुटकारा पाऊँ।"

वह आदमी बोला — "तुम शैतान के पास चले जाओ। वही सबसे पहला होगा जो तुमको इससे छुटकारा दिलायेगा।"

यह सुन कर किसान उस बड़ी चौड़ी सड़क पर आगे चल दिया। चलते चलते वह शैतान के घर आ पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि एक आदमी बाहर एक लकड़ी के ढेर के पास खड़ा हुआ लकड़ियों का ढेर बना रहा है।

किसान उसके पास गया और उससे पूछा कि क्या वह उसको पूछ कर यह बतायेगा कि शैतान के घर में एक सूअर की जरूरत है या नहीं। आदमी बोला कि वह अभी उसको यह बात पूछ कर बताता है अगर वह उसकी गैरहाजिरी में उसका लकड़ी का ढेर लगा दे तो।"

---

[57] The Rooster, the Hand-mill and the Swarm of Hornets – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_26.html

किसान बोला "खुशी से।"

उसने उस आदमी से कुल्हाड़ी ली और लकड़ी के ढेर के पास खड़े हो कर लकड़ी काटनी शुरू कर दी। वह वहॉ यह काम करता रहा करता रहा शाम होने को आयी पर वह आदमी उसके पास यह बताने के लिये वापस लौट कर नहीं आया कि शैतान के घर में वे सूअर खरीदेंगे या नहीं।

काफी देर के बाद एक और आदमी उधर आ निकला तो किसान ने उससे कहा कि क्या वह उसकी जगह लकड़ी काट देगा क्योंकि उस कुल्हाड़ी को नीचे रखना नामुमकिन था। उसको केवल किसी दूसरे आदमी को दिया ही जा सकता था।

सो उस आदमी ने उससे कुल्हाड़ी ले ली और लकड़ी काटनी शुरू कर दी। किसान खुद शैतान के घर में देखने के लिये गया कि वह वहॉ अपना सूअर बेच सकता था या नहीं।

जैसे ही वह अन्दर पहुॅचा तो एक मेले में जितनी भीड़ होती है उतनी भीड़ वहॉ आ कर खड़ी हो गयी और सब उस सूअर को खरीदना चाहते थे। किसान ने कहा कि जो कोई भी उस सूअर के सबसे ज़्यादा दाम देगा मैं अपना सूअर उसी को दूॅगा।

हर एक आदमी एक दूसरे से ज़्यादा बोली लगाने लगा। अब तो उसकी बोली इतनी लग गयी कि वह सूअरों के एक झुंड को खरीदने के लिये भी बहुत थी। पर आखीर में एक भला आदमी वहॉ आया और उसने किसान के कान में कुछ फुसफुसाया और उसे

अपने साथ आने के लिये कहा कि उसको उस सूअर का उतना पैसा मिल जायेगा जितना वह चाहता था।

जब वे उस भले आदमी के घर पहुँचे और किसान ने उसको अपना सूअर दे दिया तो उसके बदले में उसको एक मुर्गा मिला जो उससे जितनी बार भी कहो हर बार चॉदी के सिक्के देता था।

किसान ने वह मुर्गा लिया और खुशी खुशी उसको ले कर घर चला गया। वह अपने सौदे से बहुत सन्तुष्ट था।

घर का रास्ता लम्बा था सो जाते समय उसको रात को एक सराय में रुकना पड़ा। उस सराय को एक बुढ़िया चलाती थी। किसान अपने मुर्गे से इतना ज़्यादा खुश था कि उसने उस बुढ़िया से अपने मुर्गे की बहुत तारीफ की। साथ में उसने उसको यह भी दिखाया कि वह मुर्गा चॉदी के सिक्के कैसे देता था।

रात को जब किसान गहरी नींद सो गया तो वह बुढ़िया उसके पास आयी और उस मुर्गे को तो उठा कर ले गयी और एक दूसरा वैसा ही मुर्गा उसकी जगह रख गयी।

जैसे ही किसान सुबह सवेरे उठा तो वह उस मुर्गे से कुछ सिक्के निकलवाना चाहता था "ओ मेरे मुर्गे जल्दी से मुझे चॉदी के सिक्के दे।" पर मुर्गे ने तो एक भी सिक्का नहीं दिया। केवल यही बोलता रहा "किकिरीकी किकिरीकी किकिरीकी।"

इससे किसान को बहुत गुस्सा आ गया। वह शैतान के घर वापस गया और वहॉ जा कर उस मुर्गे की शिकायत की कि वह कितना बेकार का मुर्गा था उसने उसे कुछ नहीं दिया।

उस भले आदमी ने उसको बड़े आदर के साथ अन्दर बुलाया और अबकी बार उसने उसको एक हाथ की चक्की दी और बताया कि जब भी तुम इससे कहोगे "चक्की पीसो" तो यह तुम्हारे लिये उतना ही खाना पीस देगी जितना कि तुमको जरूरत है और यह जब तक नहीं रुकेगी जब तक तुम यह नहीं कहोगे कि "चक्की पीसना बन्द करो।"

चक्की ले कर वह अपने घर चल दिया। रास्ते में वह उसी सराय में ठहरा जिसमें वह पहले ठहरा था। अपनी इस चक्की से भी वह इतना खुश था कि वह अपनी जबान बन्द नहीं रख सका। उसने बुढ़िया को सब बता दिया कि उसके पास कितनी बढ़िया चक्की थी और वह कैसे काम करती थी।

पर रात को जब किसान सो गया तो उस बुढ़िया ने उसकी वह बढ़िया वाली चक्की भी चुरा ली और उसकी जगह एक वैसी ही चक्की ला कर रख दी। सुबह को जब किसान उठा तो अपनी चक्की की जॉच करने के लिये बहुत बेचैन था।

पर यह क्या। उसके लाख कहने पर भी उस चक्की ने उसको कोई खाना नहीं दिया। वह उससे किसी भी तरह कोई भी खाना नहीं निकलवा सका। वह चिल्लाया "चक्की पीसो।" पर चक्की

शान्त खड़ी रही। फिर उसने उससे प्यार से कहा "मेरी प्यारी चक्की पीस।" पर फिर भी वह टस से मस नहीं हुई।

उसने फिर कहा "राई पीसो।" पर फिर भी उसने कुछ नहीं किया। फिर वह बोला "मटर पीसो।" पर कोई असर नहीं। वह तो ऐसे खड़ी रही जैसे कभी ज़िन्दगी में हिली ही न हो।

यह देख कर किसान फिर से शैतान के घर वापस गया। तुरन्त ही उसने उस भले आदमी को ढूँढा जिसने उसका सूअर खरीदा था और उससे कहा कि चक्की तो कुछ पीसती नहीं।

वह भला आदमी बोला "तुम उसकी चिन्ता मत करो।"

उसको उसने बर्र या ततैये[58] का एक छत्ता देते हुए कहा जो झुंड में उड़ती थी और उसी को काटती थीं जिनको उनसे काटने के लिये कहा जाता था। वे उसको तब तक काटती रहती थीं जब तक उनसे यह नहीं कहा जाता "रुक जाओ।"

बर्र के छत्ते को ले कर वह फिर उसी बुढ़िया की सराय में ठहरने के लिये आया। उस दिन भी उसने बुढ़िया को बताया कि उसके पास बहुत सारी बर्रें हैं जो उसका कहा मानती हैं।

यह सुन कर बुढ़िया के मुँह से निकला — "हे मेरे भगवान। यह तो देखने वाली चीज़ है।"

किसान बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। इसको तो तुम बिना किसी परेशानी के देख सकती हो।"

[58] Translated for the word "Hornet"

कह कर उसने तुरन्त ही आवाज लगायी — "निकलो निकलो बाहर निकलो और इस बुढ़िया को काट लो।" उसके यह कहते ही बर्रों का पूरा का पूरा झुंड अपने छत्ते में से निकल पड़ा और उस बुढ़िया पर टूट पड़ा।

बुढ़िया दर्द के मारे तड़प उठी। वह चिल्लायी "रोको इन्हें रोको।"

किसान बोला — "पहले तुम मुझसे वायदा करो कि तुमने जो मेरा मुर्गा और चक्की चुरायी है वे दोनों वापस दे दोगी।"

बुढ़िया चीखते हुए बोली — "हॉ हॉ मैं वायदा करती हूँ कि मैं तुम्हारा मुर्गा और चक्की दोनों वापस कर दूँगी। पर अभी तो इन बर्रों को रोको।"

किसान ने उसकी बात मान ली और अपनी बर्रों को वापस बुला लिया। उन्होंने भी तुरन्त ही बुढ़िया को छोड़ दिया और अपने घर में आ गयीं।

किसान भी अपना मुर्गा और चक्की ले कर अपने घर वापस चला गया और कुछ ही दिनों में बहुत अमीर हो गया। जब तक वह ज़िन्दा रहा खुशी खुशी रहा।

जब तक वह ज़िन्दा रहा तब तक वह हमेशा यही कहता रहा "शैतान के घर में हमेशा ही एक बड़ा मेला लगा रहता है। वहॉ तुम्हें बहुत अच्छे अच्छे लोग मिल जायेंगे। इससे भी ज़्यादा वहॉ तुम्हें

एक भला आदमी मिलेगा जिसके साथ अगर तुम सौदा करोगे तो फायदे में रहोगे।"

List of Stories of "Folktales of Sweden"

1. Ander's New Cap
2. The Boy and the Water Sprite
3. Elves and the Shoemaker
4. Finn the Giant and The Minster of Lund
5. The Girl and the Snake
6. Faithful and Unfaithful
7. Werewolf
8. First Son First Marriage
9. Mount of the Golden Queen
10. The Princess and the Glass Mountain
11. Queen Crane
12. The Three Dogs
13. The Lady of Pintorp
14. Rooster Handmill and the Swarm of Ho

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022